॥ ॐ पार्श्वनाथाय ह्रीँ ॥ ॥ जैनं जयति शासनम् ॥ ॥ ॐ पद्मावत्यै ह्रीँ ॥
॥ ॐ ह्रीँ श्री उवसग्गहरं पार्श्वनाथाय नमः ॥
॥ आत्म-कमल-लब्धिसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥
॥ जयंत-विक्रम-नवीनसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

आदर्श श्रावक जीवन

: लेखक :

पू. रत्नयशसूरि म.सा.

: संपादन एवं शुभाशिषदाता :

श्री लब्धि विक्रम गुरुकृपाप्राप्त गच्छाधिपति पूज्य

आचार्यदेव राजयशसूरीश्वरजी म.सा.

आदर्श श्रावक जीवन

संपादन एवं शुभाशिषदाता :
गीतार्थ गच्छाधिपति पू. आचार्यदेव राजयशसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक विद्वान :
पू. आचार्यदेव रत्नयशसूरीश्वरजी म.सा.

प्रकाशक :
श्री लब्धि-विक्रमसूरीश्वरजी संस्कृति केन्द्र
T/7/A, शांतिनगर, अहमदाबाद-380 093

लाभार्थी :
श्रमणोपासिका सुधाबेन अनिलचंद्र महेता
64, 4th Cross, Thanthai Periyar Nagar,
Pudducherry-605005 (M) 90254 55296

प्राप्ति स्थान :

- **मयंक अे. महेता**
  पोंडीचेरी
  (M) 90254 55296
- **जतिन के. शेठ**
  चेन्नई
  (M) 98401 22900
- **विकास अे. महेता**
  कोइम्बतुर (M) 98434 72763

प्रति : 500

E-Book Link :

मुद्रक : जय जिनेन्द्र ग्राफिक्स-नवरंगपुरा, अहमदाबाद-14
जय जिनेन्द्र 98250 24204, कुश 99256 17992

प्रस्तावना

विरति वह क्या है ?

शास्त्रों की एक बात सरल है फिर भी सुमधुर है । वह ''ज्ञानस्य फलं विरति'' ज्ञान का फल विरति है । कुछ लोगो का कहना है विरति याने अटकना।

अनादि काल से हमारी आत्मा में से लालसाओं का एक अस्खलित प्रवाह निरन्तर बहता रहता है, इस प्रवाह को रोकना उसका नाम विरति है । चिंतको का कहना है कि अभी तक आत्मा अनादि काल के संस्कारो से संसार के सुख में और मौज-शौख में मग्न रहती है । उसमें (जीव में) जो रति है वह इष्ट विषय का राग है और अनिष्ट विषय का द्वेष है अर्थात् मनपसंद की चाहना और अप्रिय की नाराजगी है । **'रति'** वह अनादि काल से जीवमात्र का दोष है। उसमें भयंकरता है लेकिन विशेषता नहीं है, विकासशीलता नहीं है, विशुद्धता नहीं है ।

विरति याने विशेष रति, प्रगतिशील रति, निर्मल रति । विषयों की सांसारिक पदार्थो की रति सामान्य रति है । अधोगतिकी और ले जाने वाली रति है... अशुद्ध रति है । जब यह रति में से ज्ञान के फल स्वरुप **वि+रति प्रगट** होती है तब आत्मा, आत्मा की समीप आती है । गुणों के प्रति रति प्रगट होती है । गुणीओं के प्रति रति प्रगट होती है । विश्व के सनातन सत्यों के प्रति रति प्रगट होती है । विनय, विवेक, विराग और वीतरागिता का सूचक यह **'वि'** वाली **'रति'** होती है ।

यह विरति वालि आत्मा अपने वडिलों के प्रति विनयवाली बनती है । और यह विनयगुण आत्मा को हेय, ज्ञेय, उपादेय के विवेक की और ले जाती है ।

यह विवेक गुण से आत्मा सिर्फ 'आत्मा' और 'आत्म-हित' के साधन तथा आत्म-हित को खोजने में व्यस्त हो जाता है । अंत में यह 'विरति' राग-द्वेष को तोडकर वीरतागिता में परिवर्तित हो जाती है । ऐसी विरति मिलाना और विरति का अभ्यास करना... विरति को निर्मल करना यह प्रत्येक आत्मा का अधिकार है । किन्तु यह एक समस्या है कि ऐसी 'विरति' मिले कैसे ?

शास्त्रकारों ने बताया है कि **'ज्ञानस्य फलं विरति'** सर्व प्रथम ज्ञान की आवश्यकता है, विरति का बीज ज्ञान है । विरति पेड़ है। ज्ञान और विरति का बीज और पेड़ का संबंध है । इसिलिए हमें बीज रुप ज्ञान की प्राप्ति करने की है ।

जो आत्मा मुमुक्षु बन गई है... साधुता के पंथ पर आरुढ हो गई है । उनके लिए तो ज्ञान का पंथ आसान है । किन्तु श्रमण के चरणो में रहे हुए श्रमणोपासक को, श्रावक को ज्ञान कैसे मिलाना यह एक प्रश्न है । विरति के बीज स्वरुप ज्ञान को कहाँ ढुंढना ?

वर्तमान देश-काल के हिसाब से व्यवहारिक शिक्षण की महत्ता सभी लोगो को अच्छी तरह से समझ में आ रही है । डिग्री यदि नहीं होगी तो लड़की नहीं मिलेंगी और धन भी नहीं मिलेगा ऐसा अनुभव आम जनता को हो रहा है ।

श्रावक-शासनरागी श्रावक समझते है कि व्यवहारिक पढ़ाई अपूर्ण है । स्वयं शिक्षण शास्त्र के निष्णात भी आज की शिक्षण प्रथा की कड़ी आलोचना करते है ।

बीते हुए सौ साल में यह प्रश्न का उत्तर हमने तीन-चार प्रकार के आयोजनों से अच्छी तरह समझा है ।

(१) महेसाणा पाठशाला जैसी पाठशालाऐं - पाठशाला धार्मिक शाला की प्रवृत्ति (२) शिबिरो का आयोजन (३) तपोवन का आयोजन (४) जैनो के प्रभुत्ववाली शाला और महाशालाओं का आयोजन...

यह प्रत्येक आयोजनों के विषय में ज्यादा विवेचन नहीं करता हूँ । किन्तु यह चार प्रवृत्तिओं का जब प्रारंभ हुआ तब-तब उसका विरोध होते ही आ रहा है । शायद यह विरोध निषेधात्मक स्वागत था । जो लोग नया कार्य, नई दिशा खोजने में और प्रश्नों का वास्तविक हल करने में पीछे हटे हुए है, दूसरो के द्वारा दिए गए समाधान को स्वीकार नहीं सकते है । वास्तव में यह समाधान, यह मार्ग, पेड में विकसित होते पान, पुष्प, फल जैसे स्वाभाविक मार्ग होता है । लेकिन यह मार्ग में खुद की चाह होते हुए भी अन्य के अधिकार में गई हुई बात को देखकर बहोत लोक उलझन में आ जाते है और बेचैन रहते है । यह उलझन और बेचैनी एक विरोध में परिवर्तित होती है । अंत में ऐसे विरोध से ही ऐसी प्रवृत्तिओं का विकास होता है ।

धार्मिक शिबिर भी विरोध का विषय बन चुकी है । अभी भी सुनाई न दे ऐसी धीरे धीरे गुनगुनाहट चालु है फिर भी यहां इतना तो मानकर चलते है कि वर्तमान युग में धार्मिक शिबिर ज्ञान का आदान-प्रदान करने का सुंदर मार्ग है ।

ऐसी शिबिर की प्रवृत्ति का प्रारंभ करके युवा प्रतिबोधक **पू.आ.देव भुवनभानुसूरीश्वरजी म.सा.** ने समाज के उपर एक बहोत बड़ा उपकार किया था । यह महापुरुष का जब कभी मुझे सत्संग करने का मौका मिला तब तब मैंने बहोत ही रचनात्मक बाते सुनी थी । आगामी पेढी के विचारो को जानने की कला यह महापुरुषों में थी । यह बात सिद्ध हो चूकी है । यह महापुरुष के दिल में ''**शासन मंदिर**'' की एक कल्पना थी। प्राप्त समाचार के अनुसार भीवंडी में युवाजन प्रतिबोधक आचार्य प्रवर हेमरत्नसूरिजी ''**भुवनभानु मानस मंदिर**'' का मार्गदर्शन कर रहे है । यह मानस मंदिर अवश्य यह महापुरुष के विचारो की दिव्य स्मृति बनेगा शिबिर जैसा छोटा-सा कोर्स शायद १२ महिना उचित स्थान में चलना चाहिए । व्यवहारिक शिक्षण ने एक सामान्य व्यक्ति को विद्यार्थी में से विकार का अर्थी या विनाश का अर्थी बताया है ।

अतः यह विद्यार्थी आध्यात्मिक भारत देश के नागरिक है उनको भावि के शासन के रक्षक बनाने के लिए और रक्षको तैयार करने के लिए अनेक ढंग से तैयार होना ही पड़ेगा । ऐसी शिबिरों का आयोजन आज विस्तृत रुप से हो रहा है । ज्ञान के साथ संस्कार का निर्माण भी शिबिर से ही होता है । शिबिर में से कुछ विद्यार्थी साधु होते है यह तो उत्तम ही है । किन्तु प्रत्येक शिबिर विद्यार्थी के दिल में शासन भक्ति ज्यादा रहे यह बहोत जरुरी है । शिबिर विद्यार्थी का जीवन अनोखा हो और उनके दिल में नैतिकता - आध्यात्मिकता - राष्ट्रवफादारी और विश्व बंधुत्व की भावना सदा बहती रहे यह बहोत जरुरी है । शरीर में यदि खुन बहता न रहे तो शरीर लकडा बन जाता है । जीवन में उत्साह खून समान है । जिसके जीवन में उत्साह की धडकन न हो वह जींदा होने पर भी चलता-फिरता, खाता-पिता, उठता-बैठता मुर्दा(शब) है । इसीलिए आज सर्व क्षेत्र में ज्ञान और संस्कार प्रदान करनेवाली शिबिरों की आवश्यकता है ।

एक शिबिर का आयोजन वेपरी मद्रास में सं. २०५४ में हुआ था । अनुभव से लगता है कि तत्त्व ज्ञान गहरा ज्ञान है वह ज्ञान से कर्तव्य के ज्ञान की आज की पेढी को बहोत ज्यादा आवश्यकता है । ऐसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर यह शिबिर का नाम **आचार-संस्कार प्रबोधिनी शिबिर (गुरुकुलवास)** रखा है। इसीके लिए मुझे "**मन्हजिणाणं**" सज्झाय ज्यादा उचित लगती है । स्व. पं. चरणविजयजी म.सा. तथा हमारे सदा उत्साही आचार्य प्रवर वीरसेनसूरीश्वरजी म.सा. ने भी इस विषय में छोटी-बड़ी पुस्तिकाए लिखी है । अन्य महान व्यक्तियों ने भी इस विषय में छोटी बड़ी पुस्तिकाए लिखी होगी किन्तु मेरी जानकारी में नहीं है ।

यह सज्झाय श्रावक जीवन के ३६ कर्तव्यों की एक सुमधुर सुचि है । सज्झाय प्राकृत भाषा में है । किन्तु सरल एवं शीघ्र समझ में आए ऐसी है । शिबिर का अभ्यासक्रम बनाने के लिए

मुझे यह सज्झाय उचित लगती है । और सोचते-सोचते प्रत्येक कर्तव्य पर पांच-पांच प्रश्न लिखना प्रारंभ किया । शिबिर का यह विभाग का संचालन गुरु भक्त **विद्वान मुनि रत्नयशविजयजी** करते थे । इसीलिए इन प्रश्नों का उत्तर लिखने उनको ही कहा । इस तरह से यह सुंदर प्रश्नोत्तर का ग्रंथ हो गया । विद्वान और बुद्धिमान महात्मा जरुर यह ग्रंथ पर विचार करके इस विषय में सूचन करने योग्य कुछ बाते लेखक मुनि को सूचित करें । एक बार तो ऐसा भय पैदा हो गया था कि टी.वी. आने के बाद पुस्तको की कोई भावि उपयोगिता नहीं रहेगी । कुछ समय तक टी.वी. का प्रभाव रहा लेकिन जो व्यक्ति ने टी.वी. की कल्पना नहिं की थी वे हमारे बुजुर्ग लोग अनुभवी थे । उन्होंने एक कहावत बताई **"नई बहू नौ दिन"** । वर्षो के बाद टी.वी. का प्रभाव कम हुआ । ठीक संक्षिप्त में ढंग से लिखा हुआ और आकर्षक तथा स्वच्छता से छपी पुस्तिका का आज भी महत्त्व है फिर भी यह प्रवृत्ति पर जोर देने की आज भी जरुरत है ।

: ३६ कर्तव्य :

३६ कर्तव्य यहां बताना योग्य है ।

(A) (१) जिनाज्ञा पालन (२) मिथ्यात्व परिहार (३) सम्यक्त्व धारण । **(B)** (४) सामायिक (५) चतुर्विंशति स्तव (६) वंदन (७) प्रतिक्रमण (८) कार्योत्सर्ग (९) पच्चक्खाण (१०) पौषध **(C)** (११) दान (१२) शील (१३) तप (१४) भाव **(D)** (१५) स्वाध्याय (१६) नमस्कार मंत्र जाप **(E)** (१७) परोपकार (१८) जयणा (यतना) **(F)** (१९) जिन पूजा (२०) जिन स्तुति (२१) गुरु स्तुति **(G)** (२२) साधर्मिक वात्सल्य (२३) व्यवहार शुद्धि (२४) रथयात्रा (२५) तीर्थयात्रा **(H)** (२६) उपशम (२७) विवेक (२८) संवर (२९) भाषा समिति (३०) षड्जीवकाय करुणा **(I)** (३१) धार्मिक जन संसर्ग (३२) करणदमो (३३) चरण परिणामो **(J)** (३४) संघोपरि बहुमान **(K)** (३५) पुस्तक लेखन (३६) तीर्थ प्रभावना ।

ऐसे कुल ३६ कर्तव्यों को ११ विभाग में बाँट सकते है। एक एक शिबिर में यदि दो-दो विभाग में वाचना दे सकते है तो इस तरह छः शिबिर में अभ्यासक्रम पूरा हो सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक के विषय में लेखक मुनि निरंतर प्रयास करके इसके लिए लेखित परीक्षा का भी आयोजन करे तो ज्ञान का अच्छा प्रचार होगा। सिर्फ लेखक मुनि ही नहीं, कोई भी मुनि महात्मा इस विषय में प्रयत्न कर सकते है।

यह कोई आवश्यक नहीं है कि यही पांच प्रश्न और उनका उत्तर ही शिबिर में पढायें। यह ३६ कर्तव्यो के विषय में और भी अनेक प्रकार के प्रश्न हो सकते है और विविध अपेक्षा से उसका उत्तर हो सकता है।

मेरा नम्र अनुरोध है कि इस विषय में सभी चिंतन करें। मद्रास, नागपूर में यह विषय की गहनता समझनेवाले विद्यार्थी मिलना मुश्किल नहि है। किन्तु गुजरात, राजस्थान में तो बड़ी संख्या में ऐसे विद्यार्थी प्राप्त हो सकते है।

अंत में यह ग्रंथ मैने अच्छी तरह से पढ़ा है फिर भी कोई त्रुटि कोई गलत बाते जाने-अनजाने लिखी हो तो मेरा मिच्छा मि दुक्कडम्। प्रस्तु ग्रंथ आप सभी को आत्मा से परमात्मा की और ले जाए यही आशिष...

वि.सं. २०५५, आसो सुद-५,
दिनांक : १४-१०-१९९९, नागपूर

द.
आचार्य राजयशसूरि

• • •

(वि.सं. २०७९, महा वद-६, ता. १२-२-२०२३ पू. रत्नयशसूरि म.सा. के कालधर्म निमित्ते पुनः प्रकाशित...)

न्याय पारंगत, ज्योतिष विशारद विद्वान वक्ता
प.पू.आचार्यदेव श्री रत्नयशसूरीश्वरजी महाराजा

- **संसारी नाम :** श्री राजेशभाई कान्तिलाल गांधी
- **माता :** जशवंतीबहेन ✤ **पिता :** कान्तिलालभाई
- **भाई :** दिनेशभाई, कमलेशभाई ✤ **बहन :** ज्योत्सनाबहेन, तरुबहेन
- **जन्म :** कार्तिक वद-11 **(श्री पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक)** वि.सं. 2012, दि. 9-12-1955 (कलकत्ता)
- **दीक्षा :** वैशाख सुद-7 **(श्री धर्मनाथस्वामी च्यवनकल्याणक)** वि.सं. 2030 दि. 28-4-1974
- **दीक्षा भूमि :** भाटसण (डीसा) (201 दिन का कलकत्ता से पालीताणा का ऐतिहासिक छ'री पालित संघ)
- **दीक्षा दाता :** प.पू. गुरुदेव आचार्यदेव श्री विक्रमसूरीश्वरजी महाराजा।
- **गुरुदेव :** गीतार्थ गच्छाधिपति पू. आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी महाराजा ।
- **वडी दीक्षा :** अषाढ़ सुद-10, वि.सं. 2030 दि. 29-6-1974 (आरीसा भुवन-अनंत सिद्धों की भूमि पालीताणा)
- **उपाध्याय पद :** चैत्र वद-13 **(श्री अनंतनाथ जन्मकल्याणक)** (वि. सं. 2061, दि. 6-5-2005 (वर्धमान नगर, नागपुर)
- **आचार्य पद :** मागसर सुद-३, वि.सं. 2064, दि. 30-11-2008 (रसुलपुरा, सिकन्द्राबाद)
- **उपाध्याय - आचार्य पद प्रदाता :** गीतार्थ गच्छाधिपति पू. आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी महाराजा ।
- **कालधर्म :** वि.सं. 2079, महा वद-6, दि. 12-2-2023, सुबह 10.40 बजे (श्री लब्धि विक्रम नगर, सोला रोड, अहमदाबाद) **(श्री सुपार्श्वनाथ केवलज्ञान कल्याणक)**

विषयानुक्रम...

छत्तीस जैनाचार का विज्ञान याने आदर्श श्रावक जीवन

१. जिनाज्ञा पालन

प्रश्न १ : 'जिन' का मतलब क्या है ?

उत्तर १ : जो महापुरुष राग, द्वेष को जितनेवाले है वे जिन कहलाते है।

प्रश्न २ : 'सर्वज्ञ' का मतलब क्या है ?

उत्तर २ : सभी वस्तुओं को जो जानते है वे सर्वज्ञ है । तीनों काल के सभी पदार्थो को एक साथ में जाननेवाले सर्वज्ञ कहलाते है ।

प्रश्न ३ : जिन एवं सर्वज्ञ ही क्यों श्रद्धेय होते है ?

उत्तर ३ : दुनिया में कोई भी व्यक्ति झूठ बोलते है तो वह झूठ बोलने के तीन कारण है : (१) राग (२) द्वेष (३) अज्ञान ।

जो जिन है और सर्वज्ञ है उनमें राग, द्वेष और अज्ञान नहीं है इसलीए वे जो कुछ भी कहते है वह सत्य ही है और इसलिए वे श्रद्धा करने योग्य है ।

प्रश्न ४ : 'आज्ञा' का मतलब क्या है ?

उत्तर ४ : आज्ञा का मतलब कर्तव्य । आज्ञा दो प्रकार की है ।

(१) **विधि आज्ञा** – करने योग्य करना

(२) **निषेध आज्ञा** – नहीं करने योग्य नहीं करना ।

प्रश्न ५ : 'संक्षेप' एवं 'विस्तार' से जिनाज्ञा क्या है ? इसका परिचय दीजिये ।

उत्तर ५ : जिन कारणों से जीव को कर्म लगता है उन कारणों का त्याग करना और जिन कारणों से जीव के कर्म नाश होते है वे कारणों का बारबार आचरण करना; संक्षेप से यह जिनाज्ञा है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

जिनाज्ञा का विस्तार से परिचय :

(१) वीतराग एवं सर्वज्ञ ऐसे तीर्थंकरो के उपदेश का पालन करना। शक्य हो तो चारित्र ग्रहण करना। (२) राग-द्वेष का त्याग करना। (३) असंयम का त्याग करना। (४) मन-वचन-काया को काबु में रखना। (५) चार कषायों का त्याग करना। (६) सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, निष्परिग्रहता यह पांच महाव्रत का पालन करना। (७) पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय की रक्षा करना। (८) अष्ट प्रवचन माता का पालन करना। (९) ब्रह्मचर्य की नव वाड पालना। (१०) दश प्रकार के यति धर्म पालना, पलाना, अनुमोदना करना। (११) २२ परिषह जीतना। (१२) मैत्री, प्रमोद, कारुण्य, माध्यस्थ भावना तथा अनित्यादि १२ (बारह) भावना भाना।

जिनेश्वर भगवान की आज्ञा है अगर हम चारित्र नहि ले सकते हैं तो चारित्र की भावना रखना और श्रावक के बारह व्रत स्वीकार करना। यदि श्रावक के बारह व्रत नहि ले सकते है तो जिनेश्वर भगवान ने जो कहा है वह सत्य ही है ऐसा मानना। भगवान की अष्टप्रकारी पूजा करना, गुरु भगवंत की वाणी सुनना, सत्संग करना और देव, गुरु, धर्म के उपर श्रद्धा रखना। अगर देव, गुरु, धर्म का विवेक नहीं कर सकते है एवं उपरोक्त कर्तव्य का पालन न कर सके तो मार्गानुसारी के निम्नलिखित ३५ गुण जीवन में उतारना।

(१) न्याय संपन्न वैभव, (२) शिष्टाचार प्रशंसा, (३) उचित विवाह, (४) पाप का डर, (५) प्रसिद्ध देशाचार का पालन, (६) निंदा का त्याग, (७) उचित मकान, (८) सत्संग, (९) माता-पिता की पूजा, (१०) निंदनीय प्रवृत्ति का त्याग, (११) उपद्रववाले स्थान का त्याग, (१२) उचित व्यय, (१३) उचित देश, (१४) नित्य प्रवचन श्रवण, (१५) अजीर्ण में भोजन त्याग, (१६) बुद्धि के आठ गुण, (१७) काल में सात्विक आहार करनेवाला, (१८) त्रिवर्ग में अबाधा (परस्पर अबाधित धर्म, अर्थ, काम का सेवन), (१९) अतिथी, साधु ओर गरीब की सेवा, (२०) कदाग्रह का त्याग, (२१) गुण पक्षपाती, (२२) अदेश अकाल का त्याग (अनार्य देश का त्याग), (२३) बलाबल का विचार, (२४) पालन करने योग्य माता-पिता-स्त्री-पुत्रादि का भरण-पोषण करना, (२५)

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

चारित्रधर, ज्ञानी एवं वृद्ध की पूजा करनेवाला, (२६) दीर्घदर्शी, (२७) विशेषज्ञ, (२८) कृतज्ञ, (२९) लोकप्रिय, (३०) लज्जावाला, (३१) दयालु, (३२) सौम्य, (३३) परोपकारी, (३४) छह आंतर शत्रु को जीतनेवाला, (३५) इन्द्रिय जय। इस ग्रंथ में भी श्रावक के ३६ कर्तव्य दिखाये गये है। उनका पालन करना भी जिनाज्ञा का ही पालन है।

२. मिथ्यात्व-परिहार

प्रश्न ६ : 'मिथ्यात्व' का अर्थ क्या है ?

उत्तर ६ : जिनेश्वर भगवानने जो फरमाया है वह गलत है ऐसा मानना वह मिथ्यात्व है। हमें मोक्षमार्ग के प्रति जो भ्रांत करते हैं या विश्व तत्त्व जिस तरह है उससे विपरीत बताते है... उन लोगों के वचन पर श्रद्धा रखना मिथ्यात्व है।

जो देव किसी व्यक्ति पर खुश होकर वरदान देता है और किसी व्यक्ति पर नाराज होकर श्राप देता है वह उनकी अपूर्ण दशा है ऐसे देव को भगवान मानना वह मिथ्यात्व है।

दुनिया में भिन्न धर्म है और सभी धर्मो के भिन्न-भिन्न देव है। कुछ देवों के हाथ में पुस्तक है उनको पढने का या पढाने का बाकी है। कुछ देव के हाथ में शस्त्र है, उनको लडने या लडाने का बाकी है या तो उनको किसीसे भय है। कुछ देवों के हाथ में वाजिंत्र है उनको संगीत सुनाना बाकी है। कुछ देव के नजदीक में देवी है, ऐसे देवों के दर्शन से भी हमें संसार संबंधी विचार आते है। ऐसे अपूर्ण देवों को देव मानना मिथ्यात्व है।

जो पांच महाव्रत नहीं पालते है ऐसे साधुजनों को गुरु मानना वह मिथ्यात्व है। हिंसा-एकांत आदि अधर्म को धर्म मानना वह मिथ्यात्व है।

प्रश्न ७ : मिथ्यात्व क्यों छोडना चाहिए ?

उत्तर ७ : जहाँ तक जीव मिथ्यात्व का त्याग नहीं करता है वहाँ तक जीव का मोक्ष निश्चित नहीं होता है। वह अनंत संसार में घुमता ही

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

रहेगा । मिथ्यात्व छोडने के बाद और समकित प्राप्त होने के बाद यह अवश्य होता है कि यह जीव जरुर एक निर्धारित काल में मोक्ष में जाता है ।

जहां तक जीव में मिथ्यात्व होता है वहां तक वह सुख के साधन को दु:ख का साधन समजता है, मानो वह मित्र को शत्रु समजता है और शत्रु को मित्र समझता है ।

शास्त्रकारोने १८ पापस्थानको के सेवन को हेय माना है । किंतु मिथ्यात्व के उदय के कारण जीव इन १८ पापस्थानको को उपादेय समझता है । इन पापस्थानको में अत्यंत आसक्ति से प्रवृत्ति करता है और दुर्गतिमें जाता है । अत: मिथ्यात्व हमें पाप प्रवृत्ति में लगाये रखता है । इसलिये मिथ्यात्व का त्याग अवश्य करना चाहिये ।

जहां तक जीव में मिथ्यात्व है वहां तक वह जितना भी ज्ञान मिलाये वह सब अज्ञान है । क्योंकि मिथ्यात्व के कारण उसका ज्ञान मोक्ष के प्राप्ति के लिए उपयोगी नहीं बनता है । और उसके जन्म-मरण के चक्कर बढते जाते है ।

कर्म विज्ञान के हिसाब से मोहनीय नाम का एक कर्म है। यह कर्म दो प्रकार का है । मिथ्यात्व मोहनीय तथा चारित्र मोहनीय । इस कर्म को शराब की उपमा दी है । जब आदमी शराब पीता है तब उसमे विवेक नही रहता है । कौन मेरी माँ है... लडकी है... पत्नी है... बहन है, उसी तरह से मोहनीय कर्म के उदय से जीव यह विवेक भूल जाता है कि दुश्मन कौन है । मित्र कौन है। मिलाने योग्य क्या है । छोडने योग्य क्या है । अत: जब तक मिथ्यात्व प्रबल रहेगा तब तक हमारी मोक्षमार्ग मे प्रवृत्ति होगी नहीं और हमें उच्च देवगति या मोक्ष मिलेगा नही और हमे प्रशम रुप आत्म सुख मिलेगा नही और हमे शुद्ध चारित्र भी मिलेगा नही । अत: महान आत्म शत्रुरुप मिथ्यात्व को हमे शीघ्र ही छोड देना चाहिये।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न ८ : थोडे बहुत मिथ्याचारों का परिचय दीजिए ?

उत्तर ८ : जहां जिन मंदिर नहीं है अथवा जिनमूर्ति होने पर भी जिनेश्वर के रुप में पूजा नहीं की जाती है ऐसे तीर्थो की यात्रा करना उदाहरण–

(१) तिरुपति बालाजी की यात्रा करना, शिर मुंडाना, मानता मानना।

(२) शीतला सप्तमी के दिन ठंडा खाना ।

(३) गणेश चतुर्थी के दिन गणपतिजी के जुलुस देखना, प्रशंसा करना, उसमें भाग लेना ।

(४) सभी भगवान समान है ऐसा भाव दिल में लाना और राम मंदिर, शिव मंदीर, गणेश मंदीर में जाना और सभी देवो की पूजा करना ।

(५) अन्य धर्म के संन्यासी जो मंत्र चमत्कार करते है उससे आकर्षित होकर उनको गुरु मानना ।

(६) तुलसी के पौधे की पूजा करना ।

(७) शनिवार को हनुमानजी के मंदिर में तैल चढ़ाना ।

(८) होली का त्योंहार मनाना । इत्यादि जिन आगमो से विरुद्ध आचरण करना ।

प्रश्न ९ : मित्यात्व के कितने प्रकार है ? नाम लिखिए ।

उत्तर ९ : (१) आभिग्राहिक (२) अनाभिग्राहिक (३) आभिनिवेशिक (४) सांशयिक (५) अनाभोगिक

प्रश्न १० : पांचो मिथ्यात्व का परिचय दिजीए ?

उत्तर १० : आभिग्राहिक : जो व्यक्ति अपनी मान्यता के अनुसार शास्त्र का अर्थ करता है, किन्तु शास्त्र के अर्थ अनुसार अपनी बुद्धि नहीं चलाता है, उसे **आभिग्राहिक मिथ्यात्व** कहते है ।

अनाभिग्राहिक : सभी धर्म समान है, सभी सुंदर है। सभी देव, गुरु, धर्म समान है। देव, गुरु धर्म अच्छा है। अच्छा, अच्छा सब समान मानता है । उसे **अनाभिग्राहिक मिथ्यात्व** कहते है । (रत्न और पत्थर समान नहीं होते है उसी तरह से सभी समान मानना गलत है।)

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

आभिनिवेशिक : सत्य को जानने पर भी अपने द्वारा मान्य असत्य को छोड़ना नहीं । यह मिथ्यात्व ज्यादा हानिकारक है। भगवान वीतराग ने जो कहा है वह सब सत्य है लेकिन कोई एक बात गलत ही है ऐसा आग्रह वह **आभिनिवेशिक मिथ्यात्व** है ।

सांशयिक : (शंका, कुशंका करते रहना)
जिनेश्वर भगवान ने जो कहा है वह सच्चा है या नहीं ? २४ तीर्थंकर हो गए कौन देखने गया था ? देव, नरक है ? किसने देखा ? ऐसी शंका करनेवालों को **सांशयिक मिथ्यात्व** है ।

अनाभोगिक : (अव्यक्त एकेन्द्रिय आदि जीवों को होता है।)
चातुर्मास में जब ज्यादा बारिश आती है तब तालाब के किनारे (नील-फुग) काइ हो जाती है। उसे अगर हम छुते है तो बड़ा कोमल लगता है । इनके एक शरीर में अनंत जीव होते है । यह (काइ) नील-फुग को बादर-निगोद कहते है। सूक्ष्म-निगोद पूरे १४ रज्जु लोक (राजलोक में) फैले हुए है।

निगोद मे रहे हुए जीव अव्यक्त दशा में होते है जैसे आदमी कितना भी ज्ञानी हो, कितना भी धनवान हो, सो जाता है तब अव्यक्त दशा में रहता है ।

अव्यक्त दशा में रहे हुए निगोद के जीव को तत्त्व की जो अज्ञानता है वह **अनाभौगिक मिथ्यात्व** है ।

३. सम्यक्त्व धारण

प्रश्न ११ : 'सम्यक्त्व' का अर्थ क्या है ?

उत्तर ११ : अच्छी श्रद्धा को सम्यक्त्व कहते है ।

जिनेश्वर भगवंत ने जो कुछ कहा है वह सच्चा ही है ऐसी दृढ श्रद्धा को सम्यक्त्व कहते है। वीतराग देव में देव की बुद्धि, महाव्रतधारी साधु में गुरु की बुद्धि, अहिंसामय जैन धर्म में धर्म की बुद्धि को सम्यक्त्व कहते है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १२ : सम्यक्त्व के तीन भेद बतायें ?

उत्तर १२ : (१) औपशमिक सम्यक्त्व (२) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (३) क्षायिक सम्यक्त्व

प्रश्न १३ : सम्यक्त्व की महिमा संक्षेप में लिखें।

उत्तर १३ : सम्यक्त्व की महिमा निम्नलिखित है :

(१) क्षायिक समकित वाला जीव एक ही भव में मोक्ष में जाता है। अगर आयुष्य का बंध हो गया है और बाद में क्षायिक समकित प्राप्त होता है तो वह जीव तीन-भव में मोक्ष में जाता है। यदि क्षायोपशमिक समयक्त्व स्थिर रहे तो क्षायोपशमिक समकितवाला **जीव को सात या आठ भव में** मोक्ष संभवित है और औपशमिक समकितवाला जीव अर्ध पुद्गल परावर्तन काल में जरुर मोक्ष में जाता है, यह सम्यक्त्व की महिमा है।

(२) सम्यक्त्व वाला जीव चाहे नरक में हो फीर भी नरक की दुःख की वेदना में भी दिल में अपराधी के प्रति भी बुरा भाव कभी नहीं लाता है। दुश्मन की भलाई मैं कैसे करुं यह भावना दिल में रहती है और यह शुभ मानसिक भावना के कारण वह दुःख को समता से सहन कर सकता है और कर्म का नाश करता है।

(३) सम्यक्त्वधारी जीव देवलोक में हो या राजा हो, बलदेव हो या चक्रवर्ती। फीर भी दिल में संसार के सुख के प्रति आसक्ति नहीं होती है। उनके मन में एक ही भावना रहती है मोक्ष में ही सुख है। संसार जेल है। जिनेश्वर भगवंत ने जो कहा है वह सच्चा ही है। संयममार्ग ही सच्चा है। मैं कब संयम का पालन करुंगा। ऐसी भावना में सदा रहता है। साधु-साध्वी का आदर करेगा। सुख में अनासक्ति से कर्म का नाश होता है। यह सम्यक्त्व की महिमा है।

(४) सम्यक्त्वधारी जीव अति तीव्र भाव से पाप नहीं करता है। परिणाम कोमल होता है। यह सम्यक्त्व की महिमा है कि वह लघुकर्मी होता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १४ : सम्यक्त्वधारी के कुछ आचारों का वर्णन करें।

उत्तर १४ : सम्यक्त्वधारी के आचार दो प्रकार के है :

(१) अभ्यंतर आत्मा के परिणामरुप आचार

(२) बाह्य क्रिया रुप आचार।

सम्यक्त्व प्राप्त होने के बाद जीव को संसार का सुख पाप का साधन लगता है। वह संसार का सुख भोगता नहीं है और अगर संसार का सुख भोगेगा तो भी वह आसक्ति नहीं रखेगा। गरीबों के प्रति, रोगी के प्रति दिल में दया भाव रखेगा। तीव्र भाव से पाप नहीं करेगा। जो समय में जो उचित है वह कार्य उस समय में करेगा। सुख में गर्व नहीं करेगा। दु:ख में रोकर आर्तध्यान नहीं करेगा। दु:ख में धैर्य रखेगा।

(१) राग-द्वेष रहित जिनेश्वर देव मेरे देव है। महाव्रतधारी, ब्रह्मचारी मेरे गुरु है और अहिंसामय धर्म-जैन धर्म मेरा धर्म है।

ऐसे देव, गुरु और धर्म उपर दृढ़ श्रद्धा रखनेवाला सम्यक्त्वी जीव होता है। भगवान के वचन ही शास्त्र है और शास्त्र में जो कहा है वह सच्चा ही है।

सम्यक्त्वधारी जीवों के बाह्य क्रिया, रुप, आचार का वर्णन निम्नलिखित है। सम्यक्त्वधारी जीव जब व्रत-नियम पालन करने में आगे बढ़ते है तब वह :

(१) दो टाईम प्रतिक्रमण करना

(२) अष्टप्रकारी प्रभु पूजा भाव से करना।

(३) जिन मंदिर में देववंदन सूत्र के अर्थ की विचारणा के साथ करना

(४) मुद्रा, मुहपत्ति के बोल, वंदन (वांदणा) क्रिया, खमासमण के संडासे इत्यादि में छोटी गलती भी न हो उसका ध्यान रखना।

(५) नित्य व्याख्यान श्रवण।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(६) नित्य गुरुवंदन और गुरु के पास यथाशक्ति पच्चक्खाण करना ।

(७) साधु-साध्वीजी म.सा. को आहार-पानी, साधर्मिक भक्ति, गरीबो को अनुकंपादान, पशुओं की दया का ध्यान रखना ।

(८) शास्त्र का चिंतन-मनन-ध्यान करना ।

(९) हंमेशा साधु बनने की भावना रखना ।

(१०) रात को सोने के पहले संथारा पोरिसी आदि जैसी वैराग्यमय भावना सोचते-सोचते सोना चाहिए ।

(११) संसार के पात्र पत्नी, पुत्र, पुत्री, धन, मकान, मिल्कत पर ज्यादा राग नहीं रखना ।

(१२) वडील माता, पिता, दादा, दादी आदि का विनय करना।

(१३) पर्व तिथि पोषध करना ।

(१४) तीर्थयात्रा करना तथा करवाना ।

(१५) पाप की आलोचना करना ।

(१६) शरीर संसार में रहते हुए भी मन मोक्ष में रखना ।

(१७) प्रत्येक धर्माराधना का मुख्य उद्देश्य मोक्ष है यह ख्याल रखे।

(१८) तीव्रभाव से पाप नहीं करना ।

(१९) औचित्य का पालन करना ।

(२०) दया भाव रखना ।

प्रश्न १५ : सम्यक्त्व के बारे में विशेष जानकारी हेतु खास क्या पढ़ना या सिखना चाहिए ?

उत्तर १५ : (१) योग दृष्टि समुच्चय (२) योग शास्त्र (३) धर्म संग्रह (४) श्राद्ध विधि (५) तत्त्वार्थ सूत्र (६) योग बिंदु इत्यादि ग्रंथ पढ़ना चाहिए । "सम्यक्त्व" विषय सरल होने पर भी गहन विषय है। इनका मुख्य लक्षण नव तत्त्वो की श्रद्धा है । अतः ये सारे ग्रंथ गुरुगम से ही पढ़ना चाहिए ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

४. षड् आवश्यक सामायिक

प्रश्न १६ : षड् आवश्यक के नाम लिखें तथा उन छह कर्तव्यों को आवश्यक क्यों कहे गए है ?

उत्तर १६ : (१) सामायिक (२) चउविसत्थओ-चतुर्विंशतिस्तव (३) वंदण-वांदणा (४) पडिक्कमण (५) काउस्सग्ग-कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण-प्रत्याख्यान - जो अवश्य करने योग्य है उसे आवश्यक कहते है।

प्रश्न १७ : सामायिक का विधिरुप बाह्य स्वरुप क्या है ?

उत्तर १७ : सामायिक का बाह्य स्वरुप निम्नलिखित है :

(१) धोए हुए शुद्ध वस्त्र धारण कर सामायिक करना।

(२) सामायिक में मुहपत्ति, चरवला, कटासना, स्थापनाजी, नवकारवाली आदि उपकरण रखना।

(३) विधिपूर्वक सामायिक लेना।

(४) सामायिक में धार्मिक सूत्र पढ़ना, अर्थ पढ़ना, धार्मिक कहानी पढ़ना, नवकारवाली गिनना, स्वाध्याय करना।

(५) सामायिक में कच्चे पानी को, स्त्री को, वनस्पति को, पैसे को नहीं छुना।

(६) सामायिक में खाना-पीना नहीं।

(७) सामायिक में रेडियो, टी.वी., फोन, पंखा आदि का उपयोग करना नहीं, करवाना नहीं।

प्रश्न १८ : सामायिक का अभ्यंतर स्वरुप क्या है ?

उत्तर १८ : सामायिक का अभ्यंतर स्वरुप निम्नलिखित है :

सामायिक महान आध्यात्मिक साधना है। मैत्री भावना आदि चार भावना, अनित्यादि १२ भावना में लयलीन बनकर आत्मा मे कौन से कौन से आध्यात्मिक गुण बेठे है वह देखना। ऐसे गुणों की प्रगति और भी किस तरह से हो उनके विचार में, चिंतन में लगना। योग

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

शास्त्रादि ग्रन्थों में पिंडस्थ, पदस्थ, रुपस्थ, रुपातीत ध्यान बताये है उस ध्यान का अभ्यास करना। सूत्र स्वाध्याय भी अर्थ चिंतन करके ही करना चाहिए। जाप भी नियमिततासे होना चाहिए। उदाहरण- जैसे १२ मिनिट में एक नवकारवाली अगर हम गिनते है तो चार नवकारवाली गिनते बरोबर ४८ मिनिट ही होनी चाहिए। रागद्वेष के प्रवाह में आते है तब ही समय ज्यादा कम होता है। अतः सामायिक में समय का ध्यान रखते वीतरागी भावो की अनुप्रेक्षा करें। गीतार्थ गुरुओं से मार्गदर्शन पा कर सामायिक से अभ्यंतर स्वरुप के अभ्यास मे आगे बढ़े।

(१) जिसमे समता का लाभ होता है उसे सामायिक कहते है।
(२) सामायिक में कलेश नहीं करना।
(३) सामायिक करनेवाला साधु जैसा है।
(४) सामायिक सम्यक् चारित्र है।
(५) ध्यान के द्वारा सामायिक में हम साधु धर्म का आस्वाद ले सकते है।
(६) एकाग्रता प्राप्त करने के लिए सामायिक में नवकार मंत्र या लोगस्स आदि का काउस्सग्ग करना।
(७) सामायिक में मन के १० दोष, वचन के १० दोष और काया के १२ दोष का त्याग करना चाहिए।
(८) सामायिक में कोई पाप मन, वचन, काया के व्यापार से नहीं करना चाहिए, नहीं करवाना चाहिए।

प्रश्न १९ : सामायिक का स्वरुप कौन से सूत्र में आता है ?

उत्तर १९ : सामायिक का स्वरुप 'करेमि भंते' सूत्र में आत्मा है।

प्रश्न २० : सामायिक की प्रशंसा कौन से सूत्र में आती है ?

उत्तर २० : सामायिक की प्रशंसा 'सामाइय वय जुत्तो' सूत्र में आती है। सामायिक करनेवाला जहाँ तक सामायिक में है वहाँ तक साधु जैसा है। जहाँ तक सामायिक में है वहाँ तक अशुभ कर्म का नाश होता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

५. चउवीसत्थओ

प्रश्न २१ : चउवीसत्थओ का मतलब क्या ?

उत्तर २१ : चउवीसत्थओ का मतलब है चोवीस तीर्थंकरो की स्तुति।

प्रश्न २२ : नाम जाप का महत्त्व समझाइए ?

उत्तर २२ : तीर्थंकरो के नाम का जाप करना उसका बहुत बड़ा महिमा है। शुभ भाव से जब हम पानी को भी अमृत मानकर चिंतन करते है तब पानी भी अमृत का फल देता है। चोवीस तीर्थंकरों के नाम जाप करने से हम भी तीर्थंकर हो सकते है।

योगशास्त्र में कहा है पहले परमात्मा का ध्यान करना और बाद में 'सोऽहं' जो परमात्मा है वह मैं हूँ ऐसा ध्यान करना।

प्रश्न २३ : चोवीस तीर्थंकरो के नाम कोन से सूत्र में आता है।

उत्तर २३ : चोवीस तीर्थंकरो के नाम लोगस्स सूत्र में आते है।

प्रश्न २४ : लोगस्स सूत्र का और भी महत्त्व समझाइए ?

उत्तर २४ : लोगस्स सूत्र का ज्यादा महत्त्व इसलिए है कि यह सूत्र में २४ तीर्थंकरो का ध्यान कैसे करना उसकी प्रक्रिया बताई है।

पहले दो भगवान	१ – २	९	१७ १८ १९
	३ – ४ – ५	१० ११ १२	२० २१
	६ – ७	१३ १४	२२
	८	१५ १६	२३ २४

इस प्रकार चोवीस तीर्थंकरो के नाम देकर लोग्गस सूत्र में वंदन किया गया है। प्रभु के पास हम याचना करते है कि हमें मोक्ष की प्राप्ति हो। सम्यक्त्व की प्राप्ति हो। उत्तम समाधि प्राप्त हो और हे सिद्ध प्रभु ! आप हमें सिद्धि दिजीए।

प्रश्न २५ : लोगस्स सूत्र के बारे में विशेष जानकारी देनेवाले पुस्तक का परिचय दिजीए।

उत्तर २५ : लोगस्स सूत्र की विशेष जानकारी के लिए पू. गुरुदेव विक्रम सूरीश्वरजी म.सा. संपादित "लोगस्ससूत्र" स्वाध्याय पढ़ना चाहिए।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

६. वंदन

प्रश्न २६ : जैन धर्म में गुरु का स्थान एवं महत्त्व क्या है ? समझाइए ?

उत्तर २६ : विश्व में बहुत धर्म है। सभी धर्मो में अपने अपने देव एवं गुरु है। लेकिन जैन धर्म के देव विश्व के श्रेष्ठ देव है और जैन धर्म के गुरु विश्व के श्रेष्ठ गुरु है।

विश्व के प्रायः सभी धर्म के गुरु के आचार और जैन मुनि के आचार को जब हम देखेंगे तो हमें यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि जैन धर्म में अहिंसा के सिद्धांत का जितना गहरा वर्णन किया है और जीवन में, आचरण में अहिंसा का अमल किया है उतना और कोई धर्म में नहीं है।

जैन धर्म के मुनि मोटर, रेलवे, विमान, घोडागाड़ी, बैलगाड़ी आदि कोई वाहन का उपयोग नहीं करते है। पूरे हिन्दुस्तान में पैदल चल कर ही जैन धर्म का प्रचार करते है। चींटी, मंकोडे आदि जीवों की हिंसा गाडी, मोटर से होना स्वाभाविक है, जब कि पाँव से चलनेवाले मुनि नीचे देखकर चलते है और छोटे से छोटा जीव जैसे चींटी, मंकोडा, घास, कच्चा पानी आदि पर पाँव नहीं रखते है। और अहिंसा का सूक्ष्मता से पालन करते है।

जैन साधु ब्रह्मचारी होते है। वह स्त्री को छूते नहीं है, लेकिन इतना ही नहीं खुद के कपड़े अगर गलती से भी स्त्री के कपड़े को स्पर्श हो जाए तो उसका प्रायश्चित्त करते हैं।

जैन साधु निष्परिग्रही है वह पैसा नहीं रखते है। पैसे को छुते भी नहीं है। सोना, चांदी, हीरा, जवेरात, कोई भी महेंगी चीज साधु नहीं रखते है। कोई मकान, खेत, दुकान आदि के ऊपर अपना स्वामीत्वभाव नहीं रखते है। ऐसा महान निष्परिग्रही जीवन विश्व के कोई धर्म के कोई गुरु में नहीं है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

जैन मुनि अस्त्र का उपयोग नहीं करते हैं। साल में दो बार शिर के केश का लुंचन करते है। यह केस का लूंचन शारीरिक सहन शक्ति की परीक्षा है।

जैन साधु प्रभु महावीर के शास्त्र के अर्थ लोगों तक पहूँचाते हैं। सूत्र के अर्थ में गलती न हो जाए इसके लिए बहुत ज्ञान की और सावधानी की जरुरत पड़ती है।

जैन साधु पाप की आलोचना करते है। पाप गलती से हो गया या जानबुझकर हो गया उसका प्रायश्चित्त शास्त्र के हिसाब से करते है और संसारी लोगों को भी पाप का प्रायश्चित्त करने की प्रेरणा देते हैं।

जैन साधु तपस्या करते है। जैन धर्म की तपस्या बहुत कठिन है। उपवास की तपश्चर्या में २४ घंटे तक खाना कुछ भी नहीं लेते और गरम पानी भी केवल दिन के कुछ घंटे में ही ले सकते है। रात को पानी भी नहीं ले सकते।

तीर्थंकर की गेरहाजरी में गुरु भगवंत आचार्य को जैन धर्म में तीर्थंकर के समान कहे हैं यह बतानेवाले गुरु की महिमा अपरंपार है। मंदिर समकित शुद्धि का आलंबन है लेकिन व्यक्ति को अपने खुद के प्रश्न का समाधान मिलाना है तो गुरु ही आलंबन है। चतुर्विध संघ को रत्नत्रयी में जोड़ने की बड़ी जिम्मेदारी गुरु की है।

प्रश्न २७ : गुरु की वंदना के कितने प्रकार है ?

उत्तर २७ : गुरुवंदना के तीन प्रकार है : (१) फेट्टा वंदन (२) थोभ वंदन (३) द्वादशावर्त वंदन।

(१) **फेट्टा वंदन :** दो हाथ जोड़कर शिर झूकाना, "**मत्थएण वंदामि**" कहना यह फेट्टा वंदन कहा जाता है।

(२) **थोभ वंदन :** गुरु महाराज साहेब को दो बार खमासमण देकर बाद में खड़े हो कर "इच्छकार" का पाठ कहकर जिमना (दाया) हाथ जमीन पर रखकर "अब्भुट्ठिओ" का पाठ कहकर वंदना करना चाहिए।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(३) **द्वादशावर्त वंदन :** आचार्य भगवंत को द्वादशावर्त वंदन करना चाहिए। पहले खमासमण देना, फिर इरियावहियं, तस्सउत्तरी, अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करना, काउस्सग्ग पार कर लोगस्स कहना, फिर मुहपत्ति पडिलेहण करके दो वांदणा देना। फीर दो खमासमण के पश्चात् 'इच्छकार' का पाठ बोलकर एक समाखमण देकर फिर दाया हाथ जमीन पर रख कर "अब्भुट्ठिओ" का पाठ कहना। साधु-साध्वीजी म.सा. और पौषध में रहे हुए श्रावक खमासमण देकर "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बहुवेल संदिसाहु ? इच्छं, खमासमण देकर" इच्छाकारेण संदिसह भगवन्-बहुवेल करशुं ? इच्छं, बोलते है।

इस तरह से द्वादशावर्त वंदन होता है।

प्रश्न २८ : "सुगुरु वंदण सुत्तं" यह सूत्र से द्वादशावर्त वंदन कैसे होता है? द्वादशावर्त का मतलब क्या है ?

उत्तर २८ : यह सूत्र परम विनय को दिखानेवाला सूत्र है। जैन शास्त्र में धर्म का मूल विनय है ऐसा कहा गया है। इस सूत्र में कुल बारह दफे विनयसे गुरु-भगवंत के चरणों का स्पर्श अपनी अंगुलीओं से करके अपने मस्तक को ऐसे पवित्र अंगुलीओं से स्पर्श करना है। अतः हमारी नीचे तरफ की हाथ की अंगुली उपर की तरफ आती है इस तरह करने से एक आवर्त (फेरी) होती है। ऐसी १२ फेरी से (आवर्त से) वंदना पूर्ण होती है। अतः इस वंदन विधि को द्वादशावर्त वंदणा विधि कहते है।

वंदन करते समय शब्द का उच्चारण और वंदनविधि निम्मलिखित है :

अ - रजोहरण का स्पर्श करते हुए बोला जाता है।
हो - ललाट को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।
का - रजोहरण को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।
यं - ललाट को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।
का - रजोहरण को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

य – ललाट को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।

ज – अनुदात्त स्वर से बोला जाता है। उसी समय गुरु चरण की स्थापना को (रजोहरण को) दोनों हाथों से स्पर्श किया जाता है।

त्ता – स्वरित स्वर से बोला जाता है ओर उस समय चरण स्थापना से उठाये हुए हाथ रजोहरण और ललाट के बीच में चौड़े करने में आते हैं।

भे – उदात्त स्वर से बोला जाता है और उस समय दृष्टि गुरु के समक्ष रखकर दोनों हाथ ललाट पर लगाये जाते हैं।

ज – अनुदात्त स्वर से, चरण स्थापना को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।

व – स्वस्ति स्वर से, मध्य में आए हुए हाथ चौडे कर के बोला जाता है।

णि – उदात्त स्वर से, ललाट को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।

ज्जं – अनुदात्त स्वर से, चरण स्थापना को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।

च – स्वरित स्वर से, मध्य में आते हुए हाथ चौडे करके बोला जाता है।

भे – उदात्त स्वर से, ललाट को स्पर्श करते हुए बोला जाता है।

प्रश्न २९ : गुरुवंदन भाष्य में क्या समझाया गया है ?

उत्तर २९ : गुरुवंदन भाष्य में निम्न विषय समझाया है :

(१) गुरुवंदन के प्रकार (२) वंदन करने का कारण (३) वंदन कैसे करना ? (४) वंदन किसको करना, किसको न करना। (५) वंदन कब करना। (६) वंदन कितनी बार करना। (७) वंदन कौन कर सकता है। (८) वंदन कितने आवश्यक से शुद्ध होता है। (९) वंदन कितने दोष रहित होता है। (१०) गुरु की ३३ आशातना का वर्णन...

प्रश्न ३० : गुरु के स्वरुप को दिखानेवाले सूत्र एवं अर्थ संक्षेप में लिखें।

उत्तर ३० : गुरु का स्वरुप 'पंचिदिय सूत्र' में समझाया है।

गुरु के ३६ गुण निम्नलिखित है :

पांच इन्द्रियों को काबू में रखनेवाले है।	५ गुण
ब्रह्मचर्य की नववाड पालनेवाले हैं।	९ गुण
क्रोध, मान, माया, लोभ, चार कषाय से मुक्त	४ गुण

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

पांच महाव्रत पालनेवाले हैं।	५ गुण
पांच प्रकार के आचार को पालने में समर्थ हैं।	५ गुण
पांच समिति पालनेवाले हैं।	५ गुण
तीन गुप्ति वाले हैं।	३ गुण
	कुल - ३६ गुण

७. प्रतिक्रमण

प्रश्न ३१ : प्रतिक्रमण का अर्थ बताइयें।

उत्तर ३१ : पापों से पीछे हटना उसे प्रतिक्रमण कहते है।

प्रश्न ३२ : प्रतिक्रमण कितने होते है ?

उत्तर ३२ : प्रतिक्रमण **पाँच** है :

(१) राइप्रतिक्रमण सुबह में होता है।

(२) देवसि प्रतिक्रमण शाम को होता है।

(३) पक्खी प्रतिक्रमण हरचउदश के दिन होता है।

(४) चोमासी प्रतिक्रमण कार्तिक सुद-१४, फागण सुद-१४ और अषाढ सुद-१४ को होता है।

(५) संवत्सरी प्रतिक्रमण भादरवा सुद-४ के दिन होता है।

प्रश्न ३३ : प्रतिक्रमण किसका होता है ? सम्यक्त्व के साथ व्रतो के एवं पंचाचार के श्रावक के कितने अतिचार होते है ? प्रत्येक की गिनती करायें ?

उत्तर ३३ : बारह व्रतधारी श्रावक को अपने लिए हुए व्रत में जो गलती हो जाती है, उसे अतिचार कहते है। अतिचार की शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण होता है। सम्यक्त्व के साथ व्रतों के एवं पंचाचार के श्रावक के अतिचार कुल १२४ है।

प्रथम व्रत के पांच अतिचार :

(१) पशुओं को मजबूत बंधन से बांधना। (२) चाबुकादि से क्रुरता से मारना। (३) चमड़ी काटना। (४) अधिक भार डालना। (५) अन्न-पानी समय पर नहिं देना।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

दूसरे व्रत के पांच अतिचार :

(१) गलत राय देना। (२) स्त्री-पुरुष की गुप्त बात के विषय में जुठा इल्जाम लगाना। (३) जुठा लेख लिखना। (४) कोई व्यक्ति ने दिया धन वापस नहीं देना। (५) चुगली करना एवं गुप्त बात दूसरे को कहना।

तीसरे व्रत के पांच अतिचार :

(१) चोर को सहायता करना। (२)चोरी का माल लेना। (३) राजा की कानुनी व्यवस्था का पालन नहीं करना . (४) ज्यादा लेना कम देना। (५) माल में मिलावट करना।

चौथे व्रत के पांच अतिचार :

(१) दुसरों के लड़के-लडकी का विवाह करवाना। (२) कोई व्यक्ति ने वेश्या को कुछ समय के लिए किराये से रखा है उस वेश्या का सेवन करना। (३) जिसका कोई मालिक नहीं हो ऐसी स्त्री का सेवन करना। (४) रतिक्रिया को छोड़ कर काम क्रीड़ा करना। (५) अत्यंत काम की अभिलाषा।

पंचम व्रत के पांच अतिचार : निम्नलिखित बातों में प्रमाण का अतिक्रम :

(१) जमीन मकानादि (२) चांदी-सोनादि (३) धन-पशु-धान्य (४) दास-दासी (५) बर्तन इत्यादि।

छठ्ठा व्रत दिग्परिमाण, गुणव्रत के पांच अतिचार :

(१) उपर (२) नीचे (३) तिरछा जाने के लिए जो नियम का परिमाण कीया था उससे ज्यादा दूर जाना। (४) एक दिशा का परिमाण कम करना दूसरों को बढ़ाना। (५) व्रत का परिमाण भूल जाना।

सातवां उपभोग, परिभोग परिमाण गुणव्रत के पांच अतिचार :

निम्नलिखित पांच चीजों का भक्षण करना :

(१) सचित्त (२) सचित्त बीजादि संबंधवाला पक्का फलादि। (३) अन्य सचित्त के साथमिश्रित अचित्त। (४) शराब, मांस, शहद (५)

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

कच्चे पक्के रहने से भोजन का कुछ अंश सचित्त कुछ अंश अचित्त और पंद्रह कर्मादान के अतिचार ।

❀ **१५ कर्मादान :** ५ कर्म, ५ वाणिज्य, ५ सामान्य :

(१) **अंगार कर्म :** लकड़ी के कोयले बनाना । चुना, इंट, गेरु आदि का व्यापार ।

(२) **वन कर्म :** जंगल,बगीचा बनाना, फल-फुल-सब्जी आदि का व्यापार ।

(३) **शकट कर्म :** बेलगाडी, घोडागाडी, मोटर, जहाज, विमान।

(४) **भाटक कर्म :** किराये पर वाहन चलाने का कार्य ।

(५) **स्फोटक कर्म :** तलाब-कूएं आदि खोदना, सुरंग फोडना।

❀ **पांच वाणिज्य :**

(१) **दंत वाणिज्य :** हाथी का दांत कटवाना, बेचना, चमडी, हड्डी, शिंग आदि व्यापार ।

(२) **लक्ष वाणिज्य :** लाख पेड़ से निकालना, लाख बेचना, गुंद, साबुन, रंग आदि व्यापार ।

(३) **रस वाणिज्य :** घी, तेल, शहद, मांस आदि बेचना ।

(४) **केश वाणिज्य :** चमरी गाय, ऊंट, बकरी, भेड़ आदि के बाल का व्यापार करना ।

(५) **विष वाणिज्य :** सर्प, बिच्छु आदि के विष का व्यापार करना। बंदुक, तलवार, भाला, तीर आदि का व्यापार करना ।

❀ **पांच सामान्य :**

(१) **यन्त्र पीलण कर्म :** तील से यन्त्र द्वारा तेल निकालने की क्रिया करना या करवाना । घंटी, मील आदि का व्यापार ।

(२) **निर्लांछन कर्म :** बैलादि पसु की खसी करवाना अर्थात् नपुंसक बनाना ।

(३) **दवदान कर्म :** जंगल जलाना, खेत में आग जलाना ।

(४) **जल शोषण कर्म :** कूए, तालाब सुकाना ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(५) **असती पोषण कर्म :** कुलटा अथवा व्यभिचारिणी स्त्रीयां तथा हिंसक पशुओं के पोषण का कार्य करना अर्थात् वेश्या गृह चलाना। कुत्ता, तोता, वेश्या आदि का पोषण करना।

❀ आठवें अनर्थ दंड विरमण गुणव्रत के पांच अतिचार :

(१) काम राग से असभ्य वचन का प्रयोग या हास्य का प्रयोग।

(२) नाटक करनेवाले व्यक्ति की तरह अंगोपांग की कुचेष्टा के साथ राग युक्त वचन या हास्य का प्रयोग।

(३) बिना कारण अधिक बोलना।

(४) फायदा नहिं होता है फिर भी जीव का घात करें ऐसा मुसल घंटी आदि शस्त्र दूसरों को देना।

(५) आवश्यक स्नानादि के अलावा निरर्थक अधिक प्रवृत्ति करना।

❀ नवमे सामायिक शिक्षाव्रत के पांच अतिचार :

(१) मन की अशुभ प्रवृत्ति। (२) वचन की अशुभ प्रवृत्ति (३) काया की अशुभ प्रवृत्ति (४) सामायिक के विषय में अनुपयोग, अनुत्साह, नियमित रुप से नहीं करना। (५) सामायिक किया या नहीं इत्यादि विषय में विस्मरण।

❀ दशवें देशावगासिक शिक्षाव्रत के पांच अतिचार :

(१) मर्यादित क्षेत्र से बाहर कुछ मंगाना। (२) मर्यादित क्षेत्रके बाहर नौकरादि को कोई कार्य के लिए भेजना या मर्यादित क्षेत्र के बाहर रहे हुए को खुद का अस्तित्व बताना या नजदीक बुलाना। (३) ऊंची श्वास लेना या आवाज करना। (४) स्व का शरीर दिखाना। (५) कंकर डालना।

❀ ग्यारवें पौषध शिक्षाव्रत के पांच अतिचार :

(१) बिना देखे या बिना प्रमार्जित किए शरीर का मलमूत्रादि डालना। (२) बिना देखे बिना प्रमार्जित किए वस्तु लेना या रखना। (३) बिना देखे या बिना प्रमार्जित किए संथारा करना। (४) पौषध के विषय में उत्साह नहीं रखना, नियत समय में नहीं लेना। (५) पौषध लिया या नहीं इत्यादि भूल जाना।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

❀ **बारहवें (१२) अतिथि संविभाग शिक्षाव्रत के पांच अतिचार :**

(१) साधु को नहीं देने की बुद्धि से सुझता आहार दूसरीसचित्त वस्तु पर रखना। (२) आहार को सचित्त से ढंकना। (३) स्व की चीज को पराया कहना। (४) दूसरे दानवीर की ईर्ष्या करना। (५) साधु की भिक्षा का समय न हो तब निमंत्रण करना।

❀ **संलेखना के पांच अतिचार :**

(१) अधिक जीवन की अभिलाषा। (२) मरण की अभिलाषा। (३) मित्रादि के उपर स्नेह। (४) पौद्गलिक सुख की स्मृति। (५) चक्रवर्ती आदि बनने का नियाणा करना।

❀ **ज्ञानाचार के आठ अतिचार :**

(१) काल में नहीं पढ़ना अकाल में पढ़ना। (२) विनय किए बिना पढ़ना (३) बहुमान से नहीं पढ़ना। (४) उपधान किए बिना पढ़ना। (५) विद्या गुरु को छुपाना। (६) सूत्र का अशुद्ध उच्चारण करना (७) सूत्र के अर्थ गलत करना। (८) सूत्र और अर्थ गलत करना।

❀ **दर्शनाचार के आठ अतिचार :**

(१) जिन वचन में शंका करना। (२) जिन वचन से अन्य मत की इच्छा करना। (३) धर्म शास्त्र में बताई हुई धर्म क्रिया के फल का संदेह अथवा साधु-साध्वी के आचार और व्यवहार के विषय में दुर्गंछा करना। (४) सत्य और असत्य का विवेक नहीं रखना अर्थात् मूढ दृष्टि वाले बनना। (५) धर्म का आचरण करनेवालों की सराहना नहीं करना। (६) धर्म मार्ग से विचलित होनेवालों को स्थिर नहीं करना। (७) साधर्मिक के प्रति वात्सल्य भाव नहीं रखना। (८) शक्ति होते हुए भी सम्यग्दर्शन के आचार रुप देवगुरु की भक्ति एवं विनय के कोई भी नियम का उल्लंघन शासन की अपभ्राजना हो इस तरह किया।

❀ **चारित्राचार के आठ अतिचार :**

पांच समिति : (१) ईर्या समिति (२) भाषा समिति (३) एषणा समिति (४) आदानभंड मत्त निकखेवणा समिति (५) पारिष्ठापनिका समिति।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

और **तीन गुप्ति :** (१) मन गुप्ति (२) वचन गुप्ति (३) काय गुप्ति। यह पांच समिति और तीन गुप्ति का पालन अच्छि तरह से नहिं करना।

❀ **तपाचार के बारह अतिचार :**

छह बाह्य और छह अभ्यंतर तप शक्ति होने पर भी नहीं करना।

❀ **वीर्याचार के तीन अतिचार :**

मन-वचन-काया की शक्ति को छिपाना या प्रमाद करना अथवा दर्शन-ज्ञान-चारित्र और तप के विषय में :

(१) बल और वीर्य के अनुसार पराक्रम नहिं करना। (२) उपरोक्त चार आचारके पालन में उपयोग नहिं रखना (३) शक्ति को छिपाना या अतिक्रमण करना।

❀ **सम्यक्त्व के पांच अतिचार :**

(१) **शंका :** जिनेश्वर भगवंत ने कहे हुए वस्तु में संदेह। (२) **कांक्षा :** अन्य मत की अभिलाषा। (३) **विचिकित्सा :** धर्म क्रिया में फल का संदेह। (४) **प्रशंसा :** कुगुरु पांखडी या मिथ्यामति की स्तुति। (५) **संस्तव :** मिथ्यात्वी का परिचय।

बार व्रत के :

५+५+५+५+५+५+२०+५+५+५+५+५	= ७५
पंचाचार के - ८ + ८ + ८ + १२ + ३	= ३९
सम्यक्त्व के ५ + संलेखना के ५	= १०
कुल -	= १२४

अतिचार - ये अतिचारों की शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण किया जाता है।

प्रश्न ३४ : प्रतिक्रमण से क्या क्या फायदे होते हैं ?

उत्तर ३४ : प्रतिक्रमण के फायदे निम्नलिखित है :

(१) प्रतिक्रमण से पाप का नाश होता है।

(२) सूत्र के अर्थ की विचारणा होती ही।

(३) आत्मगुणों का विकास होता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(४) भगवान के गुणों की स्तुति होती है।

(५) भगवान के गुण हमारी आत्मा में भी है उसका स्मरण और उस गुणों को प्रगट करने का भाव पैदा होता है।

(६) प्रतिक्रमण में गुरुवंदन आता है जिससे नम्रता एवं विनय गुण का विकास होता है।

(७) प्रतिक्रमण आवश्यक मतलब वंदितु सूत्र। यह छ आवश्यक में चौथा आवश्यक है। वंदितु सूत्र में श्रावक के बारह व्रत में जो अतिचार लगा है उसका स्मरण करके मिच्छा मि दुक्कडम् दिया जाता है।

(८) प्रतिक्रमण में पच्चक्खाण आता है इससे खाने-पीने का त्याग हो जाता है।

(९) प्रतिक्रमण में काउस्सग्ग आता है जो ध्यान का ही एक प्रकार है।

(१०) जितने समय तक हम सामायिक करते है उतने समय तक हमारा पाप व्यापार रुक जाता है।

"मिच्छा मि दुक्कडं" देना वह भी प्रतिक्रमण है। शास्त्रों में अपने पापो के मिच्छा मि दुक्कडं करते करते अनेक आत्मा ने केवलज्ञान पाया ऐसा उल्लेख है। अतः सत्य भाव से प्रतिक्रमण से जिन पाप क्रिया से कर्म लगे थे वे भी नष्ट हो जाते है। साथ में पूर्व में कीए हुए भी अन्य पाप क्रियाओं से लगे कर्म भी नष्ट हो जाते हैं।

प्रश्न ३५ : क्या शुद्ध भाव से किये हुए प्रतिक्रमण से सर्व पापों का नाश हो शकता है ?

उत्तर ३५ : शुद्ध भाव से प्रतिक्रमण करने से सर्व पापों का नाश होता है। हम जो राइय या देवसी प्रतिक्रमण करते है वह बड़ा प्रतिक्रमण है। लेकिन साधु महाराज साहेब और पौषध में रहे हुए श्रावक को लघु प्रतिक्रमण सूत्र इरियावहिया बार-बार बोलना पड़ता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

महा–मुनि अइमुत्ताजी ने 'इरियावहिया' लघु प्रतिक्रमण सूत्र बोलते बोलते जगत के सभी जीवों को मिच्छा मि दुक्कडम् देकर अपने सभी कर्मों का नाश कर दिया और केवलज्ञान मिलाया था।

हम अगर शुद्ध भाव से प्रतिक्रमण करते है तो हमारे सभी पापों का नाश प्रतिक्रमण से हो सकता है।

८. कायोत्सर्ग

प्रश्न ३६ : काया और आत्मा में क्या फर्क है ?

उत्तर ३६ : काया और आत्मा में बहुत बड़ा फर्क है। काया अजीव है, अचेतन है, वह ज्ञान नहीं मीला सकती है। आत्मा चेतन है वह ज्ञान मीला सकती है। काया को हम आँख से देख सकते हैं। आत्मा को हम आँख से नहीं देख सकते। काया रुप, रस, गंध, स्पर्शवाली है। आत्मा में रुप, रस, गंध, स्पर्श नहीं है। काया मोक्ष में जाने का साधन है, जब कि आत्मा मोक्ष मिलाने की क्रिया का कर्ता है।

प्रश्न ३७ : काया और आत्मा का कैसा संबंध है ? आत्मा का प्रमाण कितना है ?

उत्तर ३७ : काया और आत्मा का संबंध पानी और दूध जैसा है। जब हम दूध में पानी डालते है तब दूध के सभी बुंद के साथ पानी के बुंद मिल जाते है। मिल जाने के बाद इतना दूध है और इतना पानी है ऐसा भेद नहीं रहता। उसी तरह से काया के प्रत्येक प्रदेश में आत्मा के प्रदेश फैल गए है एवं आत्मा और काया का प्रमाण समान ही हो जाता है। हाथी की काया में अगर आत्मा रहेंगी तो आत्मा हाथी जितनी है और चींटी के शरीर में यदि आत्मा रहेंगी तो चींटी जितनी है। जैसे एक दीपक को रात के अंधेरे में हम एक कमरे में लाते है तब दीपक का प्रकाश पूरे कमरे में फैल जाता है। लेकिन अगर हम दीपक के उपर एक बरतन उल्टा रख कर दीपक को ढ़ंक देते है तब दीपक का प्रकाश उस बर्तन में ही सीमित हो जाता है। आत्मा भी दीपक के प्रकाश जैसी है। चींटी के शरीर में जब आत्मा आती है तब वह

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

अपने प्रदेश को चींटी के शरीर के मुताबिक संकुचित कर देती है। जब चींटी मर कर हाथी बनता है तब आत्मा अपने प्रदेश को हाथी के बड़े शरीर में फैला देती है। आत्मा बड़ी भी नहीं है छोटी भी नहीं है, लेकिन आत्मा काया के प्रमाण समान हो जाती है।

प्रश्न ३८ : काया में रही हुई आत्मा स्थिर क्यों नहीं होती है ?

उत्तर ३८ : काया में रही हुई आत्मा बहुत चंचल है। पल पल में उसमें कंपन होता है। वह जरा भी स्थिर नहीं हैं, क्योंकि काया हीलती रहती है। श्वास चलता है, धड़कन हमेंशा होती रहती है। जीभ के वचन का प्रयोग भी बार-बार होता है। मन से विचार तो हमेंशा चालु ही रहता है। यह मन, वचन और काया की क्रिया चालु रहने के कारण जीव के प्रदेश चंचल है। यह जीव की चंचलता का कारण कर्म है। जब जीव १४ वे गुण स्थानक को प्राप्त करता है और मन के विचार को, वाणी को और काया को रोक लेता है तब आत्मा एकदम स्थिर हो जाती है। उनके सभी कर्म नाश हो जाते है और आत्मा मोक्ष में चली जाती है।

प्रश्न ३९ : काया और आत्मा का भेद समझने के लिए कायोत्सर्ग का क्या महत्त्व है ?

उत्तर ३९ : कायोत्सर्ग करने से मन, वचन काया स्थिर होती है। स्थिरता होने से काया शिथिल बनती है, जैसे खूंटी पर रहा हुआ कमीज वो जैसे निराधार हो वैसा अनुभव होता है वैसा अपना शरीर निराधार-भिन्न है, वैसी अनुभूति होती है। काउस्सग्ग नहीं करते तब काया को आत्मा का आधार मिल गया हो वैसा लगता है, जैसे पहना हुआ कमीज...

इस तरह काया और कमीज अलग है, यह हम समज सकते है, उसी तरह काया और आत्मा अलग है। ऐसा भेद-ज्ञान का महामुनि गजसुकुमाल ने कायोत्सर्ग के माध्यम से साक्षात्कार किया था।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

गजसुकुमाल महामुनि चारित्र अंगीकार करके स्मशान में कायोत्सर्ग करके खडे थे । तब उनके संसारी ससुरजी आए उन्होंने देखा, मेरी लड़की के साथ विवाह किया और आज गजसुकुमालजी साधु हो गए । उनको बहुत गुस्सा आया । आजु-बाजु में मिट्टी पड़ी थी वह उनके शरीर पर डाली और शिर की चारों और गोल दिवाल की तरह किनारी बनाई। बाद उसमें जलते अंगारे डाले । गजसुकुमाल की चमडी फट-फट फूटने लगी, शीर की हड्डीयाँ तूटने लगी । बहुत दर्द होने लगा लेकिन गजसुकुमालजी ध्यान में सोचते थे। 'ससुरजी अपने जमाई (कँवरशा) को सादि पघडी पहनाते है वह ८४ लाख योनि में घुमाने का कारण बनता है । जब मेरे ससुरजी ने ऐसी पघडी पहनाई है जो मुझे मोक्ष देगी ।' शिर पर डाले हुए अंगारे का दर्द बरदास्त करते हुए उन्होंने सोचा, जिनेश्वर परमात्मा ने फरमाया है - जीव भिन्न है, शरीर भिन्न है, जीव शाश्वत है, शरीर अशाश्वत है। आज तक शरीर को सुख देने का मैंने बहुत भवो तक प्रयत्न किया, अब आत्मा को अनंत सुख मिले उसके लिए मोक्ष में जाने का प्रयत्न करना है । शरीर को दुःख हो रहा है वह मेरी कर्म निर्जरा का साधन है, अगर थोड़ा भी हिल जाएगा और एक अंगारा नीचे गिरेगा तो चींटी आदि जीव मर जाएँगे । भारी वेदना में भी गजसुकुमाल मुनिने शिर नहीं हिलाया । मन को ध्यान में - वाणी को मौन में - काया को एक स्थान में - स्थिर किया और आत्मा और शरीर भिन्न है - ऐसा भेद-ज्ञान प्राप्त करते करते **केवलज्ञान** मिला कर मोक्ष में गये ।

प्रश्न ४० : कायोत्सर्ग में होनेवाले १९ दोषों का वर्णन किस में दिखाया है ?

उत्तर ४० : कायोत्सर्ग में होनेवाले १९ दोषों का वर्णन **चैत्यवंदन भाष्य** में दिखाया है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(१) **घोटक :** घोडे के जैसा एक पैर ऊंचा या टेढा (वक्र) रखें।

(२) **लता :** लता (वेल) के जैसे शरीर हिलाना ।

(३) **स्तंभादि :** स्तंभ (खंभा) या दीवार को टेका देना ।

(४) **माल :** ऊपर के छज्जे से सिर टिकाना ।

(५) **उध्दी :** शकट (बैलगाडी) के घूंसरीके जैसे दोनों पेर इकट्ठा करके काउस्सग्ग करना ।

(६) **निगड़ :** जंजीर में बंधे हुए पाँव की तरह पैर को फैलाना।

(७) **शबरी :** भीलडी की तरह गुप्त अंग के उपर दो हाथ रखकर खड़ा रहना ।

(८) **खलिण :** घोडे की लगाम की तरह चरवला पकड़ना ।

(९) **वधू :** बहु की तरह शिर झूकाकर कायोत्सर्ग करना ।

(१०) **लंबुत्तर :** धोती नाभी से चार अंगुली नीचे और घुटने से चार अंगुली उपर नहीं रखना ।

(११) **स्तन :** स्त्री की तरह छाती के उपर कपड़ा ढ़ककर काउस्सग्ग करना ।

(१२) **संयती :** साध्वीजी की तरह पुरा शरीर ढ़ककर कायोत्सर्ग करना ।

(१३) **भ्रमितांगुलि :** गिनती करने के लिए अंगुली के पोरे पर अंगुली घुमाना ।

(१४) **वायस :** कौए की तरह इधर-उधर देखना ।

(१५) **कपित्थ :** कपड़ा मैला हो जायेगा इसके डर से अथवा भँवरे आदि के डर से धोती की पाटली कोठे के फल की तरह गोल गोल करके दो पाँव के बीच में दबाना ।

(१६) **शिरकंप :** शिर हिलाना ।

(१७) **मूक :** गुंगे की तरह हुं हुं करना ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(१८) **वारुणी :** शराब जब पकता है तब उसमें से बुद बुद की आवाज आती है उस तरह से आवाज करते हुए कायोत्सर्ग करना।

(१९) **प्रेक्षण :** बंदर की तरह उपर नीचे देखना।

काउस्सग्ग के यह १९ दोष साधु भगवंत के और श्रावकों के समझना। लंबुत्तर दोष, स्तन दोष और संयती दोष यह तीन दोष साध्वी को नहि लगता है क्योंकि साध्वीजी का संपूर्ण अंग ढ़का हुआ होना चाहिए। अतः साध्वीजी को काउस्सग्ग के १६ दोष होते है। श्राविका को लंबुत्तर दोष-स्तन दोष-संयति दोष और वधू दोष नहीं लगता है। श्राविका को अपनी दृष्टि नीचे रखना चाहिए। क्योंकि लज्जा स्त्री का भूषण है।

९. पच्चक्खाण-प्रत्याख्यान

प्रश्न ४१ : नव तत्त्वों की व्याख्या क्या है ?

उत्तर ४१ : (१) **जीव :** जो ज्ञानवाला है, उसे जीव कहते है। (२) **अजीव :** जिस में ज्ञान नहीं होता है उसे अजीव कहते है। (३) **पुण्य :** जीव को जिससे सुख का अनुभव होता है वह पुण्य है। (४) **पाप :** जीव को जिससे दुःख का अनुभव होता है वह पाप है। (५) **आश्रव :** कर्म का आना वह आश्रव है। (६) **संवर :** कर्म को रोकना वह संवर है। (७) **निर्जरा :** आत्मा से कर्म का विभाग, आत्मा से कर्म का आंशिक क्षय। (८) **बंध :** आत्मा और कर्म का संयोग बंध है। (९) **मोक्ष :** सभी कर्मो का जीव से अलग होना अर्थात् सर्व कर्मो का क्षय मोक्ष है।

प्रश्न ४२ : पच्चक्खाण कौन-से तत्त्व में आता है ?

उत्तर ४२ : पच्चक्खाण संवर तत्त्व में आता है।

प्रश्न ४३ : तप के पच्चक्खाण होते है तो तप कितने प्रकार के है ?

उत्तर ४३ : तप (१) बाह्य (२) अभ्यंतर दो प्रकार के है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(१) **बाह्य तप** के छह प्रकार : (१) **अनशन :** आहार का त्याग, उपवास। (२) **ऊनोदरिका :** कम खाना। (३) **वृत्ति संक्षेप :** कम द्रव्य खाना। (४) **रस त्याग :** दूध, दहीं, घी, तेल, गुड, कडा विगई छह में से कोई भी एक विगई का त्याग करना। (५) **कायकलेश :** लोच कराना, परीषह, उपसर्गादि सहना। (६) **संलीनता :** पद्मासन, वज्रासन, सुखासन आदि कोई भी एक ही आसन में लंबे समय तक बैठना।

(२) **अभ्यंतर तप** के छह प्रकार : (१) **प्रायश्चित्त :** किए हुए पाप की आलोचना करना। (२) **विनय :** गुरु को आते देख खड़ा होना, गुरु को अनुकूल बनना। (३) **वैयावृत्य :** गुरु आदि की सेवा, शुश्रूषा करना। (४) **स्वाध्याय :** सूत्र, अर्थ पढ़ना, पढ़ाना, प्रश्न पूछना, पुनरावर्तन करना, चिंतन-मनन करना, धर्मकथा करना। (५) **ध्यान :** मन को एक ही विषय पर एकाग्र करना। (६) **कायोत्सर्ग :** काउस्सग्ग करना।

प्रश्न ४४ : पच्चक्खाण, संकल्प, अभिग्रह की आवश्यकता एवं सार्थकता क्या है ?

उत्तर ४४ : पच्चक्खाण का बहुत बड़ा महत्त्व है। तीन जगत के उपकार की भावना "सवि जीव करुं शासन रसी" की भावना करनेवाले तीर्थंकर परमात्मा को मनः पर्यवज्ञान तब तक नहीं होता है जब तक तारक प्रभु सर्व सावद्य व्यापार का आजीवन पच्चक्खाण कर के दीक्षा नहीं लेते है।

लोक व्यवहार में भी मनुष्य वही चीज का उपयोग करता है जिसका काबू उनके पास हो। किसान खेती के लिए बैल द्वारा हल चलाता है लेकिन बेल के नाक में, मुँह में रस्सी बाँधता है। आदमी शादी करने जाता है तब घोडे के उपर बैठता है लेकिन घोडे को लगाम से बाँधता है। पर्युषण पर्व की तपस्या के बाद रथयात्रा निकालते है उसमें कभी हाथी को लाते है, लेकिन हाथी भी वैसा

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

लाते है कि जिसके उपर महावत के हाथ में अंकुश हो, हाथी उनके वश में हो । आदमी साइकिल पर या मोटर में बैठता है लेकिन साइकिल और मोटर भी ब्रेकवाली होती है । जब चाहे तब हम चला सके, चब चाहे तब रोक सके। ठीक इसी तरह से अगर हमने पच्चक्खाण किसी भी तरह का नहीं किया तो हमारा आध्यात्मिक दृष्टि से अकस्मात् हो जायेगा। व्रत नियम पच्चक्खाण एक जीवन की व्यवस्था है, बंधन नहीं है।

दुकानदार किसी को भी माल देता है, बेचता है और पैसा लेता है तब हस्ताक्षर करके रसीद देता है और आदमी भी किसीसे पैसा लेता है तो हस्ताक्षर करके रसीद देता है।

हस्ताक्षर करना ये लेखित प्रतिज्ञा है और पच्चक्खाण यह मौखिक प्रतिज्ञा है। दोनों में कोई अंतर नहीं है।

कभी कभी गरीब आदमी भी भगवान की यात्रा करने तीर्थस्थान में जाता है और दिल में भगवान का मंदिर बनाने की शुभ भावना प्रगट हो जाती है । यह भावना जब तीव्रता से पैदा होती है तब वह भावना संकल्प बन जाती है । शुभ भावना के साथ संकल्प करनेवाले कोई गरीब आदमी को एक बहन ने पूछा : 'भगवान का मंदिर इतना बारीकाई से देखते हो तो क्या आपको मंदिर बनाना है?' गरीब आदमी ने कपडे में शकुन की गांठ लगाई और कहा; 'हाँ बहनजी, तुम्हारे मुँह में गुड-शक्कर, मैं जरुर मंदिर बनाऊंगा।' कुछ साल के बाद गरीब आदमी का भाग्य खुल गया। बहुत धन कमाया और भगवान का मंदिर बनाया । प्रतिष्ठा के दिन बहन को भी बुलाया। 'भाई के संकल्प से बहन बहोत खुश हुई। अभिग्रह की महिमा पर्युषण पर्व के प्रवचन में आती है । हमें पता है कि प्रभु महावीर स्वामीजी परमात्मा ने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव से अभिग्रह किया था। मैं गोचरी तभी लुंगा जब द्रव्य से-सुपडे के कोने में रखे हुए उडद

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

बहेरायेंगी, क्षेत्र से एक पाँव घर के अंदर और एक पाँव घर के बहार, बहराने वाले का होगा । काल से जब सब भिक्षा लेनेवाले ने भिक्षा ले ली होगी, भिक्षा का समय बीत चूका होगा, भाव से कोई राजकुमारी दासी बनी होगी, मस्तक में मुंडन किया हुआ हो, पाँव में बेडी हो, आँखो में अश्रु की धारा हो, अठ्ठम का तप हो ऐसी सती स्त्री आहार बहरायेगी तब मैं गोचरी लुंगा ।

प्रभु महावीर परमात्मा को पांच मास, पचीस दिन के उपवास हुए और प्रभु का महान अभिग्रह चंदनबाला ने पूर्ण किया ।

आज भी तपस्वी लोग मासक्षमण, अट्ठाई आदि तप करके अभिग्रह करते है कि गुरु भगवंत गोचरी के लिए आए और गुरु भगवंत को बहराने के बाद ही मैं पारणा करुँगा ।

शास्त्र का विधान है : अभिग्रह चाहे कितना भी कठीन हो छः मास में जरुर पूर्ण होता है ।

पच्चक्खाण-संकल्प-अभिग्रह ये सब पक्के नियम ग्रहण के ही पर्याय शब्द है। पर हमारे यहां पच्चक्खाण शब्द अधिक प्रसिद्ध है । प्रायः जब कोई भी प्रतिज्ञा हम गुरु के मुखसे संकल्प रुप में ग्रहण करते है तब पच्चक्खाण कहा जाता है । हमे हमारे प्रत्येक धर्म संकल्प एवं अभिग्रह हमारे धर्मगुरुओ से ग्रहण करना चाहिए। यह प्रतिज्ञा पाप व्यापार के त्याग के संकल्प रुप अर्थात् संवर रुप होनी चाहिए ।

कुछ लोग ऐसा प्रश्न पूछते है कि, हम उपवास करेंगे । दिन और रात में खाना नहीं खायेंगे किन्तु पच्चक्खाण नहीं लेंगे तो उसमें क्या गलती है ? यह शंका बराबर नहीं है, क्योंकि शास्त्र के हिसाब से यदि आप पच्चक्खाण नहीं करते है तो आपको अविरति के कारण कर्मबंध चालु है । पच्चक्खाण नहीं करने से लाभ नहीं मिलता है । जैसे एक भाई ने कोई दुकानदार से कहा : 'मेरा एक लाख रुपिया आपके पास रखो । मैं तीर्थयात्रा

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

करके वापस आऊँगा तब मुझे दे देना।' छह महिने के बाद वह आदमी तीर्थयात्रा करके आया। उसने दुकानदार से कहा मुझे मेरा धन वापस दो। दुकानदार ने एक लाख रुपये दे दिए तब वह आदमी कहता है, 'मुझे व्याज दो।' दुकानदार ने कहा : 'व्याज हम नहीं देंगे क्योंकि आपने मुझे पैसे व्याज से नहीं दीए थे केवल रखने के लिए दिए थे।' योगशास्त्र में पच्चक्खाण का महत्त्व बताया है कि 'न वृद्धि भोषितं विना। मतलब, 'यह पैसे छः महिने के लिए तुझे व्याज से देता हूँ ऐसा यदि हम नहीं कहते है तो वह पैसे की वृद्धि नहीं होती है; मतलब व्याज नहीं मिलता है।' उसी तरह से पच्चक्खाण लिए बिना उपवासादि तप करने से लाभ नहीं मिलता है। **अतः पच्चक्खाण की आवश्यकता है।**

प्रश्न ४५ : श्रावक को प्रतिदिन कम से कम क्या पच्चक्खाण करना चाहिए ?

उत्तर ४५ : श्रावक को प्रतिदिन कम से कम नवकारशी का और शाम को चउविहार का पच्चक्खाण करना चाहिए।

१०. पौषध

प्रश्न ४६ : श्रावक के कितने व्रत है ?

उत्तर ४६ : श्रावक के बार व्रत है।

प्रश्न ४७ : व्रतो के विभाग के नाम एवं प्रत्येक विभाग के व्रतो की संख्या लिखे।

उत्तर ४७ : श्रावक के १२ व्रत में तीन विभाग है : (१) अणुव्रत (२) गुणव्रत (३) शिक्षाव्रत

अणुव्रत पांच है : (१) स्थूल प्रणातिपात विरमण व्रत (२) स्थूल मृषावाद विरमण व्रत (३) स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत (४) स्थूल मैथुन विरमण व्रत (५) स्थूल परिग्रह विरमण व्रत।

गुणव्रत तीन : (१) दिक् परिमाण व्रत (२) भोगोपभोग विरमण व्रत (३) अनर्थदंड विरमण व्रत।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

शिक्षाव्रत चार है : (१) सामायिक (२) देशावगासिक (३) पौषध (४) अतिथिसंविभाग व्रत।

प्रश्न ४८ : 'पौषध' कितना वा व्रत है ?

उत्तर ४८ : पोषध ११ वा व्रत है।

प्रश्न ४९ : 'पोधष' या 'पूजा' इन दोनों में से कौन-सा व्रत महान है? क्यों ?

उत्तर ४९ : पोषध व्रत और पूजा यह दोनों में से पौषध व्रत महान है। चतुर्थ गुण स्थानकरुप सम्यक्त्व मिलाने के लिए ओर प्राप्त हुए समकित गुणस्थानक को निर्मल करने के लिए प्रभुपूजा साधन है। जब कि पौषधव्रत पाँचवा गुणस्थानक की स्पर्शना कराता है। पौषध में अहिंसा व्रत का पालन होता है।

प्रभु पूजा हम भावना से करते है कि प्रभुपूजा करते करते हम कब व्रतो का पालन और महाव्रतो का पालन करेंगे ?

प्रभु पूजा की आंशिक फल की प्राप्ति ही पौषध है।

'फल पौषध है... बीज पूजा है'

कोई व्यक्ति ने प्रतिदिन पूजा करने का नियम यदि लिया हो और वह पर्युषण में आठ दिन पौषध करता है तो प्रभु पूजा का नियम तूटता नहीं है, किन्तु वह छोटे नियम से बड़े नियम में आगे बढ़ा है और अगर वह व्यक्ति दीक्षा ले लेवे तो उसने सबसे बड़ा नियम पालन किया है।

प्रभु पूजा मोक्ष में जाने की चौथी सीडी है। और पौषध पाँचवी सीडी है और साधु धर्म छठ्ठी सीडी है। इसीलिए पूजा से पौषध व्रत बड़ा है। पौषध से भी साधु के महाव्रत बड़े है।

प्रश्न ५० : पौषध से क्या लाभ होता है ?

उत्तर ५० : सामायिक के फल से पौषध का फल ३० गुना है। ३२ दोष से रहित और पांच अतिचार से रहित शुद्ध सामायिक से ९२५९२५९२५

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

पल्योपमका देव आयुष्य का बंध होता है। आठ पहोर का पौषध करने से २७७७७७७७७०१/३ पल्योपम का देव आयु का बंध होता है।

यह फल सामान्य से बताया है। निश्चय से तो शुद्ध उपयोगपूर्वक सामायिक, पौषध करने से अनंतगुणा फल यावत् मोक्ष सुख की प्राप्ति होती है।

११. दान

प्रश्न ५१ : दान की व्याख्या क्या है ?

उत्तर ५१ : परोपकार की भावना से स्व वस्तु का त्याग करना यह दान है। इसी तरह 'तत्त्वार्थसूत्र' में 'अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गोदानम् (अध्याय-७/सूत्र-३३) में फरमाया है।'

प्रश्न ५२ : दान के कितने प्रकार है ?

उत्तर ५२ : **दान के पांच प्रकार है :** (१) **अभयदान :** कोई जीव को मारना नहीं। (२) **उचित दान** (३) **सुपात्रदान :** साधु-साध्वीजी म.सा. को आहार-पानी आदि बेहराना। (४) **अनुकंपादान :** गरीब, दुःखी, रोगी पर करुणा लाकर दान देना (५) **कीर्तिदान :** कीर्ति मिलाने के लिए दान करना।

शास्त्रकार भगवंतोने सात क्षेत्र में दान देने का फरमाया है। (१) जिनमंदिर (२) जिनप्रतिमा (३) जिनागम (४) साधु (५) साध्वी (६) श्रावक (७) श्राविका।

प्रश्न ५३ : दान से क्या क्या लाभ होते हैं ?

उत्तर ५३ : दान करनेवाला जीव और दान देनेवाला जीव दोनों को दान धर्म से लाभ होता है। जैसे अभय देनेवाले साधु भगवंत कोई जीव को मारते नहीं है। साधु भगवंत को अहिंसा पालने से सातावेदनीय, निरोगी शरीर, दीर्घ आयुष्य, शुभसंस्थान, अच्छा संघयण, अच्छा रुप और परंपरासे मोक्ष मिलता है। अभयदान को प्राप्त करनेवाले जीवको जीवनदान मिलता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उचित दान देनेवाले को औचित्य का पालन होता है। जैन धर्म की प्रभावना होती है।

सुपात्र दान देनेवाले को ज्ञान, दर्शन, चारित्र की अनुमोदना का लाभ मिलता है। सुपात्रदान ग्रहण करनेवाले मुनि को चारित्र की वृद्धि होती है।

अनुकंपादान देनेवाले का हृदय सुकोमल बनता है। आत्मगुणों की वृद्धि होती है। अनुकंपादान लेनेवाले को आहार-दवाई प्राप्ति से शरीर को शाता होती है।

कीर्तिदान से कीर्ति की प्राप्ति होती है। सात क्षेत्र में दान देने से दर्शन, ज्ञान, चारित्र की प्राप्ति होती है। देवद्रव्य की वृद्धि होती है। देवद्रव्य की वृद्धि से प्रभु के मंदिर की भव्यता बढ़ती है। जैन धर्म की अपूर्व शासन प्रभावना होती है। ज्ञान द्रव्य की वृद्धि से ४५ आगम की व्यवस्था सुचारु ढंग से चलती है। हमारे कुछ शास्त्र जीर्ण हो गये है कुछ के अक्षर लुप्त हो गये है। यह सभी शास्त्रों को फिर से छपवाना, संशोधन करना इत्यादि में ज्ञानद्रव्य की वृद्धि जरुरी है। साधु-साध्वीजी के क्षेत्र वृद्धि से वैयावच्च खाते की वृद्धि होती है। विहार में जहाँ श्रावक के घर नहीं है इत्यादि स्थानो पर आहार-पानी की तकलीफ होती है वहाँ वैयावच्च खाता से हम साधु-साध्वीजी म.सा. का लाभ ले सकते हैं। दवाई का लाभ ले सकते हैं। विहार में जो आदमी महाराज साहब के साथ में हो उसका पगार आदि भी दे सकते हैं।

श्रावक-श्राविका के खाते में धन की वृद्धि होती है उसका उपयोग साधर्मिक भक्ति में होता है।

प्रश्न ५४ : अयोग्य दान किसे कहते है ?

उत्तर ५४ : खाँडा, कटार, कुल्हाडी, कृषि, अग्नि, रथ, ऊखल, मुशल, चक्की इत्यादि हिंसक प्रवृत्तिवाली वस्तुओं का दान करना अयोग्य दान है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

यह दान से हिंसक प्रवृत्ति की अनुमोदना का पाप लगता है। शास्त्रों में कहा है पाप करना नही, कराना नहीं, करते हुए की अनुमोदना करना नहीं।

हमारे दान से यदि पाप प्रवृत्ति साक्षात् या परंपरा से बढ़ती है ऐसा दान देना पाप है। इसीलिए यह दान अयोग्य दान है।

प्रश्न ५५ : जीवदया दान एवं अनुकंपादान का शास्त्र में महत्त्व क्यों है ?

उत्तर ५५ : सात क्षेत्र में दान करना चाहिए लेकिन जब देश में अकाल है, लोगों को खाना नहीं मिलता है, पशुओं को घास नहीं मिलता है, नदी में पानी सुक जाता है। पानी भी नहीं मिलता है। (बाढ आ जाती है, बेघर बन जाते है, धंधा-रोजगार रहित हो जाते है) ऐसे समय में अनुकंपा दान ज्यादा देना यह विवेक है। ऐसे समय में अनुकंपा दान देने से परमात्मा के शासन की प्रभावना होती है, और औचित्य का पालन होता है।

१२. शील

प्रश्न ५६ : शील का अर्थ क्या है ?

उत्तर ५६ : श्री धर्मरत्न प्रकरण में कहा है कि शील का अर्थ सदाचार है।

प्रश्न ५७ : श्रावक के कितने शीलरुप व्रत है ?

उत्तर ५७ : श्रावक के चार गुण व्रत और तीन शिक्षाव्रत यह सात व्रत शीलव्रत है। यह सात व्रत इच्छापूर्वक ग्रहण किया जाता है और यह सात व्रत स्थूल अहिंसादि पांच व्रत का रक्षण करता है, तत्त्वार्थ सूत्र में भी कहा गया है कि दिक् परिमाणादि सात व्रत शील व्रत है।

प्रश्न ५८ : शीलांग रथ किसको कहते है ?

उत्तर ५८ : शील के अंगो से बना हुआ रथ उसको शिलांग रथ कहते है। शीलांग १८००० है जो अड्ढाइज्जेसु सूत्र में बताया है। क्षमा आदि १० यतिधर्म, यति को पृथ्वीकाय आदि की रक्षा करने की है। समारंभ नहीं करना इसलिए १० × पृथ्वीकायादि १० = १०० यहाँ

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

यतिधर्म युक्त रक्षा पाँच इन्द्रियों के जय करने से होती। ईसीलिए १०० × क्षोत्रेन्द्रियादि निग्रह ५ = ५०० अब ५०० × आहारादि ४ संज्ञा = २००० × ३ योग = ६००० × तीन करण = १८००० कुल १८०००

शीलांग रथ :

न करे ६०००	न करावे ६०००	न अनुमोदन करे ६०००
मनो योग २०००	वचन योग २०००	काय योग २०००

आहार संज्ञा ५००	भय संज्ञा ५००	मैथुन संज्ञा ५००	परिग्रह संज्ञा ५००

श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह १००	चक्षु निग्रह १००	घ्राणेन्द्रिय निग्रह १००	रसनेन्द्रिय निग्रह १००	स्पर्शेन्द्रिय निग्रह १००

पृथ्वी १०	अप १०	तेउ १०	वाउ १०	वन १०	बे.ई. १०	ते.ई. १०	च.इ. १०	पं.इ १०	अजीव १०
क्षमा १	मार्दव २	आर्जव ३	मुक्ति ४	तप ५	संयम ६	सत्य ७	शौच ८	अकिंचनत्व ९	ब्रह्मचर्य १०

क्षमा आदि १० प्रकार का यति धर्मवाला, पृथ्वीकायादि से अजीव तक का समारंभ, पांच इन्द्रियों का निग्रह करके आहारादि चार संज्ञा मन, वचन, काया से करे नहीं, कराये नहीं, करवानेवाले की अनुमोदना करे नहीं, इस तरह १८००० शीलांग रथ है।

१० × १० × ५ × ४ × ३ × ३ = १८०००

प्रश्न ५९ : सुविशुद्ध ब्रह्मचर्य पालन के लिए क्या जागृति रखनी चाहिए?

उत्तर ५९ : सुविशुद्ध ब्रह्मचर्य पालन के लिए ९ नियम हे। शास्त्र में उसे ब्रह्मचर्य की नववाड कहते है।

ब्रह्मचर्य की नव वाड निम्नलिखित है : (१) स्त्री, पशु और नपुंसक से रहित स्थान में रहे। (२) स्त्री संबंधी बाते न करें और

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

स्त्री के साथ राग से बात न करें। (३) स्त्री जिस आसन पर बैठी हो उस आसन पर दो घटिका (घड़ी) ४८ मिनिट तक न बैठे। (४) स्त्रियों के अंगोपांगों को आसक्तिपूर्वक न देखे। (५) दीवार की आड़ में रहकर स्त्री-पुरुष की कामक्रीडा देखना नहीं। (६) पूर्व काल में स्त्री के साथ जो क्रीडा की हो, उसका स्मरण न करें। (७) विकारोत्तेजक आहार पानी न ले। (८) प्रमाण से अधिक आहार न करें। पुरुष के आहार का प्रमाण ३२ कवल (ग्रास) है। स्त्री का आहार का प्रमाण २८ कवल है। (९) शरीर का श्रृंगार नहीं करे।

इसके अलावा वर्तमान काल में निम्नलिखित जागृति रखना: (१) बुरे मित्र के साथ मैत्री नहीं करना। (२) वासना-उत्तेजक साहित्य नहीं पढ़ना। (३) टी.वी., सिनेमा, नाटक नहीं देखना। (४) काम वासना जागृत करे ऐसी कहानी पढ़ना नहीं, सुनना नहीं, सुनाना नहीं। (५) जहाँ वेश्यादि का घर हो उस रास्ते से जाना नहीं (६) विकार पैदा करें ऐसा भोजन लेना नहीं, बैंगन आदि की सब्जी, शहद, मक्खन लेना नहीं।

प्रश्न ६० : ब्रह्मचर्य पालन नहीं करने के क्या दोष है तथा ब्रह्मचर्य पालन का क्या फायदा है विस्तार से समझाईए।

उत्तर ६० : ब्रह्मचर्य नहीं पालने के निम्नलिखित दोष है :

(१) दूसरे जन्म में नपुंसकपना प्राप्त होता है। इन्द्रियों में क्षति होती है तथा इन्द्रिय विकलता प्राप्त होती है।

(२) मूर्च्छा, बलक्षय, राजयक्ष्मा आदि रोग होते है।

(३) स्त्री की योनि में २ लाख से ९ लाख पंचेन्द्रिय जीव होते है। वे सब जीव रतिक्रिडा द्वारा मर जाते है।

(४) भोग भोगने से जो संतोष मिलाना चाहता है वह आग में घी डालकर आग को बुझाना चाहता है (याने वासना तृप्त नहीं होती है लेकिन बढ़ती जाती है)

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(५) भोग भोगनेवाली स्त्री के खुन से कृमि की उत्पत्ति होती है, जो स्त्री की योनि मार्गमें खुजली पैदा करती है। वे भी रतिक्रिडा द्वारा मर जाते हैं।

(६) कोई व्यक्ति तपस्वी हो, ज्ञानी हो, त्यागी हो, दानवीर हो लेकिन जब वह स्त्री को हृदय में स्थान देता है तब उनके सभी गुण आत्मा में से नीकल जाते हैं।

(७) भोग भोगनेवाला जब अपनी भोग वासना पत्नी से तृप्त नहीं होती है तब वह साधारण स्त्री के पास (वेश्या के पास) जाता है। मांस, शराब, जुआ, चोरी, शिकार, परस्त्री गमन आदि सब व्यसनों से युक्त भी हो शकता है।

(८) **इतिहास गवाही है कि दुनिया के तीन खंड जितनेवाले महाराजा रावणने सीता के साथ कामक्रीडा करने की इच्छा की और उनके पुरे कुल का नाश हो गया, मर कर वह नरक में गया।**

ब्रह्मचर्य पालने से निम्नलिखित फायदे है :

(१) शुद्ध आत्मा ही सिद्ध जीव है और चारित्र मोक्ष का साधन है। वह चारित्र का प्राण ब्रह्मचर्य है ऐसे ब्रह्मचर्य के पालन करनेवालें की पूजा; राजा, देव, इन्द्रादि भी करते है।

(२) दीर्घ आयुष्य, अच्छा संस्थान, तेजस्वी चहेरा, दृढ संघयण, महान वीर्य की प्राप्ति यह सब ब्रह्मचर्य पालने से मिलता है।

(३) राजाओं के राजा, महाराजा रावण जो ज्ञानवान, बड़ा रुपवान था। जिन का रुप कामदेव जैसा था फिर भी महासती सीता ने परपुरुष रावण का त्याग किया। (यह ब्रह्मचर्य पालन की भावना का सत्त्व है)।

(४) ब्रह्मचर्य पालन से इस लोक में मान, सन्मान, इज्जत की प्राप्ति होती है। परलोक में देवगति मिलती है, परंपरा से मोक्ष मिलता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(५) राणी अभया के राजमहल में ब्रह्मचारी सुदर्शन के शीयल व्रत की परीक्षा हुई लेकिन उस महापुरुष के अखंड शीयल व्रत के पालन के प्रभाव से शूली का सिंहासन बन गया।

(६) तीर्थंकरो का नाम तीन चोवीसी तक रहता है लेकिन महामुनि **स्थुलभद्र** जो कोशा वेश्या के वहाँ चातुर्मास रहे, छ विगई आहार किया। फिर भी कोशा के नृत्य से चलायमान नहीं हुए। इतना ही नहीं मन में भी एक बुरा विचार नहीं आया। ऐसे महा ब्रह्मचारी स्थुलभद्र मुनि का नाम **८४ चोबीसी तक** अमर रहेगा।

(७) शरीर निरोगी रहता है आँखे अविकारी रहती है, भूत, प्रेत उनके सामने नजर मिलाकर देख नहीं सकते है। इत्यादि इहलोक संबंधी तथा परलोक संबंधी अनेक लाभ ब्रह्मचर्य के पालन से प्राप्त होते है।

१३. तप

प्रश्न ६१ : तप की व्याख्या क्या है ?

उत्तर ६१ : जो कर्म को तपाता है और कर्म का नाश करता है उसे तप कहते है।

प्रश्न ६२ : तप के मुख्य दो भेदों में क्या अंतर है ?

उत्तर ६२ : तप के मुख्य दो भेद है : (१) बाह्य तप (२) अभ्यंतर तप।

(१) बाह्य तप में शारीरिक (सहन शक्ति) सहिष्णुता की मुख्यता है जब कि अभ्यंतर तप में आत्मा की विशुद्धि की मुख्यता है।

(२) बाह्य तप से शरीर का राग हम कम कर सकते है। और शरीर का राग कम करनेवाला ही बाह्य तप कर सकता है। जब की अभ्यंतर तप पूर्व में किए हुए पापों की आलोचनादि करके मोक्ष के प्रति राग बढ़ाता है, और संसार का राग घटाता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(३) अभ्यंतर तप के स्वाध्याय, काउस्सग्ग, ध्यान आदि में एकाग्रता की मुख्यता है। एकाग्रता से एक क्षण में कई कोटि जन्म के पाप भी नष्ट हो जाते हैं।

(४) बाह्यतप जैसी क्रियाए धर्म में प्रसिद्ध है जब कि विनयादि क्रियाओं को जैन धर्म में तप साधना का रुप दिया गया है। अतः विनयादि अभ्यंतर तप है और अनशनादि बाह्य तप है।

जो आत्मा बाह्य तप उपवासादि अनशन नहीं कर सकती है वह भी उनोदरी, रस त्याग, वृत्ति संक्षेप आदि कर सकते हैं लेकिन जो आदमी रोगी है और वह अनशन आदि नहीं कर सकता है, उनोदरी आदि भी नहीं कर सकता है वह भी गुरु का विनय, वैयावच्च, प्रायश्चित्त, काउस्सग्ग, स्वाध्याय, ध्यान यथाशक्ति कर सकता है। वह बाह्य तप और अभ्यंतर तप में अंतर है।

प्रश्न ६३ : तप का उत्कृष्ट स्वरुप क्या है ?

उत्तर ६३ : तप का उत्कृष्ट स्वरुप ध्यान है।

प्रश्न ६४ : सही अर्थ में तप के पूर्व में किस किस का पालन अनिवार्य है ?

उत्तर ६४ : तप के पूर्व संयम पालन अनिवार्य है क्योंकि अगर संसारी श्रावक तपस्या करता है तब उनकी आत्मा में कर्म आना चालु है और वह तप के द्वारा कर्म का नाश करता है। जब कि संयमी आत्माने कर्म के आने के द्वार बंध कर दिए है और बाद में वह तप करता है जिससे पूर्व में इकट्ठे किए हुए कर्म नाश हो जाते है।

उदा. घर में दरवाजा, खिडकी खुल्ले हैं और झाडु से अगर कोई आदमी कचरा निकालता है तो सफाई बराबर नहीं होती है। क्योंकि दरवाजा और खिडकी से नया-नया कचरा आते रहता है लेकिन यदि दरवाजा, खिडकी बंध करके हम कचरा निकालते है तब कचरा पूरा बराबर निकल जाता है और नया कचरा आता नहीं हैं।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(१) तपस्या करनेवालो को हो सके तो ब्रह्मचर्य पालना चाहिए।
(२) तपस्या करनेवालो को दो टाईम प्रतिक्रमण करना चाहिए।
(३) वीश स्थानक, आयंबिल की शाश्वती ओली आदि तपस्या करते हो तो उसकी क्रिया करनी चाहिए।
(४) तपस्या करनेवालों को समय ज्यादा मिलता है इसलिए उसे समय का सदुपयोग करने के लिए कोई अच्छी पुस्तक पढ़ना या जाप आदि करना चाहिए।
(५) तपस्या करनेवालों को नित्य व्याख्यान श्रवण करना चाहिए।
(६) तपस्या करनेवालो को गुरुवंदन करके पच्चक्खाण करना चाहिए।
(७) तपस्या करनेवाले यदि मौन रखते हो तो बहुत अच्छा होता है। मौन रखने से क्रोध पर नियंत्रण होता है। शारीरिक शक्ति की रक्षा होती है।

प्रश्न ६५ : आपके जीवन में तप के बारह भेद का कैसा-कैसा पालन शक्य है ?

उत्तर ६५ : हमारे जीवन में निम्न लिखित तप का पालन शक्य है :
(१) अनशन : १५ दिन में एक बार उपवासादि, प्रतिदिन कम से कम बियासणा, नवकारशी, चोविहार।
(२) उणोदरी : भुख से थोडा कम खाना।
(३) वृत्ति संक्षेप : १७ द्रव्य से ज्यादा नहीं खाना।
(४) रस परित्याग : एक विगई का त्याग।
(५) काय क्लेश : केश के लोच आदि करना।
(६) संलीनता : व्याख्यान आदि में

देढ घंटा लगातार बैठना। पद्मासन, वीरासन, सिद्धासन आदि योग शास्त्रादि ग्रंथो में दिखाये आसन में बैठकर अध्यात्मिक चिंतन आदि करना कोई भी आसन में जरा भी हिले बिना तीन घंटे बैठे रहे तब आसन सिद्धि होती है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

अभ्यंतर तप

(१) किए हुए पापों का प्रायश्चित्त करना।

(२) गुरु, संयमी साधु का विनय करना, वंदनादि करना।

(३) साधु-साध्वीजी म.सा. को आहार-पानी, औषध आदि बेहराना, वैयावच्च करना।

(४) स्वाध्याय : धार्मिक सूत्र का पाठ करना।

(५) काउस्सग्ग : कर्म क्षय के लिए कम से कम १० लोगस्स का काउस्सग्ग करना।

(६) ध्यान : नवकार मंत्र आदि का ध्यान, एकाग्रता से धर्मध्यान करना।

१४. भाव

प्रश्न ६६ : क्रिया एवं भाव में क्या फर्क है ?

उत्तर ६६ : क्रिया बाह्य आचार है। भाव मन के परिणाम रुप है।

पूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण यह सभी क्रिया है।

ऐसा भी हो सकता है कि कोई व्यक्ति क्रिया बहुत करता है लेकिन उनमें भाव नहीं है।

ऐसा भी हो सकता है कि कोई व्यक्ति क्रिया कम करता है किन्तु भाव बहोत अच्छे होते है।

उदाहरण : जैसे कोई व्यक्ति मन में ऐसा सोचता है कि में पूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रवचन श्रवण, साधु-साध्वीजी को वंदन और विनय वैयावच्च करुंगा तो मुझे धन मिलेगा, सुख मिलेगा, दूसरे भव में राजा बनुंगा, चक्रवर्ती बनुंगा, देव अथवा इन्द्र बनुंगा और मुझे जो संसार की सुख सामग्री आज मीली है उससे और भी अधिक सुख सामग्री मिलेंगी, फीर में संसार का सुख अच्छी तरह से भोग सकुंगा, ऐसी व्यक्ति की क्रिया बहुत है लेकिन भाव नहीं है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

दूसरा व्यक्ति ऐसा भी हो सकता है कि जो कर्म को नाश करने के लिए मोक्ष में जाने की भावना के लिए, विषय वासना से मुक्ति के लिए धर्म आराधना करता है। धर्म क्रिया कम कर सकता है, लेकिन भाव उनके अच्छे है।

प्रश्न ६७ : भाव शब्द के कितने अर्थ है ?

उत्तर ६७ : भाव शब्द के बहुत अर्थ है, कुछ अर्थ यहाँ दिखाए गये है।

(१) भाव शब्द भाव निक्षेप में भी आता है जैसे प्रभु महावीर अभी भाव सिद्ध और द्रव्य अरिहंत है।

(२) भाव शब्द का आत्मा के पाँच भावो में भी प्रयोग किया गया है : (१) औपशमिक भाव (२) क्षायोपशमिक भाव (३) क्षायिक भाव (४) औदयिक भाव (५) पारिणामिक भाव

(३) भाव शब्द का लोक में मूल्य अर्थ भी होता है।

(४) भाव शब्द मन के परिणाम के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है।

(५) "भाव से क्रिया करो" मतलब उपयोग रखकर क्रिया करो। भाव का अर्थ उपयोग रखना वह भी होता है।

प्रश्न ६८ : भाव तथा भावना में क्या फर्क है ?

उत्तर ६८ : मन के परिणाम को भाव कहते है। भाव स्थिर भी है और कभी अस्थिर भी होता है। लेकिन जब भाव स्थिर लंबे समय तक टिकता है तब भाव भावना में बदल जाता है।

भावना निम्नलिखित है।

(१) सभी जीवो से मित्रता - **मैत्री भावना।**

(२) गुणों में जो अधिक है उसके लिए **प्रमोद भावना।**

(३) गरीब-रोगी के प्रति **करुणा भावना।**

(४) दुराग्रही एवं हठाग्रही के प्रति **माध्यस्थ भावना।**

इनके अलावा अनित्यादि बार भावना है। और पांच महाव्रत की पांच पांच भावना मिलाके कुल २५ भावना महाव्रतो की भी शास्त्र में बताई है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न ६९ : भाव-वृद्धि के हेतु क्या क्या करना चाहिए ?

उत्तर ६९ : भाव वृद्धि करने के लिए सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठकर चिंतन करना। (चार बजे से छ बजे के बिच में)

मैं कोन हूँ ?

मैं कहाँ से आया हूँ ?

मुझे कहाँ जाना चाहिए ?

मैं कब साधु बनुंगा ? कब मैं रागद्वेष का त्याग करुंगा ?

मैं कब स्मशान में साधु बनकर ध्यान करुंगा ?

मैं कब शरीर को खंभे जैसा स्थिर करुंगा ?

मैने क्या व्रत नियम लिया है ? लीए हुए व्रत-नियम के निरतिचार पालन के लीए अभी भी मुझे क्या क्या करना चाहिए। शक्य हो तो रात को सोने के पूर्व भी ऐसा चिंतन करना चाहिए।

ऐसी भावना से भावों की वृद्धि होती है। विशेष जानकारी के लीए **आचार्य हेमचंद्रसूरिजी** रचित योगशास्त्र आदि ग्रंथ पढ़ने चाहिए।

प्रश्न ७० : भाव तथा आत्म परिणाम में क्या फर्क है ?

उत्तर ७० : भाव तथा आत्म परिणाम में फर्क निम्नलिखित है।

(१) मुझे मासक्षमण करने का भाव है लेकिन अभी मेरी आत्मा में मासक्षमण करने का परिणाम नहीं है।

(२) मुझे चारित्र लेने का भाव है लेकिन वर्तमान में मेरी आत्मा में चारित्र की परिणति नहीं है।

(३) मुझे ब्रह्मचर्य पालने का भाव है। लेकिन मेरा आत्मा ब्रह्मचर्यमय अभी नहीं है। इस तरह शब्द प्रयोगों द्वारा भाव एवं परिणाम का अर्थ स्पष्ट होता है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न ७१ : 'स्वाध्याय' तप का भेद होने पर भी उसे पुनः क्यों स्वतंत्र कर्तव्य बताया गया है ?

उत्तर ७१ : 'मन्ह जिणाणं' सूत्र में 'तप' जो कर्तव्य बताया है वह तप १२ प्रकार का है। उसमें स्वाध्याय आ जाता है। फिर भी 'स्वाध्याय' का महत्त्व बहुत है । यह बताने के लिए स्वाध्याय का दुबारा उल्लेख किया है । जैसे लोगों में कहते है कि 'ब्राह्मणा सर्वे आगताः' वशिष्ठोऽपि आगतः सभी ब्राह्मण आ गए। वशिष्ठ भी ब्राह्मण है वे भी आ गये एसा अर्थ तो मिल ही चुका है फिर भी सभी ब्राह्मणों से वशिष्ठ का महत्त्व सूचन करने के लिए 'वशिष्ठोऽपि आगतः' लिखा है वशिष्ठ भी आ गये है।

१५. स्वाध्याय

प्रश्न ७२ : स्वाध्याय के कितने प्रकार है ?

उत्तर ७२ : स्वाध्याय के पांच प्रकार है : (१) **वाचना :** आचार्यजी से, उपाध्यायजी से सूत्र अर्थ ग्रहण करना। (२) **पृच्छना :** जो समज में नहीं आता वह पूछना। (३) **परावर्तना :** सूत्र या अर्थ का पुनरावर्तन करना । (४) **अनुप्रेक्षा :** चिंतन करना । (५) **धर्मकथा :** २४ तीर्थंकर परमात्मा आदि की कथा करना।

प्रश्न ७३ : अनुप्रेक्षा अर्थात् भावना का भाव में समावेश हो सकता है? फिर भी यहाँ स्वाध्याय के भेद रुप से अनुप्रेक्षा स्वाध्याय अलग क्यों बताया है ?

उत्तर ७३ : स्वाध्याय का चतुर्थ भेद, अनुप्रेक्षा का अर्थ चिंतन है । मन का भाव एक विषय में एकाग्रचित्त हो जाता है, तब वह भाव में से भावना बन जाती है । बारह भावना अनुप्रेक्षा का एक विभाग है। इसलिए अनुप्रेक्षा और भावना एक है । तत्त्वार्थ सूत्र में अनित्यादि बारह भावना बताई है । वह भी अनुप्रेक्षा है। लेकिन केवल अनुप्रेक्षा नहीं है । अनुप्रेक्षा का विषय बहुत महान है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उसका एक विभाग भावना है । इसलिए स्वाध्याय के भेदों में अनुप्रेक्षा स्वाध्याय अलग बताया है ।

प्रश्न ७४ : कंठस्थ करने के रुप स्वाध्याय का इतना महत्त्व क्यों है ?

उत्तर ७४ : कंठस्थ करने का तो बहुत ही महत्त्व है। दिन में तो किताब खोलकर पढ़ सकते हैं । रात को स्वाध्याय करना है तो कंठस्थ गाथाएँ और अर्थ का ही स्वाध्याय हो सकता है बुढापे में जब आँख से दिखता नहीं है, कान से सुनाई नहीं देता है, तब कंठस्थ गाथाएं एवं उसके अर्थ का चिंतन ही हमारा कल्याण मित्र है ।

व्यवहार में भी कहा है : ''विद्या पाठे गरज गांठे'' जितना कंठस्थ है वह ज्ञान हमारा, जितना पैसा गाठ में है उतना ही हमारा है।

प्रश्न ७५ : स्वाध्याय में स्मृति, शक्ति की भी आवश्यकता होती है तो स्मृति-शक्ति बढ़ाने के लिए क्या क्या करना चाहिए ?

उत्तर ७५ : स्मृति-शक्ति बढ़ाने के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव का सहारा लेना चाहिए ।

द्रव्य : आयुर्वेद में ब्राह्मी आदि औषधि आती है। उसका विधिवद् सेवन करने से स्मृति बढ़ती है ।

क्षेत्र : इशान कोने में मुंह रख कर पढ़ने से स्मृति शक्ति बढ़ती है ऐसा कहा जाता है ।

काल : सुबह में यानि रात्रिके चौथे प्रहर में और दिन के पहले प्रहर में पढ़ने से स्मृति-शक्ति बढ़ती है ।

भाव : उपयोग रखकर, ध्यान से, एकाग्र चित्त से पढ़ने से स्मृति-शक्ति बढ़ती है ।

आज के युग में अनेक प्रकार के मनोविज्ञान के सिद्धांत समझाये गए है। उनके पालन से भी स्मृति बढ़ती है। शास्त्र में बताए

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

गए सरस्वती श्रुतदेवता आदि के जाप एवं ध्यान से भी स्मृति-शक्ति बढ़ती है।

१६. नमस्कार - नमुक्कार

प्रश्न ७६ : जैनों का महान से महान मंत्र कौनसा है ?

उत्तर ७६ : जैनों का महान से महान मंत्र 'नवकार मंत्र' है।

जैन शास्त्र में फरमाया है दुःख पाप से आता है और पंच परमेष्ठि को नमस्कार करने से सभी पाप दूर हो जाते है। यह नवकार महामंत्र की महानता का कारण है।

प्रश्न ७७ : इस महामंत्र की कितनी कितनी उपासना विधि है ?

उत्तर ७७ : नमस्कार महामंत्र की मुख्य उपासना विधि उपधान तप है। श्री सिद्धचक्र यंत्र को ध्यान में रखकर (हृदय में कमल बद्ध ध्यान करने से) नवकार मंत्र की एक माला गीनने से बीस माला का फल मिलता है। यह एक बहुत ही बड़ी नवकार मंत्र की उपासना विधि है। प्रतिदिन नवकार मंत्र की पांच माला गीनते है तो पांच साल में नवलाख नवकार मंत्र का जाप पूर्ण होता है। इस तरह तप के साथ भी नवकार महामंत्र की अनेक प्रकार उपसना विधि है।

प्रश्न ७८ : कितने दिन के उपधान तप से नवकार महामंत्र की आज्ञा प्राप्त होती है ?

उत्तर ७८ : १८ दिन के उपधान तप से नवकार महामंत्र की आज्ञा प्राप्त होती है।

प्रश्न ७९ : नवकार मंत्र गुणों की ही पूजा है यह कैसे माना जाएगा ?

उत्तर ७९ : नवकार मंत्र में कोई व्यक्ति के नाम का उल्लेख नहीं किया है लेकिन पदों का उल्लेख किया है। हम प्रभु महावीर के शासन में है फीर भी नवकार महामंत्र में 'नमो महावीराणं' नहीं लिखा है। लेकिन राग-द्वेष को जितने वाले ऐसे वीतराग गुणवाले अरिहंत भगवंतो को नमस्कार 'नमो अरिहंताणं' से किया है। महावीर स्वामी भी अरिहंत

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

है। उन में जो वीतरागता और वीतद्वेषिता गुण है वह गुण से ही प्रभु अरिहंत कहे जाते है। अतः वीतरागादि गुणों की ही पूजा-नमस्कार महामंत्र में है। यह गुण जो महान व्यक्तिओं में है उनको भी नमस्कार हो जाता है।

प्रश्न ८० : नवकार महामंत्र की माला में १०८ ही मणि क्यों होते है?

उत्तर ८० : अरिहंत के १२ गुण, सिद्ध के ८ गुण, आचार्य के ३६ गुण, उपाध्याय के २५ गुण, साधु के २७ गुण ऐसे पंच परमेष्ठि के गुणों को जोडने से १०८ होते है। नवकार मंत्र की माला के एक एक मणि में पंच परमेष्ठि के एक-एक गुण की स्थापना है। इसीलिए माला में १०८ मणि होते है।

१७. परोपकार - परोवयार

प्रश्न ८१ : उपकार के कितने भेद है ?

उत्तर ८१ : उपकार के दो भेद है : (१) स्व उपकार और (२) पर उपकार।

शास्त्र में ऐसा दृष्टांत बताया है कि कई आत्मा केवल ज्ञान होने के बाद उपदेश देते नहीं है। ये 'मूक केवली' कहे जाते है। लेकिन यह महान आत्मा स्व का उपकार करके मोक्ष मे जाती है।

तीर्थंकर की आत्मा स्व और पर दोनों का उपकार करती है। खुद भी मोक्ष में जाते है और अन्य कई आत्माओं को मोक्ष में ले जाते है।

प्रश्न ८२ : परोपकार के कितने प्रकार है ?

उत्तर ८२ : परोपकार के दो प्रकार है : (१) द्रव्य उपकार (२) भाव उपकार।

प्रश्न ८३ : पर के द्रव्य उपकार का क्या स्वरुप है ?

उत्तर ८३ : रोगी को देखकर दिल में दया का भाव पैदा होता है और हम उनको दवाई, पथ्य भोजन, वैद्य की सुविधा देते है और गरीब को धन, धान्य, वस्त्र, मकानादि देते है यह सभी पर का द्रव्य उपकार है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न ८४ : पर के भाव उपकार का क्या स्वरुप है ?

उत्तर ८४ : आदमी सुखी है लेकिन धर्म नहीं करता है ऐसे जीव को धर्म में जोड़ना । प्रभु पूजा, तीर्थयात्रा, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध, उपधान कराना, संस्कार देना यह अन्य जीव पर भाव उपकार है ।

गुरु भगवंत हमें शास्त्र ज्ञान देते है । धार्मिक आगम सुनाते है । भगवान क्या कह कर गए है । भगवान की क्या वाणी है, ये समझाते है । उससे हमें देव, गुरु, धर्म पर श्रद्धा प्रकट होती है, हमें ज्ञान की प्राप्ति होती है । हम सामायिक, पौषध, उपधान करते है । चारित्रादि की प्राप्ति करते है । इस तरह गुरु भगवंत ने हम पर जो दर्शन, ज्ञान, चारित्र देकर उपकार किया वह पर का भाव उपकार है ।

प्रश्न ८५ : अरिहंत पद की प्राप्ति में परोपकार की भावना का क्या महत्त्व है और उस परोपकार का क्या फल है ?

उत्तर ८५ : अरिहंत पद की प्राप्ति में 'सवि जीव करुं शासन रसी' की परोपकार की भावना ही बहुत बड़ा कारण है ।

तीर्थंकर की महान आत्मा की एक विशेषता है कि जब वे मिथ्यात्व दशा में रहती है फिर भी परोपकार करने का गुण उनके स्वभाव में ही है । खुद के स्वार्थ का कभी विचार तीर्थंकर की आत्मा नहीं करती है ।

तीर्थंकर बनने के पूर्व तीन भवों से लगातार प्रभु भावना करते है कि जगत को सुखी करना, जगत के जीवों को जन्म-मरण के फेरेमें से छुडाना, पाप का नाश हो, सभी आत्मा धर्म करे और शाश्वत मोक्ष सुख को प्राप्त करें । सभी जीव जिन शासन के रसिक बन जाए । प्रभु की यह भावना अपराधी के प्रति, पापी के प्रति, अभव्य के प्रति, दुर्भवी के प्रति, मित्यात्वी के प्रति, खुद का बुरा करनेवाले अपकारी के प्रति भी रहती है । और यह भावना भाते भाते तीर्थंकर नामकर्म को निकाचित करते है और अंतिम भव में तीर्थंकर बनते है । तीर्थंकर भगवंत वाणी सुनाकर अनेक आत्माओं को संसार से

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

तारते है। संसार समुद्र से तीरना एवं औरो को तीराना यह प्रभु के परोपकार का फल है।

१८. यतना (जयणा)

प्रश्न ८६ : धर्म की माता कौन है ?

उत्तर ८६ : 'यतना' को धर्म की माता कही गई है।

प्रश्न ८७ : प्रत्येक कार्यो में यतना शक्य है ? उदाहरण द्वारा समझाईए।

उत्तर ८७ : हमारे प्रत्येक कार्यो में यतना शक्य है। यह यतना की शक्यता निम्नलिखित है :

(१) जब हम चलते है तब नीचे देखकर चलें, और चींटी मंकोडे, हरी वनस्पति, कागज, कच्चा पानी इत्यादि पर पाँव न रखे यह चलने की यतना है।

(२) जब हम खड़े रहते है तब हम नीचे देखकर खडे रहे, चींटी आदि न हो ऐसी भूमि पर खड़े रहे। उपर के भाग में पेड आदि है और उसकी शाखाए नीचें लटकती हो वह हमें स्पर्श न करे ईसी तरह खडे रहे। जहाँ वेश्यादि का महोल्ला हो वहाँ खडे न रहे। जहाँ दो बैल, दो मल्ल लड़ते हो वहाँ खडे न रहे। - यह खडे रहने की जयणा है।

(३) साधु-साध्वी तथा पौषध में रहे हुए श्रावक-श्राविका जब बैठते है तब उनको जमीन देखना, जमीन को पूंजना आसन या कटासणा देखना, पूंजना, शरीरको पूंजना और बाद में बैठना चाहिए।

श्रावक और श्राविका जो व्रत नियम में नहीं है उनको भी चींटी आदि न हो ऐसी भूमि पर रुमाल या कपडे से पुंज कर यतना से बैठना चाहिए।

(४) साधु-साध्वी और पौषध में रहे श्रावक-श्राविका जब सो जाते है तब पहले 'संथारा पोरिसि' पढ़ते है। जगत के जीवों को 'मिच्छा मि दुक्कडम्' देते है और जमीन को पूंजकर

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

संथारा बिछाकर शरीर को पूंज कर शरीर को सिकुड कर 'संथारा पोरिसि' के अर्थ का स्वाध्याय करते करते जयणा से सोते है।

श्रावक-श्राविका जो अव्रती है उनको प्राय: ब्रह्मचर्य पालना और रुमाल आदि से शरीर को पूंजकर जयणा से सोना चाहिए।

(५) भोजन करने के समय में जूठा मुंह बोलना नहीं चाहिए। बैठकर खाना चाहिए। चलते-चलते या खडे-खडे खाना नहीं चाहिए। यह भोजन स्वादिष्ट है यह भोजन खराब है ऐसा राग-द्वेष नहीं करना चाहिए। खाते-खाते किताब नहीं पढ़ना चाहिए। जिस थाली कटोरी में अक्षर लीखे है ऐसी थाली, कटोरी का उपयोग नहीं करना चाहिए। यह सब भोजन के समय की जयणा है।

(६) बोलने के समय सोचकर बोलना चाहिए। साधु-साध्वीजी और पौषधवाले श्रावक-श्राविकाओं को मुहपति रखकर बोलना चाहिए। जुठ नहीं बोलना चाहिए। संदेह उत्पन्न हो ऐसा नहीं बोलाना चाहिए। अप्रिय नहीं बोलाना चाहिए, ऐसी वाणी नहीं बोलनी के जिससे दूसरों के दिल को दर्द हो। महाभारत का जो भयंकर युद्ध हुआ जिस में खून का समंदर हो गया। कटे हुए शिर एवं हाथ-पाँव मछली की तरह उसमें तैरते थे। ऐसे युद्ध का कारण यही था कि द्रोपदी ने बोलने में जयणा नहीं रखी। द्रोपदी ने दूर्योधन से कहा कि - 'अंधे के लड़के भी अंधे ही होते है। तुम्हारा पिता अंधा है लेकिन आज पता चला की तुम भी अंधे हो।' तब दुर्योधन ने कहा - 'एक दिन यह द्रोपदी को मेरी जांघ पर न बिठाऊं तो मेरा नाम दुर्योधन नहीं।' दुर्योधन की भाषा में जयणा नहीं थी। भीम ने कहा - 'यह दुर्योधन की जाँघ को मेरी गदा से चीर

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

कर उसका खून न पीऊं तो मेरा नाम भी भीम नहीं' बोलने में जयणा का पालन नहीं हुआ उसके परिणाम रुप महाभारत का सर्जन (युद्ध) हुआ। यदि जयणा से बोलते है तो पाप कर्म का बंध नहीं होता है।

प्रश्न ८८ : यतना का ख्याल रखने में हमारे में सदेव अहिंसा भावना कैसी रहती है ? समझाईए।

उत्तर ८८ : जयणा रखने से हमारे दिल में अहिंसा का परिणाम पैदा होता है। दिन-प्रतिदिन अहिंसा का परिणाम कोमल बनता है। जब हमने कोई व्रत नहीं लिया है और हम चलते है तब मैदान में हरि वनस्पति के पर या कच्चे पानी पर पैर रखकर चलते है किन्तु हमने सामायिक या पौषध लिया है और कच्चा पानी गिरा है या वनस्पति, घास आदि है तो हम इधर-उधर देखते है कच्चा पानी या वनस्पति बिना की कोई प्रासुक भूमि है ? अगर है तो हम लंबा रस्ता पसंद करते है लेकिन जयणा रखकर चलते है। अगर रसोई बनाने के लिए गेस चालु करना हो तो पहले गेस को देखना। गेस के उपर कुछ समय पूर्वे चाय गिर गई है और चींटी आई है तो उसको पूंजणी से दूर करना बाद में माचिस का उपयोग करना। एकदम गरम पानी में और गरम दूध में मक्खी गिरकर मरती है। गरम पानी को परांत में ठंडा किया है तो उसके उपर मच्छरदानी डालना। गरम दूध के भगोले पर ढक्कन लगाना। जयणा और अहिंसा परस्पर संबंधित है। अहिंसा की भावनावाले को जयणा रखना चाहिए। और जयणा पालनेवालो को अहिंसा का भाव आ जाता है।

प्रश्न ८९ : यतना का स्वरुप एक महान पर्यावरण वाद है - यह बात सिद्ध करो।

उत्तर ८९ : आदमी को जीने के लिए प्रकाश, पानी, पवन, भोजनादि चीजों की जरुरत है। कुदरत ने मानव को सूर्य और चंद्र का शुद्ध प्रकाश दिया, बारिस का शुद्ध पानी दिया। पवन - हवा शुद्ध दी। धरती

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

माताने धान्य दिया है । लेकिन मानव ने शुद्ध हवा को खराब कर दिया है। मोटर, लोरी, अेंन्जिन, ऐरोप्लेन आदि के धूएं से हवा में बिगाड हुआ । बड़ी बड़ी फेक्ट्री चलती है उसका वेस्टेज बेकार पदार्थ नदी में छोड़ते है जिससे नदी का पानी खराब हो जाता है । कभी-कभी तो रासायण की मीलों का वेस्टेज बेकार पदार्थ नदी में डालते है तो मछली भी मर जाती है । बीजली के प्रवाह से चलती हुई चक्की में अनाज पीसने से अनाज का सत्त्व नाश हो जाता है ।

एक आदमी यदि खाना जूठा न छोड़े और पीने का पानी जूठा न छोड़े । स्नान करने में भी एक बाल्टी पानी का उपयोग करें तो बहुत कम धान्य और पानी से करोड़ो की बस्तिवाले भारत देश के नागरिक का जीवन निर्वाह बहुत अच्छी तरह से हो सकता है, लेकिन आज हम देखते है कि बारात में आये हुए लोग शादी के भोजन में इतना झूठा छोड़ते है कि अगर यह अनाज गरीबों में बाँट दिया जाय तो बहुत गरीबों का पेट हम आसानी से भर सकते है ।

चैत्र-वैशाख महिने में ज्यादा शादियाँ और समूह भोजन होता है । वह सब भोजन में एक कानून का अगर सभी लोग पालन करें जूठा न छोड़े तो बहुत कम धान्य से ज्यादा से ज्यादा लोग पेट भर भोजन करते है । यतना का स्वरुप एक पर्यावरण वाद है ।

प्रश्न ९० : यतना ही विश्व मानव की 'संस्कार माँ' है - सिद्ध करें ।

उत्तर ९० : यतना विश्व मानव की संस्कार माँ है । अगर रसोई बनाने की जगह में ऊपर चंदरवा डाला जाय, पानी ठंडा करना है वहाँ उपर कपडा डाला जाय ऊससे दो फायदे होते है । एक तो कोई विषीले जीव जैसे छिपकली आदि रसोई में गिरकर मर जाते और दूसरा, खाना विषीला हो जाने से खानेवाले मर जाय वो दोनों का रक्षण होता है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

दूध का पावडर बहुत घरों में उपयोग में लिया जाता है। आज हम घर में मोटर रखने के लिए गेरेज की व्यवस्था कर सकते है। यदि एक गाय भी रखे तो खाना शुद्ध हो सकता है। वनस्पति का एक पेड़ भी घर में छत पर लगाया जाय तो हवा शुद्ध हो सकती है।

यतना अहिंसारुपी संस्कार की माँ है। यतनापूर्वक कार्य करने में हिंसा तो जरुर रुकती है, साथ–साथ यतनामयी क्रिया संस्कारमयी क्रिया भी लगती है। "जैसे झुठा अन्न छोड़ना नहीं" यह यतना के पालन से झुठे अन्न में पैदा होनेवाले जीवों की हिंसा अटक जाती है। साथ–साथ में झुठ नहीं छोडा जाता है वहां स्वच्छता एवं सुंदरता बनी रहती है। स्वच्छ रहना, गंदकी करना नहीं, गंदकी करने देना नहीं यह बड़ा सुंदर संस्कार है। अतः सब यतनाओ पर विचार करते है तो लगता है कि यतनाशील मनुष्य के जैसा सुंदर व्यक्ति मीलना मुश्किल है। अतः यतना में क्रमशः सारे विश्व में संस्कार पेदा करवाने की शक्ति है। अतः एव यतना को विश्व संस्कार जननी कहना सर्वथा योग्य है।

१९. जिन पूजा

प्रश्न ९१ : 'जिनपूजा' क्यों और कब करनी चाहिए ?

उत्तर ९१ : मोक्ष मार्ग बताकर भगवानने हमारे पर अनंत उपकार किया है उन उपकार को याद करने के लिए, प्रभु पर श्रद्धा बढ़ाने के लिए, अच्छे विचारों की प्राप्ति के लिए, मन की प्रसन्नता मिलाने के लिए प्रभु पूजा करनी चाहिए।

प्रातः में वासक्षेप पूजा, मध्याहन में १२ बजे अष्टप्रकारी पूजा, शाम को आरति यह एक उत्सर्ग विधि है, लेकिन वर्तमान काल में आर्थिक समस्यादि के कारण लोग सुबह में ही अष्टप्रकारी पूजा कर लेते है। सूर्योदय के बाद ही अगर प्रभु का पक्षाल हो तो प्रभु पूजा कि विधि का पालन अच्छा होता है लेकिन अगर हमें प्रवास में जाना

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

है और गाडी में बैठना है, सुबह में प्रभु पूजा नहीं करेंगे तो पूरे दिन में पूजा नहीं होगी ऐसे संयोगो में सूर्योदय के पहले भी हम प्रभु को पक्षाल करके अष्टप्रकारी पूजा कर सकते है।

प्रश्न ९२ : पूजा के भेद कितने है ?

उत्तर ९२ : पूजा के आठ भेद है। जल पूजा, चंदन पूजा, पुष्प पुजा, धूप पूजा, दीप पूजा, अक्षत पूजा, नैवद्य पूजा, फल पूजा।

ज्यादा जिज्ञासु को पूजा के सत्तर प्रकार, ६४ प्रकार भी है जो ज्ञानी गुरु से ज्ञान प्राप्त करें।

प्रश्न ९३ : सभी संप्रदाय के जैन जिनपूजा क्यों नहीं करते है ?

उत्तर ९३ : श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संप्रदाय वाले जिनपूजा करते है। लेकिन स्थानकवासी, तेरापंथी आदि संप्रदाय जिनपूजा नहीं करते है। जिनपूजा करने से कच्चे जल, पुष्प आदि से हिंसा होती है। प्रभु महावीर का धर्म अहिंसा प्रधान है। ऐसा मानते है इसलिए वे लोग जिन पूजा नहीं करते है। विशेष जानकारी के लिए उत्तर '९४'वाँ पढ़ें।

प्रश्न ९४ : जिन पूजा का फल क्या है ?

उत्तर ९४ : जिन पूजा करने से प्रभु के प्रति श्रद्धा प्रकट होती है, श्रद्धा बढ़ती है। श्रद्धा निर्मल होती है। प्रभु के वचन पर श्रद्धा बढ़ती है।

जिन पूजा करते है तब तक मन में बुरे विचार नहीं आते है, और तब तक हम बुरा आचार नहीं करते है।

जिन पूजा करने जाते है तो मंदिर की नजदीक उपाश्रय होता है वहाँ गुरु भगवंत बिराजे हुए होते है और गुरुजी प्रवचन भी देते है। हम कभी कभी प्रवचन सुनते है। भगवान की वाणी क्या है उसकी जानकारी मिलती है। गुरु भगवंत को हम वंदन करने जाते है तब गुरु भगवंत हमें सामायिक, प्रतिक्रमण, धार्मिकज्ञान, स्वाध्याय आदि का महत्त्व पौषध-चारित्र का महत्व समजाते है और हम धीरे धीरे

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

धर्म में आगे बढ़ते बढ़ते साधु भी बनते है। इसके मूल में प्रभु पूजा ही कारण है । जिन पूजा का साक्षात् फल संयम प्राप्ति, सद्गति है और परंपर फल मोक्ष है ।

प्रश्न ९५ : मूर्तिपूजक संप्रदाय के साधु भी जिनपूजा क्यों नहीं करते हैं?

उत्तर ९५ : कंई जिज्ञासुओं को ऐसी जिज्ञासा होती है कि प्रभु महावीर का धर्म अहिंसा प्रधान है । प्रभुपूजा में कच्चे पानी और पुष्पादि में जीवों की हिंसा होती है । तब प्रभु पूजा क्यों करनी चाहिए? यदि प्रभु पूजा शास्त्रीय है तो मूर्तिपूजक संप्रदाय के साधु पूजा क्यों नहीं करते है ?

जिन पूजा कौन करता है और कौन नहीं करता है यह दो बात पर यदि हम विचार करेंगे तब हमें सही बात समझ में आ जाएगी।

सामायिक में रहे हुए श्रावक-श्राविका, प्रतिक्रमण में रहे हुए श्रावक-श्राविका, पोषध करनेवाले, उपधान करनेवाले और पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वीजी म.सा. जिन पूजा नहीं करते है।

जो सामायिक, प्रतिक्रमम, पोषध आदि व्रत नियम में नहीं है ऐसे श्रावक-श्राविका कच्चे पानी से स्नान करते है। कच्चे पानी को छुते है, कच्चे पानी से रसोई बनाते है । बहने अपने केश में फूल,फूलों का गजरा लगाते है। भाई लोग अपने कोट में फूल लगाते है । शादी में, रीसेप्शन में पांच पांच लाख के पुष्पों का डेकोरेशन सिर्फ एक दिन के लिये करते है ऐसे श्रावक-श्राविकाएँ जो पापमय संसार में है उसे प्रभु के प्रति श्रद्धा बढ़ाने के लिए समकित की शुद्धि के लिए या समकित को मिलाने के लिए पूजा करनी चाहिए। अगर कोई संसारी जीव हिंसा का त्वाग, आजीवन के लिए करें कि हम कोई सचित्त चीज, पानी, पुष्प, फल आदि का स्पर्श नहीं करेंगे। तब उनको जिन पूजा करने की जरुरत नहीं है।

साधु भगवंत ने जो आजीवन-जींदगी भर कच्चे पानी, हरि वनस्पति, घासादि एवं सभी सचित्त चीजों को स्पर्श नहीं करने की

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रतिज्ञा ली है उनको प्रभुपूजा करने की जरुरत नहीं है। क्योंकि प्रभु महावीर परमात्मा के अहिंसा महाव्रत का अच्छी तरह से गुरु भगवंत पालन कर रहे हैं।

धर्म करने की व्यवस्था जीव की गुणवत्ता पर आधारित है। जो गुण में आगे नहीं बढ़े है संसारी है। व्रतधारी नहीं है, छूटे है (व्रत बिना के जो है) उनको प्रभु पूजा करके धर्म में आगे बढ़ना जो धर्म में आगे बढ़े है, व्रत महाव्रत लिया है वह व्रत का पालन कर धर्म में आगे बढ़े। वस्तुतः जिनपूजा आदि में होता हुआ समारंभ स्वरुप हिंसा है। श्रावक के लिए स्वरुप हिंसा का त्याग शक्य नहीं है, आवश्यक भी नहीं है। स्वरुप हिंसा के बिना गुरुवंदन के लीए भी हम चल नहीं पायेंगे। स्थानक भी बना नहीं पायेंगे। गोशाला आदि बनाकर गुंगे निःसहाय जीव की सेवा भी नहीं कर पायेंगे। तेरापंथी भवन को निर्माण भी नहीं हो पायेगा साधु-साध्वीजी की भक्ति भी हम नहीं कर पायेंगे। क्योंकि उपरोक्त सभी कार्य में स्वरुप हिंसा है पर स्वरुप हिंसा के प्रसंग में जयणा रखकर धर्मविधि में आगे बढ़ना श्रावक का धर्म है। श्रावकोचित धर्म में श्रावक स्थिर रहे यह समझाना साधुका भी कर्तव्य है।

२०. जिन स्तुति

प्रश्न ९६ : जिन स्तुति के कितने प्रकार है ?

उत्तर ९६ : प्रभु के सन्मुख बोलने की स्तुति को जिन स्तुति कहते है। थुई और स्तुति ऐसे तो एक ही है। ईसीलिए 'कल्लाण कंदं' की स्तुति, 'संसार दावानल' की स्तुति एवं कल्लाण कंदं की थुई, संसार दावानल की थुई एसा प्रयोग करते है। थुई चार गाथा की रहती है। पहली गाथा में एक तीर्थंकर, दूसरी गाथा में सभी तीर्थंकर, तीसरी गाथा में ज्ञान और चौथी गाथा में श्रुत देवता की स्तुति होती है उसे थुई कहते है। स्तुति दो प्रकार की है। (१) व्यवहारिक स्तुति (२) नैश्चयिक स्तुति

'श्वासोश्वास कमलसमो'

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(१) अरिहंत भगवान का श्वासोश्वास कमल समान है इत्यादि गुणों की स्तुति व्यवहारिक स्तुति है।

(२) सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह इत्यादि, भगवान- सुखी है, अचल है, रोगरहित है, अनंत है, अक्षय है, इत्यादि नैश्चयिक स्तुति है।

प्रश्न ९७ : जिनस्तुति का फल क्या है ?

उत्तर ९७ : जिन स्तुति करने से प्रभु को वंदना, प्रभु का विनय, आगम के प्रति आदरभाव, हमारे में कृतज्ञता गुण की प्राप्ति, सम्यक्त्व की प्राप्ति या सम्यक्त्व की निर्मलता आदि गुणों की प्राप्ति होती है। उत्तराध्ययन सूत्र २९ में फरमाया है कि 'स्तुति करने से ज्ञान दर्शन चारित्र की प्राप्ति होती है, वैमानिक देवगति को जीव प्राप्त करता है, परंपरा से जीव मोक्ष में जाता है।'

प्रश्न ९८ : जिन चैत्यवंदना के कितने प्रकार है ?

उत्तर ९८ : जिन चैत्यवंदना के तीन प्रकार है :

(१) जघन्य चैत्यवंदन : सिर्फ अरिहंत चेइयाणं, अन्नत्थ कह कर एक नवकार का काउस्सग्ग करके एक थुई कहना।

(२) मध्यम चैत्यवंदन : एकबार नमुत्थुणं आदि बोलकर एक थोय कहना।

(३) उत्कृष्ठ चैत्यवंदन : देववंदन, जिसमें पांच नमुत्थुणं, दो बार चार गाथा की थुई आती है।

प्रश्न ९९ : जिन चैत्यवंदना की पूर्ण जानकारी कौन से सूत्र में मिलती है ?

उत्तर ९९ : जिन जैत्यवंदन की पूर्ण जानकारी 'चैत्यवंदन भाष्य' में मिलती है।

प्रश्न १०० : स्तुति, स्तवन और चैत्यवंदन में क्या फर्क है ?

उत्तर १०० : पूज्य दादा गुरुदेव लब्धि सूरीश्वरजी म.सा. ने लब्धि प्रश्न ग्रन्थ में फरमाया है कि स्तुति-स्तवन और चैत्यवंदन ये तीनों में जिनेश्वर भगवंत की स्तवना होने के कारण एक समान ही है फिर भी स्तुति, स्तोत्र छंद में होते है। स्तवन, मालकोश, भैरवी, धनाश्री,

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

जयजयवंती, वसंत, दुर्गा आदि राग तथा लौकिक अनेक प्रकार के राग में होते है। यह स्तुति और स्तवन में अंतर है। चैत्यवंदन कम से कम प्रायः तीन गाथा का होता है। स्तवन कम से कम पाँच गाथा का होता है। स्तुति प्रायः चार गाथा की होती है। जिस में वैराग्य की बात हो और प्रभु जिनेश्वर का मुख्य रुप से कोई प्रकार का वर्णन न हो तथा महापुरुषों के जीवन का वर्णन आदि भी हो तो उसे सज्झाय कहते है।

२१. गुरु स्तुति - गुरुथुअ

प्रश्न १०१ : 'गुरु' की व्याख्या क्या है ?

उत्तर १०१ : 'पंचिंदिय' सूत्र में फरमाया है कि ३६ गुणवाले आचार्य भगवंत हमारे गुरु है। शास्त्र में ऐसा भी फरमाया है कि एक अक्षर का ज्ञान हमें जिनसें मिलता है वे भी हमारे ज्ञानदाता गुरु है। योग शास्त्र में कहा है पंच महाव्रत का पालन करते है, भिक्षा से जीवन निर्वाह करते है, समता भाव में हंमेशां रहते है, धर्म का उपदेश देते है, वह गुरु है।

प्रश्न १०२ : गुरु एवं शिष्य अर्थात् साधु भगवंत या श्रावक का क्या संबंध एवं कैसा व्यवहार होना चाहिए ?

उत्तर १०२ : गुरु और शिष्य का संबंध ऐसा होना चाहिए जिसमें गुरु शिष्य का अनुशासन करे और शिष्य गुरु का विनय करे। इसि तरह साधु भगवंत और श्रावक के संबंध में भी साधु भगवंत का कर्तव्य है कि श्रावक की जो विषय में जिज्ञासा है, रुचि है उस धार्मिक विषय में अभ्यास कराना एवं दान, शील, तप, भाव श्रावक के १२ व्रत, साधु बनने की तीव्र भावना पैदा कराना और चारित्र प्रदान कराना।

श्रावक का कर्तव्य है कि साधु भगवंत को वंदन आदि विनय करना, शास्त्र का प्रवचन सुनना, अर्थ समझना, नहीं समज में आये तो फिर से पूछना, पुनरावर्तन करना, चिंतन

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

करना, साधु भगवंत को आहार, पानी, दवाई, वस्त्र, पात्र आदि बहेरा कर लाभ लेना । जीवन में जो पाप हो गया है उसका शुद्ध दिल से प्रायश्चित्त करना। साधु भगवंत को श्रमण कहते है तथा श्रावक को श्रमणोपासक कहते है अर्थात् श्रावक को हरदम साधु भगवंतो की तन-मन-धन से उपासना में लगे रहना चाहिए । साधु एवं श्रावक के आदर्श संबंधो के लिए एसा भी कहा गया है कि श्रावक-श्राविका साधु-साध्वीजी के "अम्मा पियरौ" अर्थात् माता-पिता के समान है। माता-पिता को लगता है हमारा सर्वस्व हमारी संतति है । हमारा सर्वस्व हमारी संतति के लीए ही है तथा वे सभी प्रकार से अपनी संतति की सुरक्षा संवर्धन एवं सुव्यवस्था करते है वैसे ही श्रावक-श्राविकाओ को परम विनय से साधु-साध्वी भगवंत के गुणो में वृद्धि होती रहे ऐसे बरतना चाहिए । साधु साध्वीजी सच्चे धर्म प्रभावक बन सकते है अतः श्रावक-श्राविकाओ को उनकी संयम रक्षा एवं शासन प्रभावना में निष्पक्षपातसे साथ देना चाहिए ।

प्रश्न १०३ : 'गुरु' शब्द का अर्थ क्या है ?

उत्तर १०३ : 'गु' का मतलब है अंधकार, 'रु' का मतलब है प्रकाश । जो हमें अज्ञानरुपी अंधकार से ज्ञानरुपी प्रकाश में ले जाते है। उसे गुरु कहते है।

प्रश्न १०४ : गुरु को दीपक की उपमा दी गई है उसका रहस्य दिखाएँ ?

उत्तर १०४ : गुरु को दीपक की उपमा दी गई है। अंधकार में दीपक, रोशनी देता है लेकिन जब दो कमरे के बीच में देहली के उपर दीपक रखते है तो दोनों कमरें में रोशनी फैल जाती है।

देव, गुरु, धर्म यह तीन महान पद में गुरु पद बीच में है । देवपद और धर्मपद को गुरुपद प्रकाशित करता है। इसीलिए गुरु को दीपक की उपमा दी गई है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १०५ : गुरु को श्रावक किस तरह समर्पित हो सकता है ?

उत्तर १०५ : कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्रसूरिजी गुरु भगवंत को १८ देश का राजा कुमारपाल 'गुरु समर्पण' का एक आदर्श उदाहरण है।

राजा सिद्धराज जयसिंह के सैनिक कुमारपाल को मार डालने के लिए घुमते थे । तब कुमारपाल को गुरु महाराज ने पुस्तक भंडार में छीपा दिए और जान बचाई । एवं कुमारपाल महाराज को भगवान महावीर के ४५ आगमों का कुछ रहस्य समझाने के लिए 'योगशास्त्र' नाम के नये ग्रन्थ की रचना की ।

कुमारपाल जब गुजरात के १८ देश के राजा बने तब गुरु भगवंत को उन्होंने कहा 'राज्य आपके चरणों में है, मैं आपका सेवक हूँ... गुरु भगंवत ने बुचडखाना बंध करवाये । दारु बंद करवाया । घोडे और गाय आदि पशु को भी पानी पिलाना है तो छानकर पिलाने का आदेश प्रजा को दिया और प्रजाने आदेश का पालन भी किया ।'

कुमारपाल ने गुरु महाराज के पास ऐसा नियम लिया था कि मुँह से 'मारो काटों' ऐसे शब्द निकल जाय उस दिन उपवास करना। कुमारपाल ने गुरु भगवंत के पास चारित्र की मांग भी की थी। लेकिन गुरु भगवंत ने फरमाया 'उदायन राजा' अंतिम राजा थे। जो साधु बन गये वे अंतिम राजर्षि थे। अब कोई राजा साधु नहीं बनेगा ऐसी परमात्मा महावीर स्वामी भगवान की वाणी है । **कुमारपाल राजा को बहुत दु:ख हुआ अगर मैं राजा नहीं बनता तो अच्छा था मैं साधु महाराज बन सकता ।**

आचार्य सुहस्तिसूरि म. को समर्पित तीन खंड के राजा संप्रति ने गुरुवचन से समर्पित होकर एक लाख जिन मंदिर, सवा करोड प्रतिमा भरायी । तीन खंड में अमारि प्रवर्तन कराया । अनार्य देश में भी साधु का विहार हो सके ऐसी सुविधा की ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

इस तरह कुमारपाल राजा, संप्रति राजा, गुरु समर्पण का आदर्श उदाहरण है। वर्तमान काल में भी श्रावक निम्न रीति से गुरु को समर्पित हो सकता है। श्रावक को भवआलोचना गुरु महाराज से लेना चाहिए। स्व के जीवन में जो बड़ा पाप हो गया है उसका प्रायश्चित्त करना उसको भव आलोचना कहते है।

श्रावक को अपने संसारिक कार्यो में भी पाप कम लगे इसीलिए संसारी कार्य भी गुरु को कहकर ही करना चाहिए। उदाहरण - श्रावक को पैसा कमाना पड़ता है तो गुरु भगवंत नीति का उपदेश देते है, जिससे श्रावक अनीति के पाप से बच जाय। उचित विवाह, उचित मकान, उचित वेष इत्यादि गुरु के उपदेश से श्रावक अपने जीवन में कम पाप से जीवन व्यतित कर सकता है। तप के विषय में, दान के विषय में, शील के विषय में, भाव के विषय में गुरु के मार्गदर्शन से चलकर श्रावक मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ सकता है।

श्रावक को दान करना है और वह यदि गुरु महाराज को पूछ कर दान करेगा तो गुरु महाराज उसको मार्गदर्शन दे सकते है कि अभि साधारण खाते में हानि होते जा रही है यही क्षेत्र में दान देने योग्य है।

ब्रह्मचर्य पालन करने की भावना श्रावक की बढ़े और लिया हुआ ब्रह्मचर्य का नियम अच्छी तरह से पालन हो सके इसीलिए ब्रह्मचर्य के ९ (नौ) नियम का मार्गदर्शन गुरु महाराज दे सकते है।

शास्त्रकारो ने फरमाया कि पच्चक्खाण गुरु के पास लेना चाहिए। श्रावक यदि गुरु के पास पच्चक्खाण करने जाता है तब गुरु महाराज उनकी योग्यता, भावना और शरीर का स्वास्थ्य देख कर तप में आगे बढ़ाते है। श्रावक की कभी-कभी भावना ज्यादा है और शरीर तथा मन की शक्ति कमजोर देख कर गुरु महाराज कहते है कि तुम आयंबिल का तप करो। शक्ति से ज्यादा तप

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

करने से कभी-कभी गुस्सा आ जाता है। आर्तध्यान भी हो जाता है। गुरु के उपदेश से श्रावक मैत्री आदि चार भावना, अनित्यादि बारह भावना, सवि जीव करुं शासन रसी की भावना भाते-भाते मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ सकता है।

२२. साधर्मिक वात्सल्य

प्रश्न १०६ : वात्सल्य का मतलब क्या है ?

उत्तर १०६ : वात्सल्य का मतलब भक्ति है। भक्ति शब्द का मतलब है साधर्मिक को भोजनादि पूज्य भाव से देना। खुद का विचार किये बिना साधर्मिक की भक्ति करना यह वात्सल्य का अर्थ है।

प्रश्न १०७ : साधर्मिक का अर्थ क्या है ?

उत्तर १०७ : जो समान धर्मवाला है वह साधर्मिक है। अरिहंत को देव, महाव्रतधारी को गुरु और अहिंसामय धर्म को जो धर्म मानता है वह हमारा साधर्मिक है। लोक व्यवहार में 'नवकार मंत्र' जो गिनता है वह साधर्मिक है।

प्रश्न १०८ : साधर्मिक वात्सल्य को सब से श्रेष्ठ धर्म क्यों कहा है ?

उत्तर १०८ : साधर्मिक वात्सल्य श्रेष्ठ धर्म है क्योंकि जब प्रभु प्रतिष्ठादि में फले चुंदडी का चढ़ावा बोलकर जब हम साधर्मिक वात्सल्य करते है तब पूरा गाँव, पूरे शहर को जिमाने का लाभ मिलता है। उसमें कोई तीर्थंकर का जीव हो, कोई गणधर का जीव हो, कोई आचार्य का, कोई साधु का जीव हो और ये सब महापुरुषों के पेट में अनाज का एक कण भी जब जाता है तब हमें यह महापुरुषों के द्वारा जो धर्म होता है उनकी अनुमोदना का लाभ मिलता है।

करण, करावण, अनुमोदन का फल समान होता है। ऐसा पूजा में भी कहा है। पिता-पुत्र, पति-पत्नी, भाई बहन, सांसारिक संबंध है लेकिन साधर्मिक का संबंध धार्मिक संबंध है। इसीलिए साधर्मिक वात्सल्य सर्वश्रेष्ठ धर्म है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १०९ : साधर्मिक वात्सल्य हम कितने कितने प्रकार से कर सकते है?

उत्तर १०९ : साधर्मिक वात्सल्य हम अनेक प्रकार से कर सकते है-जैसा कि साधर्मिक को (१) अन्नपानादि देना (२) वस्त्रादि देना (३) दवाई देना (४) आर्थिक कष्टवाले को धन देना (५) धार्मिक कार्य के लिए प्रोत्साहन करना-जैसे मेरे साथ मंदिर चलो, मेरे साथ पूजा करो, उपधान करो (६) तीर्थयात्रा कराना (७) तपस्या में जुडाना इत्यादि...

प्रश्न ११० : अन्य धर्मो में अपने ही स्वधर्मीओं के लिए क्या क्या व्यवस्था है ? क्या-क्या विधान है ? हम जैन धर्मी इस दिशा में औरभी क्या-क्या कर सकते है ?

उत्तर ११० : मुसलमान धर्मवाले, क्रिश्चन धर्मवाले खुद जो पैसा कमाते है उसमें से ५% या १०% पैसे अलग रखते है । वह पैसे का उपयोग, स्वधर्मीओं को सहायता करने में लगाते है । क्रिश्चन धर्मवाले दवाई, ऑपरेशन आदि सुविधा करते है सब सुविधा बिना शुल्क करते है।

पारसी और वोरा धर्मवाले अपने स्वधर्मी बंधुओं के लिए अनेक प्रकार की योजना करते है ।

जैन धर्मी इस दिशा में निम्नलिखित कार्य कर सकते है:

(१) गेहु, चावलादि आवश्यक चीजें आधे मूल्य में देना ।

(२) साधर्मिक का मकान का किराया भरना ।

(३) साधर्मिक के लड़के जो स्कूल या कोलेज में पढ़ते है उसकी फीस भरना ।

(४) साधर्मिक जो बिमार हो गया है उसको दवाई आदि देना।

(५) जो साधर्मिक में व्यापार करने का अनुभव है लेकिन पैसा नहीं है इसीलिए व्यापार नहीं कर सकता है उसे बिना व्याज का कर्जा देना ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(६) जो घर में कोई भाई पैसा कमानेवाला नहीं है। बुढ़े और बच्चे है ऐसे घर की महिला घर में बेठकर कपड़ा की सिलाई कर सके इसीलिए उसे सिलाई मशीन देना चाहिए।

(७) महिला घर में बैठकर पापड बना सके और वह पापड साधर्मिक भाई खरीदे ।

(८) आँख का ऑपरेशन, हार्ट का ऑपरेशन आदि में आर्थिक सहायता देना । साधर्मिक भक्ति के विषय में अब काफी जागृति आई है, फीर भी बहुत कुछ करना आवश्यक है । प्रत्येक जैन को अपने व्यवसाय एवं प्रतिष्ठानों में जैन को ही लाभान्वित करने का अग्रिमता देनी चाहिए । प्रत्येक जैन धर्मी में ऐसी प्रतिज्ञा होनी चाहिए कि मैं कितना भी कष्ट पाऊँगा पर किसी की दया पर नहीं जीऊँगा । जैन हंमेशा देनेवाला होता है, लेनेवाला कभी नहीं होता है । फीर भी कर्मोदय से किसी की सहायता लेनी पड़े तो जिन की सहायता ली है उन महानुभावों का, उन संस्थाओं का ऋण कभी भूलना नहीं चाहिए । संक्षेपतः प्रत्येक जैन सबसे पहले एक जैन के लिए है अर्थात् **Jain for Jains,** जैन जैन के लिए इस सूत्र का अमल करना चाहिए ।

पंचाशकजी सूत्र में भी कहा है कि श्रावक अपने दास-दासी, पुत्र-पुत्री आदि तथा पशुधन, धान्य, धन, मकान, जमीन आदि सर्वस्व समर्पण गुरु भगवंत को करता है ।

२३. व्यवहार शुद्धि

प्रश्न १११ : कितने प्रकार के व्यवहार हो सकते है ?

उत्तर १११ : व्यवहार अनेक प्रकार का है । पिता-पुत्र का, गुरु-शिष्य का, पति-पत्नी का, राजा-प्रजा का परस्पर व्यवहार, आर्थिक व्यवहार, सामाजिक व्यवहार, राष्ट्रीय व्यवहार इत्यादि ।

प्रश्न ११२ : व्यवहार शुद्धि का मतलब यदि व्यापार शुद्धि हो तो व्यापार में आप कौनसी-कौनसी शुद्धि को आवश्यक समझते है ?

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उत्तर ११२ : व्यवहार शुद्धि का मतलब यदि व्यापार शुद्धि है तो व्यापार में नीति रखना आवश्यक है।

व्यवहार शुद्धि के प्रकार निम्नलिखित है :

(१) वजन बराबर करना। लेने के टाईम में ज्यादा लेना, देने के टाईम में कम देना ऐसा नहीं करना।

(२) जैसा माल का सेम्पल बताते है, वैसा ही माल देना।

(३) माल में हल्का माल मिलाना नहीं।

(४) राज्य का कर - टेक्स बराबर भरना।

(५) राज्य के कानून का अमल करना।

(६) चोरी का माल लेना नहीं और बेचना नहीं।

(७) नफा ज्यादा लेना नहीं।

(८) शक्य हो तब तक अल्प आरंभ-समारंभ वाला धंधा करना जैसे कपडा या चांदी का धंधा। लेकिन पंद्रह कर्मादान का धंधा करना नहीं।

प्रश्न ११३ : नैतिक एवं व्यवहारिक शुद्धिमय जीवन ही धर्म की नींव कैसे है; समजाईए।

उत्तर ११३ : व्यापार शुद्धि भी व्यवहार शुद्धि है। व्यापार शुद्धि से धन शुद्ध होता है। धन शुद्ध होने से विचार शुद्ध होता है। विचार शुद्ध होने से आचरण भी शुद्ध होता है।

मार्गानुसारी गुण में प्रथम गुण नीति है। मार्गानुसारी के ३५ गुणों की प्राप्ति के बाद ही जीव को समकित प्राप्त होता है। समकिती जीव ही श्रावक के बारह व्रत ले सकते है। श्रावक धर्म में सामायिकादि करते-करते पौषध, पौषध से उपधान और आगे बढ़कर साधु धर्म की प्राप्ति होती है। साधु धर्म के शुद्ध निरतिचार पालन के बाद अप्रमत्त चारित्र और उनके बाद ध्यान के द्वारा क्षपक श्रेणी पर आरुढ हो कर जीव केवलज्ञान मिला सकता है। मोक्ष

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

में जा सकता है। मोक्ष की नींव ही मार्गानुसारी के ३५ गुण है। उसमें प्रथम गुण न्याय संपन्न वैभव ही है। जो व्यवहार शुद्धि का कारण है।

प्रश्न ११४ : नैतिक एवं विशुद्ध व्यवहार ही विश्व के अस्तित्व का आधार है इसे युक्ति से समझाईए ?

उत्तर ११४ : समुद्र अपनी मर्यादा को लांघता नहीं है। सूर्य, चंद्र अपने समय पर खिलते है और अस्त होते है। ऋतु अपने समय से आती है, और जाती है। बारिश अपने समय में आती है। अतिवृष्टि न हो और अकाल न हो। धरती पर बिजली आदि नहीं गिरती है, भूकंप नहीं होता है। यह पूरे विश्व की व्यवस्था सुचारु रुप से चलती है उसका अगर कोई कारण है तो नैतिक एवं व्यवहारिक शुद्धिमय जीवन ही कारण है।

इतिहास की एक घटना है। चातुर्मास का समय आने पर भी बारिश का एक बुंद भी बरसता नहीं था। लोगों को धान्य, पानी, पशु को घास मिलना मुश्किल होने लगा। नदी में से पानी भी कम होने लगा।

राजा ने मंत्री से कहा : बारिश आए ऐसा कुछ करो। मंत्री ने कहा हमारे गाँव में एक व्यापारी नीति से पैसा कमाता है वह अगर आकाश के सामने देख कर प्रभु से प्रार्थना करें तो बारिस बरसेंगी। राजाने वैसा ही करने के लिए मंत्री को हुकम दिया। मंत्री ने व्यापारी को अकाल से जो संकट आया है उनकी जानकारी दी।

व्यापारी ने अपना तराजु आकाश के सामने रखकर कहा: "है बादल अगर मेंने कभी अनीति यह तराजु से नहीं किया है तो तू बरस।" इतना व्यापारी का वचनपूर्ण होने के साथ बहुत बारिश गिरी और धन-धान्य-घास से राज्य भरपुर हो गया।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

साधु-संतो का ब्रह्मचर्य, व्यापारी की नीति, राजा का न्याय, स्त्री का शियळ आदि नैतिक एवं शुद्धिमय व्यवहार ही विश्व के अस्तित्व का आधार है।

प्रश्न ११५ : अन्न का मन पर कैसा प्रभाव होता है ? समजाईए।

उत्तर ११५ : कहावत है 'जैसा अन्न वैसा मन।' नीति के धन से मन में अच्छे विचार आते हैं। अनीति का धन हमारे आचार और विचार को बुरा बनाता हैं।

प्रभु महावीर ने पुणिया श्रावक की सामायिक की प्रशंसा की थी। लेकिन एक दिन पुणिया श्रावक का मन सामायिक में स्थिर नहीं रहता है। श्राविका से पूछा : 'आज कुछ गलती हुई है क्या ?' श्राविका ने सोच कर कहा : आग जलाने के गोबर की गोबरी गलती से पडोशी के ले लिए है। मेरे गोबर की गोबरी और पडोशी के गोबर की गोबरी पास-पास में रखी थी। लेने के टाईम में ध्यान नहीं रहा और गलती से पडोशी के गोबर की गोबरी ले ली। अभि मैं उनको वापस देकर आती हूँ। आप सामायिक फीरसे कीजिए। वापस देने के बाद पुणिया श्रावक ने फिर से सामायिक किया और उनका मन एकाग्र चित्त हो गया। **'अन्न की असर मन पर होती है।'**

२४. रहजत्ता - रथयात्रा

प्रश्न ११६ : जो लोग कभी जैन मंदिर नहीं आ सकते है, उनको भगवान के दर्शन किस मौके पर होते हैं ?

उत्तर ११६ : जो कभी मंदिर नहीं जाते है ऐसे जैन या जो जैन नहीं है यह सब लोगों को भगवान का दर्शन करने का एक आदर्श मौका 'रथयात्रा' है।

इतिहास गवाही है कि जब दिल्ही में चंपाबाई श्राविकाने छह मास के उपवास किए और उनकी बहुत बड़ी रथयात्रा निकली। प्रभुजी को रथ में बिठा कर श्रावक लोग रथ को

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

चला रहे थे । बाजे-गाजे के साथ हजारों लोग चलते थे तब कभी मंदिर नहीं जानेवाला बादशाह अकबर को भगवान का दर्शन हुआ।

प्रश्न ११७ : रथयात्रा कैसे एक समूह शक्ति का विकास है ? समझाईए ?

उत्तर ११७ : एक ऐसा समय था जब मंत्र शक्ति का महत्त्व था। हमारे जैनाचार्य श्री श्रीमानतुंग शूरीश्वरजी म.सा. ने ४४ लोहे की जंजीर तोड़ कर मंत्र शक्ति का महत्त्व स्थापित किया।

एक ऐसा समय था जब संस्कृत की बहुत महिमा थी। हमारे जैनाचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकरसूरिजी म.सा. ने कविता बनायी और महाराजा विक्रम को प्रतिबोधित किया।

शास्त्र का फरमान है आज कलिकाल में संघ में शक्ति है। जब रथयात्रा नीकलती है। सब लोग एक उद्देश से, एक ढंग से समूह में सब साथ चलते है तब श्रेष्ठि, मंत्री, राजा, जैनेतर लोग आदि भी आकर्षित हो जाते है। और जानने की जिज्ञासा होती है इतने लोग एक साथ कहाँ से आये है ? कहाँ जा रहे है ? क्यों चल रहे है ? जब उनको पता लगता है कि तपस्या की रथयात्रा है तब जैनों के '**तप**' से बहुत प्रभावित हो जाते है।

लोग में भी प्रचलित है एक धागा अलग होगा तो कोई आसानी से तोड़ सकता है। अगर धागा का समूह एक गुच्छे के रुप में होगा तो कोई तोड़ नहीं सकता है।

रथयात्रा जैनों की एकता का सूचक है।

प्रश्न ११८ : प्राचीन काल की रथयात्रा की प्रेरक बातों का वर्णन लिखे।

उत्तर ११८ : प्राचीन काल की रथयात्रा बादशाह अकबर के समय में निकली थी उसकी प्रेरक बातों का वर्णन निम्नलिखित है।

जैन धर्म में पर्युषण पर्व की महिमा अपरंपार है। पर्युषण पर्व के दिन में गुरु भगवंत हमें अमारी प्रवर्तन कर्तव्य समझाते है। अहिंसक आचार्य हीर सूरीश्वरजी म.सा. का हिंसक अकबर

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

बादशाह के साथ कैसे मिलन हुआ। मिलन होने का क्या कारण हुआ। उनके पीछे क्या रहस्य था। यह सब जब हम जानने की कोशिश करेंगे तब हमें प्राचीन काल की रथयात्रा की गौरवगाथा समझ में आएँगी।

अकबर बादशाह मांसाहारी था। रोज ५०० चिडियाँ की जीभ खाता था लेकिन एक दिन अपने महल में से उन्होंने देखा हजारों लोग एक साथ जा रहे है। मंत्री से पूछा ये लोग कहां जा रहे है ? मंत्री ने कहा : बादशाह यह जैनों की रथयात्रा है। चंपाबाई श्राविका ने छह महिने के उपवास किए है। दिन में और रात में भी खाना नहीं खाती है। पानी उबालके गरम पानी को ठंडा करके पीती है। वह भी दिन में कुछ घंटो में ही। यह चंपाबाई श्राविका तपस्या का पच्चक्खाण लेने के लिये जा रही है। तप के बहुमान के लिए श्रावक और श्राविकाओं ने समूह रुप में एक बहुत बड़ी रथयात्रा निकाली है। यह सुनकर अकबर बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह ने चंपाबाई से पूछा : 'यह तपस्या आप किसके प्रभाव से कर रही हो ?' चंपाबाईने कहा : 'देवगुरु की कृपा से मैं तपस्या करती हूँ।' बादशाह ने कहा : 'देव तो दिखता नहीं है, गुरु कौन है ? और कैसे है ?' चंपाबाई श्राविका ने कहा : हमारे गुरु **आचार्य हीरसूरीश्वरजी म.सा.** है। वे स्त्री को स्पर्श नहीं करते, पैसे को, कच्चे पानी को, कोई भी सचित्त का स्पर्श नहीं करते। गाडी, मोटर, वाहन का उपयोग नहीं करते। नंगे पैर चलते है। तप करते है। त्यागी एवं ब्रह्मचारी है। बादशाह बहुत प्रभावित हुआ। दिल्ही में गुरु भगवंत हीरसूरीश्वरजी म.सा. को पधारने की विनंति की। गुरु भगवंत हीरसूरीश्वरजी म.सा. दिल्ही पधारे। गुरु म. के अहिंसा के प्रवचन सुनकर पर्युषण में अमारि प्रवर्तन कराया, बुचडखाने बंध कराये।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

यह हुआ तपस्या की रथयात्रा की प्रभावना का वर्णन, दूसरी रथयात्रा की प्रेरक बातें निम्न लिखित है।

कुमारपाल महाराजा चैत्र सुद-२ के दिन गुजरात के पाटनगर पाटण में रथयात्रा निकालते थे। पूर्व से एकत्रित जनमेदनी ने प्रभु की जय बोलते सोने के रथ में प्रभु पार्श्वनाथ को बिराजमान किये। कुमारपाल राजा सुवर्णालंकार से प्रभु की पूजा करते है, अन्य से भी पूजा करवाते है। रात्रि जागरण चलता है। सुबह में रथ राजा के महल के सिंहद्वार पर आता है। कुमारपाल राजा अष्टप्रकारी पूजा व आरती करते है। प्रभु के रथ को हाथी जोड़ा हुआ था। हाथी रथ को खींचता है। रथ पूरे नगर में घूमता है। अलग-अलग मंडपो में पूजन वगैरे होता है। रथयात्रा से बड़ी शासन प्रभावना हुई।

प्रश्न ११९ : अर्वाचीन काल में भी आयोजित ऐसी रथयात्रा का वर्णन लिखे ?

उत्तर ११९ : अर्वाचीन काल में भव्य रथयात्राका आयोजन बेंग्लोर, मद्रास, बंबई, हैद्राबाद, अहमदाबाद आदि शहरों में प्रभु महावीर के जन्म कल्याणक के दिन चैत्र सुद-१३ को होता है।

प्रभुजी के जीवन प्रसंगो के निम्नलिखित पट (फोटो) बनवाकर बैलगाडी को सुशोभित कर रथयात्रा में निकालते है।

(१) प्रभुजी को ग्वाला ने कान में खिले ठोके।

(२) चंडकौशिक नाग ने डंख लगाया।

(३) चंदनबाला ने प्रभु का अभिग्रह पूर्ण किया।

(४) दीक्षा के समय प्रभुने लोच किया।

(५) इन्द्र महाराजा ने मेरु पर्वत पर प्रभुजी का जन्म महोत्सव किया।

(६) प्रभु को केवलज्ञान हुआ।

(७) प्रभु समवसरण में बैठ कर देशना देते है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

रथयात्रा में शहर के जितने भी मंडल हो सभी अलग-अलग गाडिओं में बैठकर प्रभु का भजन, कीर्तन करते है। विविध प्रकार के वाजिंत्र बजानेवाले, बेन्ड पार्टी आगे-पीछे रहते है। पाठशाला के सेंकडो छात्र रथयात्रा में गुरु म. के पीछे-पीछे पैदल चलते है। श्रावक समुदाय भी बहुत बड़ी संख्या में गुरु महाराज के पीछे चलते है। भगवान के रथ के पीछे साध्वीजी म. और श्राविकाए चलती है। श्रीमंत लोक अपनी मोटर को सजा कर रथयात्रा में निकालते है। मध्यम वर्ग के लोक सेंकडो की संख्या में स्कूटर, साईकिल सजाकर निकालते है। सभी गाड़ी, स्कूटर, साइकिल के पर प्रभु महावीर का संदेशवाला एक बेनर लगाते है। विविध प्रकार के नृत्य करनेवाले शिर के पर सात घड़े, उसके पर छोटे बच्चे को बिठा कर नृत्य करते है। कुछ नृत्य करनेवाले हाथ मे थाली गोल-गोल घुमाते है। कुछ युवान लड़के दांडिया खेलते-खेलते चलते है। कुछ लड़के जैसे प्रभु महावीर का संदेश **'जीओ और जीने दो', 'अहिंसा परमो धर्म', 'त्रिशला नंदन वीर की जय बोलो महावीर की'** इत्यादि नारे बोलते हुए रथयात्रा में चलते है। विविध प्रकार के हाथी को अलग-अलग नूतन वस्त्र से सुशोभित कर रथयात्रा निकालि जाती है। विविध घोड़े को सजाकर छोटे बच्चे को उन पर बैठाकर एक साथ रथ में सभी जुडते है।

बहन अपने मस्तक पर मंगल कलश लीए १०८ की संख्या में शिस्त बद्ध चलती है।

शहर के जो जो मुख्य मार्ग से यह रथयात्रा निकलती है वहाँ बहने नंद्यावर्त स्वस्तिक कर मंगल करती है। प्रभुजी को बधाती है।

रथयात्रा पूर्ण होने के बाद गुरु म. प्रभु के जीवन की विशेषता, प्रभु महावीर का क्या संदेश है इत्यादि प्रवचन में सुनाते है। हमें

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

भी भगवान कैसे बनना और कैसे प्रभु के मार्ग पर हम भी चले इसके लिए गहरा चिंतन करना चाहिए ?

संवत २०३३ बंबई शहर में पूज्य गुरु भगवंत तीर्थ प्रभावक आचार्य देव श्री विक्रमसूरीश्वरजी म.सा. कि निश्रा में और (पूज्य आचार्य देव हेमचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.) पूज्य पंन्यास हेमचंद्रविजयजी कि निश्रा में समस्त भारत देश के १०८ मुमुक्षुओं के बहुमान का आयोजन चोपाटी में हुआ । धोबी तालाब से चोपाटी तक भव्य रथयात्रा निकली । श्रीमंत श्रावक, बड़े बड़े मंत्री, हजारो की संख्या में मौजुद थे । आज भी बंबई की जनता यह रथयात्रा की गौरवगाथा याद करती है ।

संवत २०४४ परमपूज्य गच्छाधिपति, प्रातः स्मरणीय आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचंद्र सूरीश्वरजी म.सा. कि निश्रा में और गुरु भगवंत आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी म.सा. कि प्रेरणा से सात संघ की एक भव्य रथयात्रा का आयोजन हुआ ।

सात संघ के नाम है : (१) वालकेश्वर तीनबत्ती बाबु अमीचंद पन्नालाल
(२) श्री सुपार्श्वनाथ जैन संघ
(३) श्रीपाल नगर
(४) चंदानबाला जैन संघ
(५) चोपाटी जैन संघ
(६) बाबुलनाथ जैन संघ
(७) विमल सोसायटी ।

प्रतिवर्ष सभी संघ पर्युषण पर्व के बाद रथयात्रा का आयोजन करते थे । लेकिन जब सभी संघोने मिलकर रथयात्रा का आयोजन किया तब बहुत बड़ी शासन प्रभावना हुई। भविष्य में प्रतिवर्ष सामूहिक रथयात्रा निकले और जैन एकता की गौरव गाथा अमर रहे ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १२० : कलकत्ता की प्रसिद्ध रथयात्रा कि विशेषताएं बताएं ?

उत्तर १२० : कलकत्ता की कार्तिक पूर्णिमा के दिन रथयात्रा निकलती है, उनकी अनेक विशेषताएं है जैसे यह रथयात्रा की प्रांरभ में इन्द्र ध्वजा आगे चलती है जो करीब चार मंजिल जितनी ऊंची होती है। कलकत्ता में ट्राम चलती है उनके इलेक्ट्रीक वायर बिजली की रस्सियाँ पहले काट ली जाती है। (तार काटे जाते हैं) फिर इन्द्र ध्वजा आगे बढ़ती है, फिर दूसरी और बिजली के तार जोड़ दिए जाते है।

यह रथयात्रा श्वेतांबर, दिगंबर आदि संप्रदाय मिलकर निकालते हैं। रथयात्रा इतनी लंबी होती है कि यदि कोई आदमी सुबह में १० बजे से देखने के लिए बैठे तो देखते-देखते शाम को ४ बज जाते है।

रथयात्रा के रथ में प्रभु **धर्मनाथ भगवान** की प्रतिमा के चमत्कार से कलकत्ता में शायद ही कोई अपरिचित होगा।

कितनी भी बारिश कार्तिक पूर्णीमा के आगे-पीछे के दिनों में आती हो लेकिन कार्तिक पूर्णिमा के दिन सुबह १० बजे से ५ बजे तक बारीश बंध ही रहती है। रथ में विराजित धर्मनाथ भगवान को सच्चे हीरे की आंगी चढ़ाई जाती है।

रथयात्रा के दोनों कोर्नर में दो-दो फूट के अंतर में आदमी झंडा लेकर चलते है। लगभग तीनसो जितने आदमी की कतार दोनों तरफ सात सात घंटे तक चलती है।

प्रभु महावीर परमात्मा को चंडकौशिक सर्प ने डंख लगाया और प्रभु महावीर की क्षमा जताने एक सुंदर दृश्य रंगीन लकड़े की कलाकृति में बताते हैं।

दूसरा दृश्य लकड़े की रंगीन कलाकृति में प्रभु महावीर के कान में खिले ठोकने का बताते है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

कलकत्ता के विविध बेन्डवाले थोड़े थोड़े अंतर में अलग अलग बाजित्र बजाते हुए रथयात्रा में चलते हैं।

विविध मंडल प्रभु भक्ति की धुन लगाते हुए चलते है।

बहने शिर पर मंगल कलश लिए विशाल संख्या में चलती है। पूरे हिन्दुस्तान से बहोत लोग रथयात्रा देखने आते हैं।

रथयात्रा की सुरक्षा के लिए पुलिस की सुंदर व्यवस्था रहती है। तुलापट्टी जैन पंचायती मंदिर से दश बजे प्रारंभ होकर रथयात्रा दादावाडी लगभग शाम को पाँच बजे पहोंचती है।

रथयात्रा में विविध प्रकार के नृत्य करनेवाले लोग नृत्य करते है। रथयात्रा में विविध घोड़े सजा कर निकालते है।

अनेक साज सज्जा से विभूषित एवं मनोहर इस रथयात्रा में भगवान **धर्मनाथ प्रभु** की पालखी, करोडपति, लखपति, श्रीमंत, श्रेष्ठी लोग अपने कंधे पर उठाते है। रथयात्रा में प्रारंभ से अंत तक प्रभुजी की पालखी श्रावक लोग भक्ति से उठाते है। चलते-चलते प्रभु धर्मनाथ का जय नाद गुँजाते है। कुछ दोहे भी चलते-चलते बोलते है।

श्रीमंत लोग को पालखी उठाते देखकर सामान्य जनता के दिल में प्रभु के प्रति बहोत ही बहुमान और भक्ति पैदा होती है।

२५. तित्थजत्ता - तीर्थयात्रा

प्रश्न १२१ : तीर्थ के कितने प्रकार है ?

उत्तर १२१ : तीर्थ के दो प्रकार है : (१) जंगम तीर्थ और (२) स्थावर तीर्थ।

प्रश्न १२२ : स्थावर तीर्थ के कितने भेद है ?

उत्तर १२२ : स्थावर तीर्थ के ६८ भेद है।

प्रश्न १२३ : हमारे सब तीर्थो का इतिहास एवं जानकारी हम कहाँ से मिला सकते है ?

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उत्तर १२३ : हमारे सभी तीर्थो का इतिहास एवं जानकारी '**तीर्थदर्शन**' पुस्तक में मिल सकती है ।

प्रश्न १२४ : तीर्थयात्रा की प्राचीन परंपरा छ'री पालित संघ यात्रा का मतलब एवं महत्त्व समझाईए ?

उत्तर १२४ : छः प्रकार के नियमों का पालन जो संघ यात्रा में है उसे छ'री पालित संघ यात्रा कहते है । वे नियमों निम्नलिखित है :

(१) पाद विहारी - पैदल चलना

(२) एकल आहारी - एकासणा करना

(३) भूमि संथारी - जमीन पर संथारा करके सोना

(४) ब्रह्मचारी - ब्रह्मचर्य पालना

(५) सचित्त परिहारी - सचित का त्याग

(६) आवश्यककारी - दो टाईम प्रतिक्रमण, व्याख्यान, श्रवण, प्रभु पूजा, सामायिकादि आवश्यक क्रिया करना।

जो आत्मा को तारे उसका नाम तीर्थ । शत्रुंजय, गिरनारजी, शिखरजी आदि और भी तीर्थ है । जहाँ तीर्थंकर भगवंत का जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण हुआ है वे स्थान भी तीर्थ कहे जाते है।

विक्रम राजाने उज्जैन से श्री शत्रुंजय महातीर्थ का छ'री पालित संघ आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी की निश्रा में निकाला । इस तीर्थयात्रा में ५००० आचार्य थे । ७० लाख श्रावक के कुटुंब थे । १,१०,१०,००० बैलगाडी, १८ लाख घोडे, १६०० हाथी, १६९ सुवर्ण के मंदिर, ५०० हाथी दांत तथा चंदन के जिनालय थे । १४ राजा भी यात्रिक थे ।

संघपति वस्तुपाल ने शत्रुंजय तीर्थ की साडे बारह संघ यात्रा निकाली थी । कुमारपाल महाराजाने भी संघयात्रा निकाली थी । जिसमें १८७४ सुवर्ण के मंदिर थे । पेथडशा के संघ में ५२ जिनमंदिर एव सात लाख यात्रिक थे ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

पूज्य गुरु भगवंत आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसूरीश्वरजी म.सा. एवं तीर्थप्रभावक पू. आचार्यदेव **विक्रमसूरीश्वरजी** म.सा. तथा पू. आचार्यदेव **नवीनसूरीश्वरजी** म.सा. की निश्रा में सिकंद्राबाद से समेतशिखर का और कलकत्ता से पालीताणा का छ'री पालित संघ निकला । उसकी जानकारी '**महासंघयात्रा स्मृति ग्रंथ**' में है ।

प्रश्न १२५ : हम कभी भी तीर्थयात्रा करे, तो हमें क्या क्या करना चाहिए ?

उत्तर १२५ : (१) हम कभी भी तीर्थयात्रा करें तो हमें हो सके तो पैदल यात्रा करनी चाहिए ।

(२) तीर्थस्थान में ब्रह्मचर्य अवश्य पालना चाहिए ।

(३) तीर्थस्थान में शक्तिअनुसार धन का दान देना चाहिए ।

(४) तीर्थस्थान में भगवान की पूजा, भक्ति, भावना ठाठ से करना चाहिए ।

(५) तीर्थस्थान में तप करना चाहिए । अंतिम समय में तो तीर्थस्थान में ही रहकर पाप की आलोचना लेकर समाधि मरण मिलाना चाहिए ।

(६) तीर्थस्थान में साधु-साध्वीजी म.सा. को आहार, वस्त्रादि बेहराना ।

(७) तीर्थस्थान में कोई क्षेत्र में घाटा है तो भरपाई करने की पूर्ण कोशिश करना ।

(८) तीर्थस्थान में सभी पाप नष्ट हो जाता है लेकिन तीर्थस्थान में किया हुआ पाप बड़ा भारी होता है ।

तीर्थस्थान में मंदिर की **८४** अशातना में से कोई अशातना, गुरु की **३३** आशातना में से कोई आशातना न हो उसका ख्याल रखना चाहिए ।

(९) रात्रि जागरण, महापूजा, स्नात्र, साधर्मिक भक्ति, श्रुत भक्ति यथाशक्ति जरुर करना चाहिए ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

२६. उवसम - उपशम

प्रश्न १२६ : उपशम के कितने प्रकार है ?

उत्तर १२६ : उपशम के दो प्रकार है : (१) औपशमिक सम्यक्दर्शन और (२) औपशमिक सम्यक्चारित्र ।

प्रश्न १२७ : उपशम के शारीरिक-मानसिक एवं धार्मिक क्या लाभ है ? लिखें ।

उत्तर १२७ : उपशम का मतलब है शांत भाव, उपशम से शरीर का स्वास्थ्य अच्छा रहता है । मन प्रसन्न रहता है और धार्मिक दृष्टि से जीव को धर्म ध्यान होता है । क्रोध मोहनीय आदि कर्म निष्फल होते हैं । और पुण्यानुबंधी पुण्य उपार्जन होता है और परंपरा से मोक्ष होता है ।

हमारा अनुभव है कि एक व्यापारी दुकान में बैठता है और ग्राहक गरम दिमाग का आता है, बोलने की भाषा उनकी अच्छी नहीं है फिर भी व्यापारी उपशम भाव में, क्षमा भाव में, शांत भाव में रहता है तो माल बेचकर पैसा कमा शकता है ।

अति गुस्सा करनेवाला आदमी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता है । पित्त प्रकृति उनकी बढ़ जाती है । खून बढ़ता नहीं है । नींद बराबर नहीं आती है, बेचैनी रहती है । मन में क्रोध, वैरादि के कारण प्रसन्नता नहीं रहती है और धार्मिक दृष्टि से जीव आर्तध्यान से कर्मबंध करता है तथा दुर्गति में भी जाना पड़ता है ।

प्रश्न १२८ : उपशम के विशिष्ट प्रतिपक्षी क्रोध से क्या-क्या हानि होती है संक्षेप में लिखिए ।

उत्तर १२८ : क्रोध और आग दोनो समान है । आग पहले स्वयं जलती है, और फिर पासवाली चीजों को भी जलाती है । उसी तरह क्रोध पहले स्वयं को ही जलाता है और फिर दूसरें लोगों को भी क्रोध कराता है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

८४ लाख x ८४ लाख वर्ष एक पूर्व अर्थात् ७०५६० अबज वर्ष ऐसे एक करोड पूर्व उसमें आठ साल कम इतना अगर कोई चारित्र पाले और अगर ४८ मिनिट गुस्सा तीव्र भाव से करें तो ज्ञानी कहते है कि सब चारित्र का फल जल जाता है।

नाव बहोत बड़ी हो लेकिन उसमें यदि छोटा सा भी छेद हो जाता है तो नाव डूब जाती है।

घास बहुत है लेकिन जलती हुई छोटी सी भी चिंगारी गिरती है तो घास खत्म हो जाता है।

हाथी बहोत बड़ा है लेकिन चींटी उसके कान में घुस जाती है तो हाथी मर जाता है। ठीक, उसी तरह से क्रोध आत्मगुणों का नाश करता है।

जो हमारे पर स्नेह रखता है उनका स्नेह क्रोध करने से नष्ट हो जाता है।

हमारा अनुभव है यदि हम परीक्षा का पेपर लिखने जाते है और यदि गुस्सा आया तो जो विषय हमें अच्छा आता है, फिर भी वो हम भूल जाते है। यदि दिमाग शांत है तो हम अच्छी तरह उत्तर लिख सकते है।

साधु भी क्रोध के कारण मर कर चंड़कौशिक सर्प बना था, यह बात प्रसिद्ध है। इस तरह से क्रोध धर्म, अर्थ और काम के सभी फलो मे बाधा डालता है। तथा मोक्ष के प्राप्ति से हमें दूर रखता है। अतः क्रोध नही करना चाहिए और उपशम भाव में रहना चाहिए।

प्रश्न १२९ : संवत्सरी रुप धार्मिक पर्व का क्या महत्त्व है; समझाईए?

उत्तर १२९ : 'कर्मग्रन्थ' शास्त्र में चार प्रकार के कषाय बताते है। यह चार कषाय हमारे आत्मा के गुणों को रोकता है जैसे –

(१) **संज्वलन कषाय :** यथाख्यात चारित्र को रोकता है। यह कषाय नाश करने के लिए देवसि और राई प्रतिक्रमण है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(२) **प्रत्याख्यान कषाय :** यह कषाय सर्व विरति चारित्र धर्म को रोकता है। यह कषाय का नाश करने के लिए पक्खी प्रतिक्रमण है।

(३) **अप्रत्याख्यान कषाय :** यह कषाय देश विरति श्रावक धर्म को रोकता है। यह कषाय को नाश करने के लिए चौमासी प्रतिक्रमण है।

(४) **अनंतानुबंधि कषाय :** यह कषाय जीव के समकित गुण को रोकता है यह कषाय को नाश करने के लिए संवत्सरी प्रतिक्रमण है। बारह महिना से ज्यादा वैरभाव किसी के प्रति अगर दिल में रहता है तो हमारा कषाय अनंतानुबंधी बन जाता है।

ज्ञानी पुरुषों का महान उपकार है कि साल में चौमासा की आराधना बतायी है। चातुर्मास में पर्युषण बताया है और पर्युषण के अंतिम दिन संवत्सरी महापर्व जिसको क्षमापना पर्व बताया है।

यह सांवत्सरीक क्षमापना करनेवाला आराधक है, नहीं करनेवाला विराधक है। क्षमा मांगनेवाला, क्षमा देनेवाला दोनों महान निर्जरा करते है।

यदि हम सांवत्सरिक क्षमापना नहीं करते है तो हमारे कषाय अनंतानुबंधी हो जाते है और यह कषाय से हम अनंत काल तक संसार में घूमते रहते है।

प्रश्न १३० : उपशम प्राप्ति के लिए क्या-क्या आयोजन व्यक्तिगत तौर पर करना चाहिए ?

उत्तर १३० : उपशम प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत यह विचार करना चाहिए कि हमें गुस्सा कौन-से कारण से आता है और वह कारण से दूर जाने की कोशिश करने से गुस्सा जरुर कम हो जाता है और उपशम भाव, शांत भाव की प्राप्ति होती है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

क्रोध आने के कारण निम्नलिखित है :

(१) दारु, सिगरेट, कडक चाय आदि व्यसन सेवन करनेवाले को गुस्सा ज्यादा आता है और व्यसन से यदि हम मुक्त हो जाते है तो उपशम भाव की प्राप्ति होती है।

(२) भूखे आदमी को गुस्सा आता है। यदि हम ऐसी कोशिश करें कि जब हम भूखे रहते है तब तक मौन रहना। खाना-खाने के बाद ही बोलना ऐसा प्रयत्न हम करेंगे तो मन में कितना भी गुस्सा आए लेकिन हम वह गुस्से को दबाने में धीरे-धीरे जरुर सफल बन सकते है। कुछ समय जाने के बाद मन में भी गुस्सा नहीं आएगा और उपशम भाव प्राप्त होगा।

(३) **'कडवा फल छे क्रोधना...'** यह सज्झाय पढ़ना, याद करना, अर्थ का चिंतन करना। साधु भगवंत भी क्रोध के कारण मर कर चंड़कौशिक सर्प बने। कषाय का परिणाम जानेंगे तो जरुर क्रोध कम होगा और शांतभाव प्राप्त होगा।

(४) जब आदमी दिन भर काम करके थक जाता है और थके हुए आदमी को कोई कुछ कह देता है तब उनको बहोत गुस्सा आता है। अगर हम ऐसा अभ्यास करे कि जब हम थके हुए है तब सो जाना। कोई कुछ भी कहे तो मौन रखना। ऐसा प्रयत्न करेंगे तो जरुर क्रोध कम होगा और उपशम भाव प्राप्त होगा।

(५) जब आदमी हार जाता है तब भी उनको गुस्सा आता है। हारना और जीतना जीवन में चलता है। अगर हारने की बात को हम ज्यादा महत्त्व न देकर मन को धार्मिक पुस्तक आदि पढ़ने में लगा देंगे तो जरुर गुस्सा कम होगा। उपशम भाव की प्राप्ति होगी।

(६) जब पति-पत्नी से कुछ अपेक्षा रखता है, पत्नी-पति से कुछ अपेक्षा रखती है, पिता-पुत्र से, पुत्र-पिता से कुछ अपेक्षा रखता है। शेठ नौकर से, नौकर सेठ से कुछ अपेक्षा रखते है और जब वह अपेक्षा पूर्ण नहीं होती है तब अपेक्षा रखनेवाले को बहुत गुस्सा

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

आता है । ऐसे समय में सोचना चाहिए कि दुनिया में जिसका जितना पुण्य होता है उतना ही उसे मिलता है । कर्म विज्ञान के हिसाब से जिसको जो चीज जितनी मिली है वह बराबर ही मिली है । मेरे मन का राजा मैं हूँ, उसके मन का राजा वह है । उनको क्या करना उनकी इच्छा । मैनें अपेक्षा रखी यह मेरी गलती है । ऐसा सोचने से गुस्सा नहीं आएगा ।

(७) ''कामात् क्रोधो जायते'' कामी आदमी की जब इच्छा पूर्ण नहीं होती है तब उसको बहुत गुस्सा आता है । इस समय में सोचना कि मुझे काम की जो इच्छा होती है वह बहोत बड़ा अपराध है । काम को वश होनेवाले ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती, सुभूम चक्रवर्ती मर कर सातमी नरक में गए । राजा रावण ने सीता के साथ बुरा काम नहिं किया था । लेकिन बूरा काम करने की इच्छा की थी तो भी वह मर कर नरक में गया। मेरी काम की इच्छा पूर्ण नहीं होती है यह मेरे लिए खुशी की बात है । मुझे ब्रह्मचर्य पालने का मौका मीला ।

२७. विवेग - विवेक

प्रश्न १३१ : जैन धर्म में कितने तत्त्व है ?

उत्तर १३१ : जैन धर्म में नौ तत्त्व है **:** जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष ।

प्रश्न १३२ : इन तत्त्वों में कैसा विवेक है ?

उत्तर १३२ : यह नौ तत्त्व में हेय, ज्ञेय और उपादेय का विवेक रखना चाहिए।

हेय : जो तत्त्व छोड़ने लायक है वह हेय है । पाप, आश्रव, बंध

ज्ञेय : जो तत्त्व जानने योग्य है इसे ज्ञेय कहते है ।

सभी तत्त्व जानने योग्य है । इसलिये नवतत्त्व ज्ञेय है ।

उपादेय : जो तत्व प्राप्त करने योग्य है उसे उपादेय कहते है । पुण्य तत्त्व संवर तत्त्व और निर्जरा तत्त्व उपादेय है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १३३ : 'अति की गति नहीं' या 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' यह सत्य किसकी एवं कैसे स्थापना करते है ?

उत्तर १३३ : कोई भी कार्य अति करने से एकांत वाद की दिशा में हम चले जाते है। 'अति की गति नहीं', 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' यह सत्य अनेकांतवाद की स्थापना करता है।

'अति सर्वत्र वर्जयेत्' कोई भी कार्य अति नहीं करना। जैसे हम खाना खाते है; लेकिन खाने का एक प्रमाण होता है। जितना खाना हजम होता है उतना ही खाना लेकिन ज्यादा खाते हो तो हमें अजीर्ण होता है, बिमार हो जाते है।

बोलने की क्रिया में एक मर्यादा होती है। कब बोलना, कितना बोलना, क्या बोलना, जो ज्यादा बोलता है उसकी कोई किमत नहीं होती है। चलना वह जीवन की एक आवश्यक क्रिया है, लेकिन आदमी दिन-रात चलते ही रहेगा तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ जायेगा।

सो जाना वह एक शरीर की आवश्यक क्रिया है लेकिन यदि वह दिन-रात या दो-तीन दिन तक सोते ही रहेगा तो वह थक जाएगा और चल भी नहीं पाएगा।

मार्गानुसारी के गुण में भी कहा है धर्म, अर्थ और काम, तीन पुरुषार्थ का परस्पर अबाधित ढंग से सेवन करना। उदाहरण -

(१) एक संसारी गृहस्थ है उसे धर्म पुरुषार्थ करना जरुरी है लेकिन अगर वह धर्म इतना ज्यादा करता है कि दुकान ही नहीं जाता है। एक पैसा भी कमाता ही नहीं है तो यह ठीक नहीं है। संसारी गृहस्थ को पैसा कमाना भी जरुरी है।

(२) एक संसारी गृहस्थ ऐसा है कि वह चौबीश घंटा पैसा कमाने में ही दिन पूरा करता है। धर्म बिलकुल नहीं करता है। पत्नी से बातचित का व्यवहार भी नहीं कर पाता है। तो यह

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

भी ठीक नहीं है क्योंकि संसारी गृहस्थ यदि बिलकुल काम पुरुषार्थ नहीं करेगा तो उनकी पत्नी अशांत होगी, अतृप्त रहेगी और ऐसा भी हो सकता है कि उसकी पत्नी परपरुष के साथ संबंध करें।

(३) एक संसारी गृहस्थ यदि चौबीस घंटा पत्नी के साथ काम पुरुषार्थ में लगा है तो वह भी ठीक नहीं है। संसार में पैसा कमाना जरुरी है। वैसे धर्म करना भी जरुरी है।

धर्म पुरुषार्थ, अर्थ पुरुषार्थ और काम पुरुषार्ष को अबाधित रुप से सेवन करना चाहिए।

प्रश्न १३४ : व्यक्तित्व के विकास में विवेक गुण का स्थान समझाईए?

उत्तर १३४ : व्यक्तित्व के विकास में विवेक गुण का बहुत महत्त्व है।

विवेक शब्द का मतलब है अलग करना। हेय और उपादेय में विवेक करना यह व्यक्तित्व के विकास के लिए है।

विवेक गुणवाले व्रजस्वामीजी का दृष्टांत प्रसिद्ध है। राज्यसभा में व्रजस्वामीजी की माता ने अपने पुत्र व्रजस्वामीजी से कहा : "लो बेटा! यह खिलौना, यह मीठाई लो, यह मेवा लो... बेटा! मेरे पास आ जाओ, बेटा!" लेकिन - ज्ञानी व्रजस्वामीजी माँ के नजदिक नहीं गए। क्योंकि माता के पास में जाऊंगा तो मुजे चारित्र नहीं मिलेगा।

राजा ने देखा माँ के पास व्रजस्वामीजी नहीं जाते है तब गुरु महाराज से कहा : 'आप व्रजस्वामीजी को बुलाओ' गुरु महाराज ने कहा देखिए, 'व्रज मेरे पास संसार की सामग्री नहीं है लेकिन जीवदया पालन करने का साधन रजोहरण है यह रजोहरण कर्म रज को हरण करता है यदि तुझे मोक्ष में जाना हो कर्म का नाश करना हो तो मेरे पास आ जाओ और रजोहरण का स्वीकार करो।' गुरु के शब्द सुनकर व्रजस्वामीजी दौड़े और रजोहरण गुरु महाराज के पास से ले लिया और राज्यसभा में

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

नृत्य किया। राजा ने न्याय दिया यह लड़का गुरु महाराज का है। संसार की सामग्री का त्याग कर मोक्ष के साधन रजोहरण मिलानेवाले व्रजस्वामी ऐसे महान, विवेकी थे।

संसार और संसार की सामग्री हेय है। मोक्ष और मोक्ष की सामग्री उपादेय है। जहाँ बोलने का समय है वहाँ नहीं बोलना और नहीं बोलने की जगह बोलना यह विवेक गुण की कमी है। वाणी में विवेक गुण का दृष्टांत तो अति प्रसिद्ध है। एक ज्योतिषीने राजाको कहाँ, मेरे बत्तीस दांत गिर गए ऐसा स्वप्न में देखां तो आप के देखते ही आपके परिवार के सभी सदस्य मर जाएँगे। राजा ने वहीं ज्योतिषी को जेल में डाल दिया।

दूसरे ज्योतिषी में वाणी का विवेक था उसने कहा : "राजन्! आपका स्वप्न बहुत अच्छा है। आपका आयुष्य दीर्घ है। आपकी आयु इतनी लंबी है कि आपके मरने के समाचार आपके परिवार के कोई भी सदस्य को कभी नहीं मिलेंगे।" राजा बहोत प्रसन्न हुआ और एक लाख सोनामहोर इनाम दिया।

वाणी के विवेक ने ज्योतिषी के व्यक्तित्व को सफलता दिलवायी।

कोई भी चीज़ कैसे लेना, कैसे देना उसमें भी विवेक की जरुरत है। स्वामी विवेकानंद को उनकी माता ने कहा : 'बेटा मुझे चाकु दो।' स्वामी विवेकानंद ने चाकु हाथ में लिया और देखा कि चाकु के आधे भाग में लकडा है आधे भाग में छुरी है। मन में सोचा यदि लकडे का भाग मैं पकडुंगा और माँ को छुरी के भाग को पकडाउँगा तो माँ के हाथ में चोट लग जाएगी। स्वामी विवेकानंद ने लकड़े का हिस्सा माँ की और आगे किया।

सिकंदर और उनके गुरु एरीस्टोटल जा रहे थे। सिकंदर पीछे चलते थे और गुरु आगे चलते थे लेकिन नदी आई। सिकंदर नदी में तेर कर किनारे पर चला गया और जोर से आवाज करके

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

कहा : 'आप भी आईए।' गुरु भी नदी में तैर कर सामने गए और सिकन्दर से पूछा, 'तुम मेरे पीछे चलते थे और मैं आगे चलता था लेकिन नदी आई तो तुम आगे तीर कर क्यों चले गए ?' सिकन्दरने कहा : 'अनजानी नदी है पानी कितना गहरा है मालूम नहीं। नदी में कैसे जलचर प्राणी है इसका हमें ज्ञान नहीं है। मैं नदी में तैरने के लिए सर्व प्रथम गया था अगर मर भी गया तो मेरे जैसे हजारो सिकन्दर दुनिया में मौजुद है। किन्तु यदि आप नदी में जाएँगे और मर गए तो विश्व में दूसरे गुरु एरिस्टोटल नहीं है। संसार में (कौटुम्बिक व्यवस्था में) भी विवेक गुण जरुरी है।

सिद्धचक्रजी के अंचित्य प्रभाव से श्रीपाल महाराजा अनेक राज्य जित कर आए है। आठ राजकुमारी के साथ शादी करके आए, घर में जब प्रवेश किया तो एक ओर माँ खडी है और धर्मपत्नी, धर्म में प्रेरणा करनेवाली धर्मपत्नी मयणा सुंदरी खडी है। वर्षो बाद मिलन हुआ है, प्रश्न है पहले माँ के पास जाना या पत्नी के पास ? विवेक गुणवाले श्रीपाल माँ के पास जाकर चरणों में गिर पडता है और मयणा सुंदरी पति के चरणों में नमस्कार करती है।

प्रश्न १३५ : देह एवं आत्मा भिन्न है 'ऐसे विवेक ज्ञान' से क्या लाभ होता है ?

उत्तर १३५ : देह एवं आत्मा भिन्न है। यह ज्ञान होने पर हम बहोत अच्छी तरह से मोक्षमार्ग की साधना कर सकते है।

शरीर को कष्ट न हो इसीलिए हम चलते नहीं है, वाहनो का उपयोग करते है। वाहनादि से जीव हिंसा होती है।

शरीर को कष्ट न हो इसीलिए हम माल, सामान,वजन आदि उठाते नहीं है। वाहनो का उपयोग करते है। वाहनों के उपयोग से जीवहिंसा होती है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

शरीर को सुख हो इसीलिए हम गर्मी में पंखे का उपयोग करते है। ए.सी. का उपयोग करते है। रेफ्रिजरेटर का उपयोग करते है उससे जीवों की हिंसा होती है।

शरीर को कष्ट न हो ईसिलिए हम ठंडी में हाथ पैर को अग्नि में तपाते है। जिससे तेउकाय जीव की विराधना होती है।

... बारीस में जब हम बहार निकलते है तो अपकाय जीव की विराधना होती है। स्वादिष्ट भोजन करने से रोग बढ़ते है। मनपसंद नहीं मिलने से द्वेष बढ़ता है। शरीर से भोगादिक, सांसारिक क्रिया से अतिराग-अतिद्वेष के परिणाम पैदा होते है। एक बार रतिक्रिया करने से दो लाख से नवलाख जीवों की हिंसा होती है।

शरीर को अच्छा मकान, अच्छे वस्त्र, अच्छा भोजन, अनुकूलता मिले इसके लिए बहोत पैसे कमाने का हम प्रयत्न करते है और पैसे कमाने के लिए हिंसा, जूठ, चोरी, माया, कलह, राग, द्वेष, मोह आदि सभी पाप करते है।

शरीर अलग है, जीव अलग है यह ज्ञान होने के बाद जीव के आठ गुण को प्रकट करने के लिए जीव प्रयत्न करता है। महामुनि गजसुकुमाल ने अपने शीर पर जलते अंगारे का समता भाव से सहन किया। शरीर का राग मोक्ष मार्ग में बड़ा बाधक है। महामुनि ने शरीर का राग छोड़ दिया था। महामुनि धन्ना अणगार ने प्रभु महावीर के पास जिस दिन चारित्र लिया उसी दिन से अभिग्रह किया, छट्ठ के पारणे आयंबिल जावज्जीव करने का पच्चक्खाण कर लिया। मक्खी भी जो आहार पर न बैठे ऐसा लुखा आहार लेते थे। छह मास में शरीर कि हड्डियाँ सब दिखने लग गई। चलते थे तब हड्डी में खड् खड् आवाज आती थी।

श्रेणिक महाराजा ने प्रभु महावीर परमात्मा से पूछा : आपके १४००० साधु में श्रेष्ठ तपस्वी कौन है। प्रभु महावीर ने कहा :

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

'धन्ना अणगार', शरीर के राग को जितनेवाले धन्ना अणगार उत्कृष्ट संयमी बने।

शरीर के राग को कम करने के लिए जीव अलग है, शरीर अलग है यह भेद ज्ञान होना जरुरी है।

२८. संवर

प्रश्न १३६ : संवर तत्त्व की व्याख्या लिखे।

उत्तर १३६ : संवत तत्त्व का मतलब है कर्मो को रोकना।

प्रश्न १३७ : संवर तत्त्व के मुख्य भेद लिखे।

उत्तर १३७ : संवत तत्त्व के मुख्य भेद छः है। उतर भेद ५७ है।

मुख्य भेद : (१) गुप्ति (२) समिति (३) धर्म (४) अनुप्रेक्षा (५) परिषहजय (६) चारित्र।

प्रश्न १३८ : संवर पूर्वक की निर्जरा ही सच्ची निर्जरा है समझाईए ?

उत्तर १३८ : एक आदमी अपने घर में से कचरा झाड़ू से साफ करता है लेकिन घर की खिड़कीयाँ दरवाजे खुल्ले है। हवा जोर से आती है। हवा के साथ नया कचरा भी कमरे में आता है, ठीक उसी तरह से एक संसारी आदमी अठ्ठाई तप करता है। तपस्या करने से आत्मा को लगे हुए कुछ कर्म नाश होते है। लेकिन संसारी व्यक्ति ने पाप व्यापार का त्याग नहीं किया है, अतः उन्हें नये कर्म मन, वचन, काया से लगते रहेंगे। लेकिन साधु भगवंत ने जीवनभर के लिए पाप व्यापार का पच्चक्खाण कर लिया है। पाँच समिति, तीन गुप्ति का पालन करते हैं। बाईस परिषह को जितते है। क्षमादि दश यतिधर्म पालते है। अनित्यादि बारह भावना भाते है। एसी महान आत्मा जिन्होंने कर्म को आने का दरवाजा बंद कर दिया है और यदि अट्ठाई करे तो उन्हें नये कर्म नहीं लगते बल्कि पुराने कर्म भी नष्ट हो जाते है। संवरपूर्वक की निर्जरा अल्पकाल में मोक्ष ले जाती है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १३९ : संवर का प्रतिपक्षी तत्त्व क्या हैं ?

उत्तर १३९ : संवर का प्रतिपक्षी तत्त्व आश्रव है।

प्रश्न १४० : श्रावक के जीवन में संवर की क्रिया क्या क्या है ?

उत्तर १४० : श्रावक के जीवन में संवर की क्रिया निम्नलिखित है :

(१) समिति गुप्ति का पालन (२) प्रातः उठकर अनित्यादि बारह भावना भाना (३) कायोत्सर्ग करना (४) शास्त्रकारों ने कहा है कि आनंद कामदेवादि श्रावक रातभर काउस्सग्ग ध्यान में रहते थे और मिथ्यात्वी देवों के उपसर्ग परिषहों को समता से सहन करते थे। बार-बार सामायिक करना (५) पर्वतिथि में यथाशक्य पौषध करना।

२९. भाषा समिति

प्रश्न १४१ : निरवद्य भाषा बोलने का तरीका क्या है ?

उत्तर १४१ : निरवद्य का मतलब है पाप रहित भाषा।

श्रावक को झूठ नहीं बोलना चाहिए क्योकि जूठ बोलनेवाले पर कोई विश्वास नहीं करते हैं। शास्त्र में ५ बड़े झूठ बताए हैं वह निम्नलिखित है।

(१) **कन्या संबंधी झूठ :** उदाहरण : जैसे लड़की बड़ी हो गई है उम्र पच्चीस साल की है और यदि हम ऐसा कहे कि कन्या की उम्र अठारह साल की है तो वह बड़ा झूठ है उसका श्रावक को त्याग करना चाहिए।

(२) **गाय संबंधी झूठ :** जैसे गाय दूध कम देती है लेकिन ज्यादा देती है ऐसा कहना। गाय की उम्र ज्यादा है और कम कहना। गाय कमजोर है और बलवान है कहना, ऐसा झूठ श्रावक को नहीं बोलना चाहिए।

(३) **भूमि संबंधी झूठ :** जैसे भूमि पर फसल कम होती है और फसल ज्यादा होती है भूमि कम एकर है लेकिन ज्यादा एकर कहना ऐसा झूठ श्रावक को नहीं बोलना।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(४) **न्यासापहरण :** कोई व्यक्ति एक लाख रुपये देकर कहता है कि रुपिये की रक्षा करना । मैं महिने के बादमें आकर ले जाऊँगा । एक महिने के बाद वह आया तो उसे कहना तू कौन है मैं पहचानता नहीं हूँ । तुमने मुझे कुझ दिया नहीं है । मैंने तुम्हारे से कुछ लिया नहीं है ऐसा झूठ श्रावक को नहीं बोलना।

(५) **साकार मंत्र भेद :** किसी की गुप्त बात को प्रगट करना। झूठी गवाही अदालत में देना यह बड़ा झूठ है। ऐसा झूठ भी श्रावक को नहीं बोलना चाहिए ।

बोलने के समय साधु-साध्वीजी को मुहपत्ति का उपयोग रखकर बोलना चाहिए और श्रावक-श्राविका जब सामायिक और पौषध में है तब उनको भी मुहपत्ति का उपयोग रखना चाहिए। जब श्रावक-श्राविका सामायिक या पौषध में नहीं है तब उनको बोलने के समय रुमाल या हाथ का उपयोग रखना चाहिए । यह निरवद्य भाषा बोलने का तरीका है ।

प्रश्न १४२ : समझदार एवं धार्मिक आत्मा की भाषा कैसी होनी चाहिए ?

उत्तर १४२ : समझदार एवं धार्मिक आत्मा की भाषा निम्नलिखित होती है :

(१) भाषा सच्ची होती है झूठी नहीं होती है ।

(२) भाषा प्रिय होती है कटु नहीं होती है । सामनेवाले को दुःख हो ऐसा नहीं बोलना चाहिए ।

(३) गुस्से से नहीं बोलना, गुस्से से बोला हुआ सत्य वचन का परिणाम अच्छा नहीं होता है ।

(४) भाषा में अपशब्द नहीं होना चाहिए । विचार किए बिना नहीं बोलना ।

(५) मितभाषी बनना चाहिए ।

(६) सामायिक, पौषध में मुहपत्ति का उपयोग रखकर बोलना चाहिए ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १४३ : यद्यपि भाषा समिति का समावेश संवर तत्त्व में हो जाता है फिर भी स्वतंत्र रुप से कर्तव्य क्यों गिनाया ?

उत्तर १४३ : यद्यपि भाषा समिति का समावेश संवर तत्त्व में हो जाता है फिरभी कलिकाल में लोग अज्ञानी है, और वक्र है। बोलने का व्यवहार बहुत बढ गया है। बार-बार बोलना पड़ता है। ज्यादा बोलना पड़ता है। इसीलिए 'भाषा समिति' की महत्ता बताने के लिए 'मन्ह जिणाणं' सज्झाय में भाषा समिति को कर्तव्य रुप में अलग बताया है।

प्रश्न १४४ : पू. साधु-साध्वीजी म.सा. भाषा के दोष से बचने के लिए कौन-कौन से शब्द का प्रयोग करते है ?

उत्तर १४४ : भाषा समिति के दोष से बचने के लिए साधु-साध्वीजी म.सा. निम्नलिखित शब्द का प्रयोग करते है।

(१) **वर्तमान जोग :** यदि श्रावक पू. साधु-साध्वीजी म.सा.को आहार-पानी के लिए विनंती करेंगे और कहेंगे की - महाराज साहेब ! कल मेरे घर आप जरुर आना। गुरु भगवंत यदि 'हाँ' कहे और कोई कारणवश न आ सके तो भाषा समिति का दोष लगता है। 'ना' कहे और अगर जाने की अनुकूलता हो और आ गए तो भी दोष लगता है। इसीलिए साधु भगवंत कहते है 'वर्तमान जोग' जो वर्तता योग होगा उस अनुसार हम देखेंगे।

(२) **जहा सुक्खं :** पौषध मे रहे श्रावक-श्राविका गुरु भगवंत की आज्ञा लेकर एकासणा करने जाते है या मंदिर जाते है। तब गुरु भगवंत "हा जाओ" अथवा "मत जाओ" इस प्रकार नहीं कहते। श्रावक को इर्यासमिति आदि पालने का अभ्यास नहीं है और चींटी आदि कोईभी जीव की विराधना करे तो हमारी संमति अनुमोदना के पाप की भागी बनती है। 'ना' कहे तो एकासणादि का अंतराय लगता

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

है। इसीलिये गुरु भगवंत कहते है : 'जहा सुक्ख' आपको जैसे सुख हो ऐसा करें।

(३) **पुणो वि कायव्वो :** 'सामायिक पारु' का आदेश जब श्रावक मांगते है तब गुरु महाराज 'पारो' ऐसा नहीं कहते है क्योंकि पारने के बाद पाप व्यापार शुरु होगा। गुरु भगवंत कहते है आपने सामायिक किया वह बार बार करने योग्य है।

(४) **आयारो न मोत्तव्वो :** 'सामायिक पार्यु' का आदेश जब श्रावक मांगते है तब गुरु महाराज कहते है आयारो न मोत्तव्वो आचार को छोड़ना नहीं चाहिए।

प्रश्न १४५ : बड़े महान साधु संत जहाँ जो बोलते है वैसा ही होता है उसका कारण क्या है ?

उत्तर १४५ : बड़े साधु-संत भविष्य में 'ऐसा होगा' एसा वाक्य कभी बोलते ही नहीं है। लेकिन स्वाभाविक मुँह से भविष्य संबंधी बात निकल गई तो वह सत्य होकर ही रहती है जो आदमी कभी झूठ नहीं बोलता है उनकी आत्मा में सत्य के संस्कार गाढ़ बन जाते है। सत्य के संस्कार से युक्त भाषा सत्य ही होती है।

संसारी व्यक्ति पैसे के लिए धंधे में बार-बार झूठ बोलती है। पैसे के प्रति राग के कारण झूठ बोलने की आदत हो जाती है और वह झूठ बोलने में झूठ के संस्कार आत्मा में दृढ हो जाते है। साधु-संत में स्वार्थ नहीं होता है। राग-द्वेष बहुत अल्प हो गए होते है। इसीलिए भविष्य संबंधी उनकी सहजता से निकली हुई वाणी सत्य ही होती है।

३०. छह काय के जीवों की करुणा-छज्जीवकरुणा

प्रश्न १४६ : षड्जीवनिकाय कौन-कौन से है ?

उत्तर १४६ : (१) पृथ्वीकाय (२) अप्काय (३) तेउकाय (४) वाउकाय (५) वनस्पतिकाय (६) त्रसकाय ये षड्जीवनिकाय है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १४७ : षड्जीवनिकाय का विज्ञान किस धर्म की विशेषता है ? क्यों ?

उत्तर १४७ : षड्जीवनिकाय का विज्ञान जैन धर्म की विशेषता है । अहिंसा की बात बहोत धर्मवाले करते है लेकिन अहिंसा को आचरण में जितने सूक्ष्म ढंग से जैनो ने उतारी है वैसी कोई अन्य धर्म में नहीं दिखती है ।

जैन धर्म में प्रथम पांच जीवनिकाय को सिर्फ एक इन्द्रियवाला कहा है और वह एक इन्द्रिय स्पर्शेन्द्रिय ही है ।

जीवनिकाय का छट्ठा भेद त्रसकाय है। त्रसकाय के चार भेद है : बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय ।

जैन धर्म की विशेषता है कि बेइन्द्रिय जीव जैसे - कृमि को चमडी और जीभ हो होगी और उससे स्पर्श और रस का ज्ञान होगा। ऐसा कभी नहीं हो सकता है कि एकेन्द्रिय को कोई भी एक इन्द्रिय - सिर्फ कान है। ऐसा कभी नहीं हो सकता है कि बेइन्द्रिय को कान और चक्षु इन्द्रिय है।

जैन धर्म के आगमो में स्पष्ट फरमाया है कि इन्द्रियों के क्रम : (१) स्पर्शनइन्द्रिय - चमडी (२) रसेन्द्रिय - जीभ (३) घ्राणेन्द्रिय - नाक (४) चक्षु इन्द्रिय - आँख (५) श्रोतेन्द्रिय - कान है।

एकेन्द्रिय को सीर्फ चमडी, बेइन्द्रियो को चमडी और जीभ, तेईन्द्रिय को चमडी, जीभ, नाक, चउरिन्द्रिय को चमडी, जीभ, नाक, आँख, पंचेन्द्रिय को चमडी, जीभ, नाक, आँख और कान।

नियत जीव को नियत इन्द्रिय का संशोधन स्वरुप ज्ञान सिर्फ जैन आगमो में ही है। और यह जीवों के प्रति दया कैसे पालना इसकी व्यवस्था भी जैन धर्म में है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १४८ : संपूर्ण करुणामय जीवन व्यतीत करने के लिए क्या-क्या करना चाहिए ?

उत्तर १४८ : संपूर्ण करुणामय जीवन व्यतीत करने के लिए साधु धर्म पालना आवश्यक है । क्योंकि संसार में रहकर श्रावक कितना भी धर्म करे, बारह व्रत स्वीकार करें। सामायिक प्रतिक्रमणादि करें लेकिन 'श्रावक का धर्म सवा विसा' शास्त्र में फरमाया है । अर्थात् एक रुपिये का यदि बीस आना गिनो तो सवा आना धर्म श्रावक का है और संपूर्ण बीस आना धर्म साधु का है ।

करुणामय जीवन व्यतीत करने में श्रावक को दो बड़ी समस्या है: (१) पैसा कमाना (२) रसोई करना ।

(१) **पैसा कमाना :** संसार में जो व्यक्ति रहता है उनको पैसा कमाना ही पड़ता है। पैसे कमाने में झूठ, हिंसा, चोरी, माया आदि बहुत पाप करना पड़ता है ।

(२) **रसोई बनाना :** रसोई बनाने में अप्काय, तेउकाय, वनस्पतिकाय आदि जीवों की हिंसा होती है । यदि श्रावक खुद रसोई नहीं भी करे लेकिन रसोई बनाने की अनुमोदना के पाप का वह भागीदार है ।

अनंत उपकारी प्रभु महावीर का यह एक महान उपकार साधु भगवंत पर है कि प्रभु ने विहार और घर-घर से निर्दोष गोचरी द्वारा साधु के जीवन निर्वाह का फरमान किया। जिससे साधु सर्व पापों से मन, वचन, काया से करण, करावण, अनुमोदन से जिंदगी भर तक बच सके। अतः संपूर्ण करुणामय जीवन जीने के लिए साधु बनना पड़ता है।

प्रश्न १४९ : जीव के सुख-दुख, जन्म-मरण तो अपने अपने कर्म से ही होते है तो हमें करुणा रखने से या न रखने से क्या फर्क पड़ता है ?

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उत्तर १४९ : जीव को सुख-दुःख, जन्म-मरण अपने कर्म से ही मिलते है यह बात सही है। हमें करुणा रखने से या न रखने से फर्क पड़े या न पड़े किन्तु दुःखी के दुःख को देखकर हम करुणा नहीं लायेंगे, तो हमारी आत्मा के परिणाम कठोर बन जाएँगे । जीवदया पालते पालते हमारी आत्मा के परिणाम को कोमल बनाना है । 'नमुत्थुणं' सूत्र में अरिहंत परमात्मा के दो गुण का वर्णन है ।

(१) **पुरिससीहाणं :** भगवान शेर जैसे कठोर (शूरवीर) है। स्व या पर देव संबंधी, पशु संबंधी, मनुष्य संबंधी कितने भी कष्ट उपसर्ग आए प्रभु ने शेर जैसे कठोर (शूरवीर) होकर बरदास्त किया।

(२) **पुरिसवर पुंडरीयाणं :** भगवान स्व के लिए कठोर थे । किन्तु दूसरें जीवों को मेरे निमित्त से जरा भी कष्ट न हो ऐसा महान दयाभाव भगवान में था । इसीलिए प्रभु कमल जैसे कोमल थे।

जीव को सुख-दुःख कर्म के अनुसार मिलता है यह वाक्य का प्रयोग खुद के लिए करना और गरीब, रोगी को देखके दयाभाव लाना यह प्रभु अरिहंत ने खुद के लिए शेर जैसे और दूसरों के लिए कमल जैसे जीवन व्यतीत कर बताया ।

प्रश्न १५० : जहाँ एक जीव दूसरे जीव को अपना भक्ष्य समझता है, वहाँ हमें किस की करुणा करनी चाहिए ? क्यों करनी चाहिए ?

उत्तर १५० : एक जीव दूसरे जीव को भक्ष्य समजता है वहाँ हमें भक्ष्य जीव की करुणा करनी चाहिए। जैसे कुत्ता बिल्ली को पकडकर ले जाता है तो हम बिल्ली के प्रति दया भाव नहीं लाते है या छुडाते नहिं है या छुडाने की कोशिश नहीं करते है तो हमारी आत्मा में रहा हुआ दयाभाव का परिणाम धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है, इसीलिए हमें भक्ष्य जीव की करुणा करनी चाहिए।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

३१. धम्मियजण संसंग्गो - धार्मिक जन संसर्ग

प्रश्न १५१ : मनुष्य के स्वभाव पर सबसे अधिक प्रभाव किसका होता है?

उत्तर १५१ : यदि कोई ऐसे पूछे कि मन को एकाग्र करने के लिए क्या-क्या करना ? मन में बुरे विचार आते है। उनको रोकने के लिए क्या करना ? जीवन में कभी हताश हो जाते है तो क्या करना ?

सौ सवाल का एक जवाब है 'धार्मिक जन संसर्ग'। यदि हम साधु भगवंत का सत्संग करते है तो सब समस्या का समाधान हो जााता है। पारसमणि का संपर्क लोहे के साथ होता हैं तो सोना हो जाता हैं। ठीक वैसे ही सत्संग से जीव ही शिव बन जाता है। इसीलिए कहा गया हैं कि - "मनुष्य के स्वभाव पर सर्वाधिक प्रभाव संसर्ग का होता हैं।"

प्रश्न १५२ : धार्मिक जनों का संसर्ग करने के लिए हम में कौनसी योग्यता होनी चाहिए ?

उत्तर १५२ : धार्मिक जनों का संसर्ग करने के लिए हम में विनय, विवेक, समर्पण आदि गुण अत्यावश्यक होते हैं।

गुरु भगवंत को वंदन करना, आहार-पानी-औषधि आदि वहोराना। उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना तथा गुरु आज्ञापालन के लिए जीवन अर्पण के लिए भी तैयार रहना।

प्रश्न १५३ : धार्मिक जन के लिए शास्त्रों में और कौन से शब्द हैं ? वर्णन कीजिए।

उत्तर १५३ : धार्मिक जन के लिए शास्त्र में 'साधर्मिक' शब्द हैं। साधु भी अपेक्षा से श्रावक का साधर्मिक हैं। यहाँ पर प्रवचन साधर्मिक समझना अर्थात् साधु और श्रावक दोनों में एक समान धर्म हैं। प्रवचन द्वादशांगी दोनों की समान हैं।

दूसरा शब्द हैं 'कल्याण मित्र'। धर्म के कार्यो जैसे-जिनदर्शन, गुरुवंदन, तीर्थयात्रा आदि में प्रेरणा करें वह कल्याण मित्र।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १५४ : सत्संग ही मोक्षमार्ग हैं ? समझाईए ।

उत्तर १५४ : सज्जन, गुणी और धार्मिक पुरुष का संग ही मोक्ष जाने का राजमार्ग हैं ।

प्रायः सभी जीव ऐसे होते हैं, जो सत्संग के प्रभाव से ही प्रगति करते हैं ।

प्रभु महावीर की आत्मा का प्रथम भव में मुनि महात्मा ने बोधि की प्राप्ति कराई थी और वही जीव गुणों में आगे बढ़ते हुए परमात्मा महावीर बने । यह सब सत्संग का ही प्रभाव हैं । आदिनाथ प्रभु ने भी धना सार्थवाह के भव में आचार्य धर्मघोषसूरिजी को घी वहोराते हुए वरबोधि प्राप्त किया था । द्दढप्रहारी, चिलाती पुत्र, इन्द्रभूति गौतम, इलाचीपुत्र आदि हजारों द्दष्टांत से हम जान सकते है कि सत्संग का कैसा प्रभाव हैं ? विशेष जिज्ञासावाले "त्रिषष्ठि शलाका पुरुष चरित्र" से जान सकते हैं ।

प्रश्न १५५ : क्या सत्संग में शास्त्रश्रवण की प्रधानता हैं ? अगर हैं तो समझाईए !

उत्तर १५५ : मानव-सज्जन या दुर्जन प्रायः संगत के कारण ही बनता हैं। शास्त्र में एक बहोत सुंदर द्दष्टांत हैं : रोहिणीया चोर जो कि कभी भी भगवान की वाणी सुनने में न आए इसका पूरा ध्यान रखता हैं। वह रास्ते में चलते-चलते एक दिन भगवान के समवसरण के नजदीक आया । भगवान के शब्द कही कान में चले न जाए इसीलिए रोहिणीया ने दोनों कान में अंगुली डाल कर बंधकर आगे चलने लगा । चलते-चलते पाँव में कांटा लगा । कांटा निकाले बिना चलना मुश्किल हो गया, यदि कांटा निकालने के लिए कान में से अंगुली निकाले तो प्रभु के शब्द सुनाई देंगे । अब क्या करें? अंत में कान में से अंगुली निकालकर कांटा निकालना ही पड़ा। किंतु उतने समय में ही प्रभु के वचन सुनाई दिए कि- "**देव**

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

की परछाई नहीं होती ।" "देव के गले में रही हुई पुष्पमाला कभी नहीं मुरझाती ।", "देव पलक नहीं झपकते" - कांटा निकालकर रोहिणीया ने फिरसे कान बंद कर दिए । घर जाकर सो गया ।

इधर राजगृही नगरी में रोज चोरियाँ होती थी । महामंत्री अभयकुमार को रोहिणीया चोर पर शक था लेकिन किसी सबूत के बिना कैसे पकड़े ? अभयकुमार को एक युक्ति सुझी। रोहिणीया को सोते हुए ही उठाकर ले जाया गया। सुबह उठते ही वह देखता हैं कि वहां तो स्वर्ग जैसा वातावरण हैं । देव-देवियाँ उसे प्रणाम कर रहे हैं, संगीत चल रहा हैं । तभी एक वृद्ध व्यक्ति आकर कहता हैं - "हे देव ! यह स्वर्गलोक हैं । मै चित्रगुप्त हूँ । मेरा कार्य पुण्य-पाप का हिसाब रखना हैं । आपने क्या पुण्य और पाप किया ? आप मुझे बतलाइए ।" रोहिणीया को प्रभु के तीनों वाक्य याद थे । उसने वहाँ के सभी व्यक्तियों का निरीक्षण किया तब उसे निश्चय हो गया कि ये सच्चा स्वर्ग नहीं हैं, बल्कि मुझे फँसाने की कोई चाल लगती हैं । भगवानने कहा था, 'देव के गले की पुष्पमाला मुरझाती नहीं है ।' लेकिन यहाँ तो सभी के गले की पुष्पमाला मुरझाई हुई हैं । भगवान ने कहा था कि, 'देव आंख की पलक नहीं झपकते', यहाँ तो आंख की पलक झपकती है । भगवान ने कहा था कि, 'देव की परछाई नहीं होती', यहाँ तो सभी की परछाइ भी है । इसीलिए रोहिणीया कहने लगा "मैंने आजीवन धर्म-दान-तप ही किया है । कभी अधर्म का आचरण नहीं किया । तुम ही सोचो यदि पाप करता तो स्वर्ग में कैसे आता।" यह सुनकर अभयकुमार कहते हैं "तुम बहुत बुद्धिमान हो ।" तब रोहिणीया कहता हैं "यह प्रभु की वाणी का प्रभाव हैं । सब परमात्मा के

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

वचन श्रवण की महिमा हैं ।" अंत में वह संयम ग्रहण कर के साधु बन गया ।

३२. करण दमो - इंद्रिय संयम

प्रश्न १५६ : इंद्रियदमन का क्या अर्थ हैं ?

उत्तर १५६ : इंद्रियदमन अर्थात् इंद्रियों को वश में रखना । अनुकूल विषय मिलने पर राग नहीं करना तथा प्रतिकूल विषय मिलने पर द्वेष नहीं करना । उदाहरण निम्नलिखित है ।

	इन्द्रिय	विषय	अनुकूल	प्रतिकूल
(१)	स्पर्शेन्द्रिय (त्वचा)	स्पर्श	कोमल	कठोर
(२)	रसनेन्द्रिय (जीभ)	रस	मधुर	कटु
(३)	घ्राणेन्द्रिय (नाक)	गंध	सुगंध	दुर्गंध
(४)	चक्षुरेन्द्रिय (आँख)	रुप	श्वेत	कृष्ण
(५)	श्रोतेन्द्रिय (कान)	शब्द	प्रशंसा	नींदा

प्रश्न १५७ : क्या मानव को अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं करनी चाहिए ?

उत्तर १५७ : दुःख का मूल पाप हैं । पाप का मूल इच्छा हें । जैस-जैसे इच्छा बढ़ती हैं, वैसे-वैसे दुःख भी बढ़ता हैं । आवश्यक वस्तुओं की इच्छा स्वाभाविक हैं, किंतु अनिवार्य वस्तुओं के अलावा हमें बंगला, गाडी, फर्नीचर आदि कि इच्छा होती हैं। ऐसी इच्छाओं को हमे त्याग करना चाहिए ।

प्रश्न १५८ : क्या दमन करने से आत्मा वासना से मुक्त हो सकता है ?

उत्तर १५८ : इन्द्रियों का दमन करने से जीव वासना से मुक्त जरुर हो सकता है । शास्त्र में वासना को काबू में रखने के लिए और ब्रह्मचर्य पालने के लिए नौ नियम है :

(१) स्त्री, नपुंसक रहित स्थान में रहना ।

(२) स्त्री के साथ एकांत में बात नहीं करना ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(३) जो स्थान पर स्त्री बेठी हो वह स्थान पर ४८ मिनिट तक नहीं बैठना ।

(४) स्त्री के अंगोपांग देखना नहीं ।

(५) भूतकाल में किए हुए बुरे कार्य याद नहीं करना ।

(६) कोई बुरा कार्य करता है तो दीवार के पीछे रहकर देखना या सुनना नहीं ।

(७) अधिक आहार करना नहीं ।

(८) भारी खुराक लेना नहीं ।

(९) शरीर की शोभा नहीं करना ।

प्रायः यह सभी नियमों का पालन वही व्यक्ति कर सकेगी जिसने अपनी इन्द्रियों का दमन किया होगा । और इन्द्रियों का दमन करनेवाला ही वासना से मुक्त होगा ।

प्रश्न १५९ : नमन के बाद एवं शमन के पूर्व दमन का क्या स्थान हैं ?

उत्तर १५९ : (१) नमन (२) दमन (३) शमन ।

'जीवन जीने की कला, इन्द्रियों को जीतने की कला और कषायों पर विजय मिलाने की कला है यह त्रिपदी ।'

(१) **नमन :** प्रातः उठकर मंदिर में भगवान को नमन करना। मंदिर के नजदीक में उपाश्रय हो तो गुरु महाराज को नमन करना । माता-पिता को रोज नमन करना । पति को रोज नमन करना । नमन करने से विनय गुण प्रकट होता है । विनय गुण से ज्ञान की प्राप्ति होती है। ज्ञान से चारित्र की प्राप्ति होती है ।

(२) **दमन :** पाँच इन्द्रियों के अनुकूल विषय में राग नहीं करना। प्रतिकूल विषय में द्वेष नहीं करना, ऐसा करने से इन्द्रियों का दमन होता है ।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(३) **शमन :** इन्द्रियों का दमन होने के बाद कषाय शांत हो जातें हैं। कर्म विज्ञान में कहा है कर्म आठ है, लेकिन मुख्य कर्म मोहनीय है। यह मोहनीय कर्म जीव को रागी, द्वेषी, क्रोधी, मानी, मायावी, लोभी बनाता है। लेकिन जो महान व्यक्ति ने प्रभु को, गुरु को नमन किया है इन्द्रियों का दमन किया है वह कषायों को शांत करने में विजयी बनता है। कषाय शांत होने के बाद जीव केवलज्ञानी होकर मोक्ष में जाता है।

प्रश्न १६० : आज के अति भौतिकवादी वातावरण में इन्द्रिय दमन के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?

उत्तर १६० : **भौतिकवाद आज कितना भी हो लेकिन यदि हम इन्द्रिय दमन करना चाहते है तो हम आसानी से इन्द्रिय दमन कर** सकते हैं। भौतिक वासना को बढ़ानेवाले माध्यम (१) टी.वी, सिनेमा, नाटकादि से दूर रहना। (२) व्यसन का सेवन करना नहीं। (३) डिटेक्टीव (खुपिया) किताब पढ़ना नहीं। (४) बुरे मित्रों का संग करना नहीं। (५) गुरु भगवंत का सत्संग करना, वाणी सुनना। (६) कल्याण मित्र का संग करना। (७) मंदिर हमेशा जाना - प्रभु पूजादि करना (८) सामायिकादि आवश्यक क्रिया करना (९) यथाशक्ति तप करना (१०) जाप, ध्यान में मस्त रहना। ये दश कारणों से इन्द्रिय दमन हो सकता है।

३३. चरण परिणामो - चारित्र के परिणाम

प्रश्न १६१ : मोक्ष का मार्ग क्या है?

उत्तर १६१ : सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्ग : श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र मोक्ष का मार्ग है।

(१) वीतरागी देव, महाव्रतधारी गुरु एवं अहिंसामय जैन धर्म के ऊपर श्रद्धा रखना।

(२) शास्त्र का ज्ञान मिलाना, नवतत्त्व का ज्ञान मिलाना।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(३) सामायिक, पौषध, उपधान और साधु धर्म का पालन करना यह चारित्र है।

प्रश्न १६२ : श्रावक जीवन का आदर्श क्या है ?

उत्तर १६२ : (१) श्रावक जीवन का प्रथम आदर्श है साधु बनने की तीव्र तमन्ना।

(२) श्रावक के बारह व्रत ग्रहण करना और निरतिचार पालन करना।

(३) यदि कोई व्रत नहीं ले सकता है तो देव-गुरु-धर्म को संपूर्ण समर्पित हो जाना।

देव-गुरु धर्म के प्रति वफादार बनना, शास्त्र और गुरु के वचन को पालने के लिए प्राण देने तक की तमन्नावाले बनना, दृढ सम्यग्दृष्टि बनना, संसार में रहते हुए भी प्रायः ब्रह्मचारी बनना, ब्रह्मचर्य नहीं पाल सकेतो भी छ अट्ठाई के पर्व में अवश्य ब्रह्मचर्य पालना, ब्रह्मचर्य ही पालने योग्य है, वह ही मेरा सुख का साधन है और भोग-सुख पाप का साधन है ऐसा मानना। मार्गानुसारी के ३५ गुण जीवन में उतारना।

(४) श्रावक के दिनकृत्य, पर्वकृत्य, वार्षिक कृत्य गुरु भगवंत से समझकर यथाशक्ति जीवन में उतारने।

प्रश्न १६३ : चरण (चरित्र) के परिणाम कि वृद्धि के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

उत्तर १६३ : चरित्र के परिणाम की वृद्धि के लिए बार-बार सामायिक करना चाहिए। कम से कम पर्व दिन में पौषध करना चाहिए। उपधान करना चाहिए और साधु बनने की भावना रखनी चाहिए। साधु धर्म मिल जाने के बाद हंमेशा स्वाध्याय में लीन रहना चाहिए। गुरु के मुख से नया सूत्र और अर्थग्रहण करना, याद किए हुए सूत्र और अर्थ ग्रहण करना, नहीं समज में आया वह पूछना, याद किए

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

सूत्र और अर्थ का पुनरावर्तन करना, चिंतन करना, सूत्र के अनुसार आहार-विहार-निहार करना, आवश्यक क्रिया शुद्ध करना, पांच महाव्रत की २५ भावना भाना। साधु दिन चर्या के बताए रास्ते पर चलने से चारित्र के परिणाम की वृद्धि होती है।

प्रश्न १६४ : वर्तमानकाल में जैन साधुओं के उत्तम चरण आचरणों को समझाईए।

उत्तर १६४ : डबल ग्रेज्युएट इन्जीनीयर, सी.ए., एम.बी.बी.एस. पढ़े हुए और आज के काल में भी करोडोपति श्रीमंत व्यक्ति अपने सुख के साधन को छोड़कर प्रभु महावीर के बताये हुए चारित्र धर्म का स्वीकार करते हैं। महान साधु धर्म के उत्तम चरण-आचरण निम्नलिखित है।

(१) भारतदेश में १८ स्टेट है और भारत देश में ६८ तीर्थ है। ऐसे तीर्थो में सौ साल, पाँचसो साल, हजार साल और हजारों साल पुरानी प्राचीन प्रतिमा है। शिलालेख है। ऐसे कई प्राचीन तीर्थो का जीर्णोद्धार वर्तमान काल में हमारे त्यागी साधु भगवंतो की प्रेरणा से हो रहा है। तीर्थ स्थान की भव्यता को देखकर आज भी आम जनता झूक जाती है।

(२) प्रभु महावीर के समय में साधु भगवंत पैदल चलते थे लेकिन आज २५०० से अधिक साल के बाद जैन साधु अपने सिद्धांत पर दृढ है। आज भी हिन्दुस्तान के छोटे-छोटे गाँव में विहार करके (पैदल चलकर) जाते हैं। प्रभु महावीर स्वामी के बताये हुए अहिंसा, ब्रह्मचर्य और त्याग का महत्त्व समझाते हैं। लोगों को व्यसन से मुक्त करते है।

(३) आज मौजमस्ती के साधन दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे है। टी.वी., व्ही.डी.ओ., रेडिओ, चैनल, नाटक आदि वैभव-विलास को प्रेरित करनेवाले साधनो बढ़ते जाते हैं। ऐसे समय में व्यक्ति को अपने संस्कार को टिकाने के लिए आध्यात्मिक

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

स्थान की जरूरत है। आध्यात्मिक व्यक्ति को सत्संग की जरूरत है। आध्यात्मिक ज्ञान जिससे प्राप्त हो सके वेसे पुस्तक की जरूरत है। जैन मंदिर, जैन उपाश्रय आध्यात्मिक स्थान है। त्यागी, ब्रह्मचारी जैन साधु आध्यात्मिक व्यक्ति है। जैन शास्त्र अध्यात्म प्रदान करनेवाला महान आगम है।

(४) प्रभु महावीर के निर्वाण के २५०० से अधिक साल बीत गए फिर भी आज भी जैन साधु प्रभु महावीर के निष्परिग्रहता व्रत को अच्छि तरह पालते है। आज भी जैन साधु पैसा, सोना, चांदी, हीरा, जवेरात रखते नहीं है। कोई मकान, दुकान पर अपनी मालिकी रखते नहीं है। आज विदेश के लोक तो यह बात से बड़े आश्चर्य चकित हो जाते है कि क्या बिना पैसे भी जीनेवाले आदमी भारत में है।

(५) जैन साधु-साध्वीजी म.सा. की संख्या करीब १७,००० है। बहोत साधु-साध्वीजी म.सा. बहोत बड़ी तपस्या करते है। आज के काल में भी ३० उपवास एक साथ करनेवाले बहोत साधु-साध्वीजी म.सा. है। शास्त्र में फरमाया है कि जो ३० उपवास करता है वह तप का नाम 'मृत्युंजय तप' है। वह मृत्यु पर विजय मिलाता है। ५१ उपवास, ६८ उपवास और उससे ज्यादा १११ उपवास की तपश्चर्या करनेवाले साधु-साध्वीजी म.सा. को देखकर लोगों के शिर झुक जाते है।

(६) आठ साल में दीक्षा लेनेवाले है। लाखो, करोडो रुपये छोडकर दीक्षा लेनेवाले भी आज के काल में है। बी.ए., एम.ए., इन्जीनीयरींग पढ़कर दीक्षा लेनेवाले भी आज के काल में सा.सा. है।

(७) जैन साधु का तप, अहिंसा, निष्परिग्रहता, त्याग, प्रवचन के प्रभाव से कोई शायद ही अपरिचित होगा।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १६५ : सामान्यतः साधु जीवन प्राप्त करने के पूर्व क्या योग्यता होनी चाहिए ?

उत्तर १६५ : (१) साधु जीवन प्राप्त करने के पूर्व पंचिंदिय सूत्र के अर्थ, पाँच समिति, तीन गुप्ति के अर्थ और उनको पालन करने का अभ्यास कम से कम होना चाहिए।

(२) मार्गानुसारी के गुणवाला बनना चाहिए।

(३) श्रावक के बारह व्रत होना जरुरी है।

(४) उपधानतप के तपस्वी होना जरुरी है।

(५) माता-पिता का विनय, गुरुका विनय, गुरु अनुकरणता गुण को धारण करनेवाला बनना जरुरी है।

(६) खानदान होना चाहिए।

(७) पाँच इन्द्रिय बराबर होनी चाहिए।

(८) शरीर निरोगी होना चाहिए।

(९) किसी का कर्जा नहीं होना चाहिए।

(१०) मोक्ष का अभिलाषी होना चाहिए।

(११) संसार सुख भोगने की भावना नहीं होनी चाहिए।

(१२) ज्ञान के पठन-पाठन में दिलचस्पी होनी चाहिए।

(१३) वैयावच्च में दिल लगानेवाला चाहिए।

(१४) 'संयम कब ही मिले' की भावनावाला होना चाहिए।

३४. संघोवरि बहुमाणं - श्री संघ प्रति बहुमान

प्रश्न १६६ : शास्त्रों में पचीसवें तीर्थंकर की उपमा किसको दी गई है ?

उत्तर १६६ : शास्त्रों में २५ वे तीर्थंकर की उपमा चतुर्विध संघ को दी गई है। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका यह चतुर्विध संघ है।

प्रश्न १६७ : साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका यह संघ के चार प्रकार है फिर भी 'साधु' की प्रधानता क्यों हैं ?

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उत्तर १६७ : संघ के चार प्रकार है लेकिन यह चार प्रकार में साधु की प्रधानता है। उसका कारण निम्नलिखित है :

कर्म-विज्ञान के सिद्धांत के अनुसार जब जीव मिथ्यात्व दशा में होता है तब नपु. स्त्री एवं पुरुषवेद का बंध करता है, सास्वादन अवस्था में जीव स्त्री एवं पुरुषवेद का बंध करता है। और सम्यक्त्व दशा में जीव सीर्फ पुरुषवेद का बंध करता है ॥

यह देखा जाता है कि साध्वीजी और श्राविका में आचार रुप धर्म बहोत है लेकिन स्त्रियों में कुछ स्वाभाविक दोष होते है। जैसे-(१) वंचकत्व-किसीको ठगना (२) नृशंसत्व-क्रूरता (३) चंचलत्व प्रायः पुरुष से आठ गुणा काम विकार स्त्री में रहता है। (४) कुशीलता-ब्रह्मचर्य की शुद्धि का अभाव (५) ईर्ष्या-किसी की तरक्की देखकर मन से जलना। (६) झूठ बोलना। (७) गरज के समय मीठा बोलना, गरज पूर्ण होने के बाद किसी को मार डालने के लिए भी योजना बनाना या मारने में किसी को सहायता करना। (८) दिल में कुछ और मुँह से कुछ ओर ही बोलती है। (९) जब गुस्सा आता है तब राक्षसी का स्वरुप लेती है। (१०) जब राग करती है तब सर्वस्व समर्पण करने का दिखावा करती है लेकिन एक कहावत संस्कृत में है 'अव्यवस्थितचित्तानां प्रसादोऽपि भयंकर'-जिनका चित्त स्थिर नहीं है उनकी प्रसन्नता भी भयंकर होती है। (११) ज्यादा बोलना (१२) नींदा करना (१३) मौजशोख (१४) अनर्थदंड भोगविलास के साधनों का उपयोग (१५) स्वार्थमयता।

पुरुष में आचार रुप धर्म कभी कभी कम देखा जाता है लेकिन परिणामरुप धर्म पुरुष में होता है। शास्त्र में कहा है 'परिणामे बंध' परिणाम के हिसाब से जीव को कर्म लगते है। पुरुष में स्वाभाविक गुण : (१) उदार चित्त (२) प्रमोदभाव (३)

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रायः भोग की भावना मंद (४) कम बोलना (५) किसीकी नींदा नहीं करना। (६) स्वभाव से सरलता (७) नम्रता (८) सादगी (९) निःस्वार्थता (१०) गंभीरता।

व्यक्ति विशेष को लेकर पुरुष भी दोषवाला और स्त्री भी गुणवान हो सकती है। लेकिन पुरुष-स्त्री के गुण-दोष में स्वभाव मं और शरीर के अंगोपांग में बहुत बड़ा अंतर है। पुरष चार रस्ते पर खड़ा रहकर रात बिता सकता है, सो भी सकता है। जब कि स्त्री चार रस्ता पर रात को सो सकती नहीं है। ज्ञानियों ने ज्ञान से पुरुष स्त्री के आचार रुप गुण-दोष और परिणाम रुप गुण-दोष देखकर जैन धर्म को पुरुष प्रधान फरमाया है, ईसीलिए चार प्रकार के संघ में साधु की प्रधानता है।

प्रश्न १६८ : साधु-साध्वीजी, श्रावक-श्राविका का बहुमान हम कैसे कर सकते है ?

उत्तर १६८ : साधु-साध्वीजी म.सा. का बहुमान हम वंदन करके, गौचरी, पानी, वस्त्र, पात्र, कपडा, कामली, दवाई आदि बहेराकर, बसती शुद्ध देकर, औपचारिक विनय करके, अनुकूल वर्तन से कर सकते है।

श्रावक-श्राविका का बहुमान हम उन्हें प्रणाम करके, आर्थिक सहायता प्रदान करके वस्त्रादि, अन्नादि देकर उसे कल्याणमित्र बनाकर कर सकते है।

प्रश्न १६९ : गुणियों का बहुमान करने से हमें क्या लाभ होता है ?

उत्तर १६९ : शास्त्रों में फरमाया है कि गुणियों के जिस गुण की हम अनुमोदना करते है वह गुण हमारे में आता है। यह बात बहुत लोगों के अनुभव में आयी है। जिससे तप नहीं होता है वह अगर तपस्वी की अनुमोदना, बहुमान, सेवादि करता है तो उनको तप करना सरल हो जाता है। जो ज्ञानी का विनय करता है, ज्ञान की अनुमोदना करता है वह कितना भी मूर्ख हो उनको ज्ञान की प्राप्ति होती है। ब्रह्मचारी

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

पुरुष की जो अनुमोदना करता है उसे ब्रह्मचर्य पालन करना सरल हो जाता है। साधु भगवंत के पंचाचार, पाँच महाव्रत की दिल से अनुमोदना करनेवाला, विनय करनेवाला एक दिन जरुर साधु बनता है।

प्रभु के स्तवन में भी कवि ने कहा है : 'जिन उत्तम गुण गावता, गुण आवे निज अंग' प्रभु के गुणगान से हमें गुण और ज्ञान प्राप्त होता है।

प्रश्न १७० : यदि हम गुणी एवं गुणियों का बहुमान करते है तो दोष एवं दोषी व्यक्तियों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए ?

उत्तर १७० : योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथ में कहा है कि हम चाहे कितने भी गुणवान हो लेकिन दोषवाले दोषी के प्रति हमें माध्यस्थ भाव रखना चाहिए। हमें ऐसा सोचना 'जीव कर्म के आधीन है। सब की शारीरिक, मानसिक सहनशक्ति समान नहीं होती है। कर्म के उदय के कारण यह व्यक्ति पाप में पडी है। उनके प्रति भी 'सवि जीव करु शासन रसी' की भावना रखनी चाहिए।' दोषवाले दोषियों के प्रति घृणा भाव रखनेवाला जीव ऐसा समझता है मैं बहुत गुणवान हूँ। यह पाप से भरा है लेकिन ऐसे संजोग आते है कि घृणा और नींदा करनेवाले ही आदमी को भी वैसे ही दोष का सेवन करना पड़ता है।

उदा. यशोविजयजी म.ने अष्टक में कहा है कि - प्रभु महावीर ने एकांत से कोई आचार बताया नहीं है, एकांत से कोई निषेध नहीं किया है। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और आत्मा की शक्ति को देखकर माया किये बिना आचार धर्म का पालन करना फरमाया है। कभी ऐसा भी देखा जाता है की आचार में शिथिलता है किन्तु परिणाम उनके अच्छे है। इसीलिए दूषित आचार की उपेक्षा करना। संयम के १७ (सत्तर) भेद है। उसमें एक भेद है

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उपेक्षा संयम। हम यदि दोषी को अपने दोष जानने की इच्छा है ऐसा लगे तो कोमल शब्दों में करुणा से उनकी दोष को हटाने की भावना से उसे हित शिक्षा देना चाहिए।

३५. पुत्थय लिहणं - पुस्तक लेक्ननम्

प्रश्न १७१ : प्राचीन काल में आगम के ज्ञान की परंपरा कैसे चलती थी ?

उत्तर १७१ : प्रभु महावीर ने प्रवचन के माध्यम से जो अर्थ की प्ररुपणा की और उन अर्थो को गणधर भगवंत ने सूत्र के रुप में गुंफित किए और बुद्धिमान साधु भगवंतो ने सूत्र और अर्थ याद रखें। प्राचीन काल में आगम ज्ञान की ऐसी परंपरा थी कि गुरु बोलते थे शिष्य याद रखते थे। लिखने की जरुरत नहीं थी।

प्रश्न १७२ : सबसे पहले आगम कब लिखें गये एवं किसने लिखवायें ?

उत्तर १७२ : प्रभु महावीर के समय में आगम, गुरु बोलते थे, शिष्य याद रखते थे लेकिन अवसर्पिणी काल में आदमी की बुद्धि दिन प्रतिदिन कम होती जाती थी। अकाल में गोचरी आदि नहीं मिलने से साधु भगवंत स्वाध्याय नहीं कर सकते थे, प्रमाद आता था तब प्रभु महावीर के निर्वाण के बाद ९९३ साल के बाद देवर्धिगणि क्षमाश्रमण ने वल्लभीपुर नाम के गाँव में बड़ी भारी संख्या में साधु भगवंतो को एकत्रित किये और चिंता व्यक्त की कि - अगर हम शास्त्र लिखेंगे नहीं और दिन प्रतिदिन शास्त्र हम भूलते जाऐंगे तो नयी पिढ़ी प्रभु के आगम से वंचित हो जायेगी। अतः आगम लिखने का निर्णय किया और वीर निर्वाण के ९९३ साल के बाद आगम लिखने लिखवाने का प्रारंभ देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया।

प्रश्न १७३ : लेखित आगम एवं धर्मशास्त्र जहाँ रखे जाते है उन ज्ञान भंडारों का परिचय दिजीए ?

उत्तर १७३ : लेखित आगम एवं धर्मशास्त्र जहाँ रखे जाते है उसे ज्ञानभंडार कहते है। पूरे भारत में सर्वश्रेष्ठ ज्ञानभंडार जेसलमेर एवं पाटण

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

में है। इसके अलावा खंभात, अहमदाबाद (एल.डी. इन्स्टिटट्यूट) कोबा, बडौदा आदि में है।

जेसलमेर ज्ञान भंडार में कितने शास्त्र, प्रत, ताडपत्री प्रत, हस्तलिखित प्रत है इत्यादि की सूचिका की जो पुस्तक है वह भी चार, पाँच बड़े बड़े विभागवाले है। जेसलमेर और पाटण के ज्ञान भंडार में केवल जैनधर्म के नहीं लेकिन दूसरे धर्म के और षड्दर्शन के इतने प्रत, पुस्तक है जो दुसरे धर्म के ज्ञान भंडार में भी नहीं। जेसलमेर ज्ञान भंडारकी विशेषता है कि वह ताडपत्रीय प्रत के लिए बहुत प्रसिद्ध है। पाटण में प्राचीन से प्राचीन प्रत उपलब्ध होती है। एल.डी. इन्स्टिटट्यूट, अहमदाबाद में हस्तलिखित प्रत एक लाख से ज्यादा है।

अहमदाबाद खंभात ऐसे प्राचीन शहर है जहाँ सेंकडों साल से साधु भगवंत पधारते है। पुराने जमाने में साधु भगवंत ताडपत्री पर लिखते थे। ऐसे ताडपत्री में लिखे हुए शास्त्र वहाँ प्राप्त होते है।

अहमदाबाद कोबा में इस प्रकार से ज्ञान भंडार की व्यवस्था है जिससे वहाँ प्रत में कोई जीव दिमक आदि पैदा नहीं हो, पुस्तक फटे नहीं, पुस्तक के पन्ने खराब न हो जाय।

प्रश्न १७४ : लेखित आगम एवं शास्त्रों की कुछ और विशेषताएँ दिखाएँ।

उत्तर १७४ : प्रभु महावीर ने अपने ज्ञान का प्रकाश भारत देश पर फैलाया था। प्रभु की वाणी को गणधर भगवंत ने सूत्र रुप बनायी और वीर निर्वाण के ९९३ साल के बाद आगम लिखना प्रारंभ हुआ। यह आगम के भिन्न-भिन्न विषय है :

(१) **गणितानुयोग :** चंदपन्नत्ति, सूरपन्नति, ज्योतिष करंडक आदि जिसमें ज्योतिष का विषय है।

(२) **द्रव्यानुयोग :** सूयगडांग, सम्मतितर्क, तत्त्वार्थसूत्र आदि महान ग्रन्थ है।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(३) **चरण करणानुयोग :** आचारांग, ओघ निर्युक्ति, पिंड निर्युक्ति आदि।

(४) **धर्मकथानुयोग :** उपासकदशांग, त्रिषष्ठिशलाका पुरुष चरित्र आदि।

जैन आगम का तो इतना महत्त्व है कि हमारे शास्त्र अंग्रेज लोग अपने देश में ले गए और हस्तलिखित प्रतों का संशोधन किया। एक अंग्रेज व्यक्ति ने ऐसा कहा है कि नवकार मंत्र के बाद 'पंचिंदिय सूत्र' है जिसमें आचार्य के ३६ गुणों का वर्णन है। पाँच इन्द्रियों को काबू में रखना यह तो पंचिंदिय संवरणों का आध्यात्मिक अर्थ है लेकिन हस्तलिखित प्रत से हमें ऐसा अर्थ प्राप्त हुआ कि - 'पंचिंदिय' एक वनस्पति का नाम है, 'संवर' करना मतलब उसको गरम करना, उसमें केमिकल मिलाना इससे सुवर्णसिद्धि मिलती है।

जैन आगम में लब्धियों की सिद्धियों की, देव-देवियों को प्रसन्न करने की विधियों की बात ऐसी बहोत बाते आती है।

आवश्यक सूत्र में मोक्ष की प्राप्ति को ध्यान में रखकर आध्यात्मिक अर्थ ही प्रभु महावीर ने बताया है। सुवर्णसिद्धि आदि नहीं बताया है। यह जैन शास्त्र की विशेषता है।

प्रश्न १७५ : जैन शास्त्र में ज्ञान की आशातना के वर्जन के कितने प्रकार दिखाए है ?

उत्तर १७५ : जैन शास्त्र में ज्ञान की आशातना बताई है वह निम्नलिखित है, यह आशातना जानकर आशातना का त्याग करना चाहिए:

(१) खाना खाते खाते झूठे मुँह बोलना नहीं। (२) खाना खाते खाते पेपर, पुस्तकादि पढ़ना नहीं। (३) अक्षर लिखे हुए थाली कटोरी में जीमना नहीं। (४) पुस्तक, पेन, पेन्सील, पेपर, कागज को जमीन पर रखना नहीं। (५) पेंट, बुशर्ट के जेबमें रुपये की नोट या कोई कागज हो, या हमने घडी पहनी हो उसमे १, २, ३

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

आदि अंक लिखे है, अतः हम खाना खाने बैठे नहीं, बाथरुम-लेट्रीन जावे नहीं। (६) पेपर पुस्तक आदि ज्ञान के साधन पर पाँव रखना नहीं। (७) पेपर के पर बैठना नहीं। (८) पुस्तक, पेन आदि जमीन पर रखना नहीं (९) अक्षर लिखे हुए कपड़े पहनकर आहार-निहार करना नहीं। (१०) पुस्तक, पेन, पेन्सील फेंकना नहीं। (११) पढ़कर भूल जाना नहीं। (१२) अविनय से पढ़ना नहीं (१३) गुरु को छिपाना नहीं। (१४) अशुद्ध पढ़ना नहीं। (१५) अर्थ गलत करना नहीं। (१६) ज्ञान, ज्ञानी, ज्ञान के साधन की आशातना करना नहीं। (१७) ज्ञानी पर द्वेष, ईर्ष्या करना नहीं। (१८) कागज, पेन, पुस्तक जलाना नहीं। (१९) कम से कम एक गाथा या एक अक्षर का भी ज्ञान मिलाना (२०) कागज, रुपिया पाटी आदि को थूंक लगाना नहीं, थूंक से अक्षर मिटाना नहीं। (२१) कागज के पेकेट आदि में आईस्क्रिम आदि खाना नहीं। (२२) गूंगे, बहेरे की मजाक करना नहीं। ये सब आशातनाओं को जानकर त्याग करना। गुरु से रोज नया ज्ञान मिलाना। मिलाये हुए ज्ञान का पुनरावर्तन करना। उपधान करना। अगर उपधान नहीं हुआ हो तो करने की भावना जरुर रखना।

३६. प्रभावणा तित्थे - तीर्थ प्रभावना

प्रश्न १७६ : भावना तथा प्रभावना में क्या अंतर है ?

उत्तर १७६ : भावना मन का विषय है। मन में शुभ भावना करने से स्व का कल्याण होता है। प्रातः उठकर अनित्यादि बारह भावना, मैत्री आदि चार भावना, पाँच महाव्रत की पचीस भावना का चिंतन करना। यह भावना से स्व का कल्याण होता है। लेकिन प्रभावना से दूसरों का भी कल्याण होता है।

प्रश्न १७७ : हमारा धर्म अपने आप में सत्य ही है, महान ही है फिर धर्म की प्रभावना करने की क्या आवश्यकता है ?

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

उत्तर १७७ : प्रभु महावीर ने फरमाया हुआ अहिंसामय जैन धर्म महान ही है। फिर भी धर्म प्रभावना करने की जरुरत इसीलिए है कि हम दूसरें लोगों को अहिंसा का संदेश सुनाकर अहिंसक बना सके। प्रभु महावीर ने ऐसा फरमाया है कि तपश्चर्या करनेवाले को मन में ऐसी इच्छा नहीं करना कि मेरी नामना हो जाये, मुझे कीर्ति मील जाये लेकिन श्रावक लोगों का यह कर्तव्य है कि तपश्चर्या का प्रचार हो। तपश्चर्या क्या है इसकी जानकारी हो।

हिंसक मुसलमान राजा अकबर को अहिंसक आचार्य हीरसू. म.सा. से मिलन हुआ। उनका कारण भी प्रभावना थी। दिल्ही में चंपाबाई श्राविका की छः मास के उपवास की तपश्चर्या के जुलूस को देखकर बादशाह अकबर को जिज्ञासा हुई 'इतनी बड़ी संख्या में लोग कहाँ जा रहे है। क्यों इकट्ठे हुए है। तपश्चर्या की जानकारी के बाद बादशाह को गुरु हीरसूरीश्वरजी म.सा.को मिलने की इच्छा हुई। गुरु को मिले, वंदन किए, वाणी सुनी और पर्युषण के १२ दिन बूचड़खाने बंद करवाए। यह सभी धर्म की प्रभावना का फल है।

प्रश्न १७८ : धर्म की प्रभावना करनेवाले महान आचार्य एवं साधु धर्म प्रभावक कहलाते है ऐसे धर्म प्रभावक के कितने प्रकार है?

उत्तर १७८ : प्रभावक के आठ प्रकार है :

(१) **प्रवचन(सूत्रार्थ) प्रभावक :** एक शब्द के कई अर्थ कर सकते है।

(२) **धर्म कथा प्रभावक :** जैसे मुनि नंदिषेण।

(३) **वादी प्रभावक :** जैसे आचार्य मल्लवादि सू.म.सा.

(४) **(ज्योतिष) निमित्त प्रभावक :** जैसे भद्रबाहु स्वामिजी

(५) **तप प्रभावक :** तपस्वी साधु जैसे प्रभु महावीर का नंदन मुनि के भव में ११, ८०, ६४५ मासक्षमण किए।

(६) **विद्यामंत्र प्रभावक :** जैसे व्रजस्वामीजी

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

(७) **अंजन-सिद्ध प्रभावक :** जैसे कालिकाचार्य

(८) **कवि प्रभावक :** सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी म.सा.

आठ प्रभावक में से कोई प्रभावक न हो तो तप करना और रथयात्रा, विधिपूर्वक यात्रा आदि निकालता है। उनको भी प्रभावक कहा गया है। उदाहरण तीर्थप्रभावक विक्रमसूरि म.सा.।

प्रश्न १७९ : क्या श्रावक भी धर्म प्रभावक हो सकते है ?

उत्तर १७९ : श्रावक भी धर्म प्रभावक हो सकते है। नंदिषेण मुनि ने साधु धर्म छोड़ दिया था। वेश्या के घर में ठहरे थे फिरभी धर्म कथा, वैराग्य कथा, इतनी वैराग्यमय करते थे कि प्रतिदिन १० व्यक्ति चारित्र लेते थे। वंकचूल नाम के चोर ने गुरु महाराज के पास से चार प्रतिज्ञा ली थी।

(१) अनजाना फल खाना नहीं (२) कोई जीव की हत्या करना नहीं यदि करना पड़े तो सात कदम पीछे हटना। (३) राजा की रानी को माता समझना। (४) कौए का मांस खाना नहीं। यह चार प्रतिज्ञा में वंकचूल दृढ रहा। जीवन में प्रतिज्ञा भंग हो सके ऐसे मौके पर भी मरने के लिए तैयार हो गया और किन्तु प्रतिज्ञा को अच्छी तरह से पालकर शासन प्रभावक हो गया।

सुदर्शन सेठ : अभयाराणी और कपिला ने सुदर्शन शेठ के ब्रह्मचर्य की परीक्षा की। किन्तु सुदर्शन शेठ ब्रह्मचर्य गुण से युक्त थे उनके महान ब्रह्मचर्य गुण की प्रशंसा योगशास्त्र में लिखी गई है।

सुलस : कालसौकरिक कसाई प्रतिदिन ५०० पाड़े की हत्या करता था। किन्तु उनकी मृत्यु के बाद दयालु सुलस ने हिंसा बंद करवा दी और आदर्श श्रावक बना।

राजा कुमारपाल भी श्रावक हो गए। ऐसे महान श्रावकनेभी आचार्य हेमचंद्रसूरिजी के उपदेश से अठारह देश में अमारि प्रवर्तन कराया। कतलखाना बंध कराया, दारु बंद कराया और महान शासन प्रभावक बने। कैसे अहिंसा प्रेमी श्रावक।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

राजा संप्रति नाम के श्रावक हो गए जो दुनिया के तीन खंड के राजा थे । जिन्होंने आचार्य सुहस्तिसूरि की आज्ञा से तीन खंड में बुचड़खाना बंध करवाया और दारु बंध करवायी । 'कोई जीव को नहीं मारना' ऐसी घोषणा करवाई। कैसे धर्म प्रभावक श्रावक।

वस्तुपाल-तेजपाल : नाम के श्रावक हो गए जिन्होंने आबू देवलाडा के मंदिर बनाए। आज भी लोग वह जिनालय को देख कर प्रभावित होते है। कैसे दानवीर श्रावक।

वस्तुपाल-तेजपाल ने गुरु भगवंत की निश्रा में छ'री पालित कई संघ निकाले और जैन-जैनेत्तरों के हृदय में धर्म बसाया।

श्रीपाल महाराजा नाम का एक श्रावक था। जिन्हें बचपन से ही कुष्ठ रोग हो गया था। यह श्रावक ने अपने दिल में सिद्धचक्र को विराजमान किया । सिद्धचक्र के प्रभाव से कुष्ठ रोग मिट गया। उन्होंने कई राजाओं को जीत लिया। नौ रानी से विवाह हुआ और सिद्धचक्र की महिमा बढ़ाई।

आर्द्रकुमार को कल्याण मित्र सुश्रावक अभयकुमार के सत्संग से जाति स्मरण ज्ञान हुआ। और चारित्र की भावना हुई।

सुश्रावक अभयकुमार के संतोष की प्रसंसा योग-शास्त्र में आचार्य हेमचंद्रसूरिजी ने किया।

धर्मप्रेमी सुश्रावक और सुश्राविका के सत्संग से दो बैल भी आठम-चौदस को उपवास करते थे। दोनों बैल मरकर कंबल-शंबल नाम के देव हुए। यह बात पर्युषण के प्रवचन में आती है। पशु को भी श्रावक के सत्संग से देवगति मिलती है।

सुश्रावक जंबुकुमार के सत्संग से ५०० चोर ने और जंबुस्वामी की आठ पत्नी और आठ पत्नी के माता पिता तथा जंबुस्वामी के माता-पिता ने संयम का स्वीकार किया।

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523

प्रश्न १८० : इस काल में धर्म प्रभावना के और भी कौन-कौन से मार्ग है ? उनका उपयोग कैसे होना चाहिए ?

उत्तर १८० : एक काल ऐसा था जब मंत्र का प्रभाव दुनिया में ज्यादा था। हमारे जैनाचार्य पू. मानतुंगसूरिजी म. ने ४४ लोहे की जंजीर को मंत्रमय भक्तामर स्तोत्र बनाकर तोड़ दिया था।

एक काल ऐसा था जब संस्कृत भाषा की बहोत महिमा थी। हमारे आचार्य सिद्धसेन दिवाकर सूरिजी ने संस्कृत में बहोत कविताएँ बनाई और शासन प्रभावना की।

एक काल वाद-विवाद का था जब हमारे वादि देवसूरिजी ने बहोत वाद किए और सभी वाद-विवाद में विजय प्राप्त किया।

वर्तमानकाल में शासन प्रभावना के मार्ग निम्निलिखित है।

(१) आज विज्ञान का काल है। यदि धर्मशास्त्र की कोई बात वैज्ञानिक रुप से हम लोगों को समझा सकते है तो बहोत बड़ी शासन प्रभावना हो सकती है।

(२) सामूहिक तपश्चर्या करके रथयात्रा निकालना।

(३) छ'री पालित संघयात्रा निकालकर छोटे-छोटे गाँवों में अहिंसा का प्रचार करके तीर्थयात्रा कराना।

(४) भिन्न-भिन्न भाषाओं में प्रभु महावीर का संदेश प्रवचन के माध्यम से जनता तक पहुँचाना चाहिए।

(५) रात्री जागरण - सारी रात प्रभु की भक्ति करना। बड़ी संख्या में लोगों को प्रभु के स्तवन में लीन करना।

(६) पाठशाला - धार्मिक श्रुतज्ञान छोटे से छोटे बच्चों से लेकर बढ़े लोग भी प्राप्त कर सके इसके लिए धार्मिक पाठशाला व्यवस्थित होनी चाहिए। आज का बालक कल का श्रावक है उसे संस्कारी बनाना चाहिए। यह सभी शाशन प्रभावना शास्त्र के अनुसार करना चाहिए।

●●●

J3 \ E \ Guru_Rajyashsuri (2018)\Aadarsh Sravak Jivan (13423) • 1st 25423 • 2nd 8523 • 3rd 15523



पूज्य आचार्यश्री राजयशसूरीश्वरजी म.सा. संपादित पुस्तकें...

Sukt Ratnavali - https://archive.org/details/SuktRatnavali

Outline of Jainism (English, French, Kannad)
https://archive.org/details/outline-of-jainism-Eng-Kannad

Biographies of 5 Glorious Jain Acharyas
https://archive.org/details/biographies-of-5-glorious-jain-acharya

Updeshmala Karnika Granth
https://archive.org/details/updeshmala-karnika-granth

Ahimsa Hee Amrutam (Regional Indian Languages)
https://archive.org/details/ahimsa-hee-amrutam

Ahimsa Hee Amrutam (English & Hindi)
https://archive.org/details/ahimsaheeamrutam

Labdhi Bal Varta (1 to 12 Part) 612 Stories
https://archive.org/details/Labdhi-Bal-Varta

Vikram Bal Varta (Hindi-English)
https://archive.org/details/vikram-bal-varta

Panch Pratikaman Sutra (Gujarati, Hindi, English)
https://archive.org/details/panch-pratikraman-sutra-guj-hin-eng_202011

Jindarshan Pujan Vidhi (Hindi)
https://archive.org/details/jindarshan-pujan-vidhi

Soft Copy Available with
Ricky - 98244 44431